सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 241, नई दिल्ली । सोमवार, 11 नवम्बर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

हिसाब किताब सिर्फ ऊपर वाले ने ही सही लगाया, सबको खाली हाथ भेजा और खाली हाथ बुलाया...

03 दिल्ली में मौतों के आंकड़ों ने डराया, संक्रामक बीमारियों ने सबसे ज्यादा छीनी जिंदगियां
06 आभासी गिरफ्त में वास्तविक लोग
08 बारीपदा से भुवनेश्वर तक जगन्नाथ एक्सप्रेस बस

दिल्ली परिवहन विभाग कब दिल्ली में व्यवसायिक गतिविधि में प्रयोग होने वाले वाहनों को इलैक्ट्रिक में लाने के निर्देश जारी करेगा ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग व्यवसायिक गतिविधि में चालित वाहनो को कब से इलेक्ट्रिक श्रेणी के वाहनों से पंजीकरण करने की घोषणा करेगा को लेकर व्यवसायिक गतिविधि में शामिल मालिकों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है।

दिल्ली परिवहन विभाग कई बार यह घोषित कर चुका है की दिल्ली में 2025 तक अधिकतम व्यवसायिक गतिविधि के वाहन इलेक्ट्रिक होंगे पर अभी तक सभी व्यवसायिक गतिविधियों में शामिल वाहनों को सीएनजी से चालित वाहनो से परिवर्तन करने के आदेश जारी कर रहा है।

क्या ?

दिल्ली परिवहन विभाग दुबारा दिल्ली के व्यवसायिक वाहनों के मालिकों को 2010 की तरह डीजल से सीएनजी में परिवर्तन करने जैसी दुविधा और परेशानी के साथ फाइनेंशियल नुकसान पहुंचाने की सोच लेकर बैठा है, क्योंकि जिन वाहन मालिकों ने अभी नए वाहन खरीदकर व्यवसायिक श्रेणी में लगाए है वह वाहन की आयु के अनुसार आने वाले 15 साल तक प्रयोग में आएंगे। ऐसे में किस आधार पर दिल्ली परिवहन विभाग दिल्ली में सभी व्यवसायिक गतिविधियों में प्रयोग/ शामिल वाहनों को इलैक्ट्रिक वाहनों में परिवर्तित होने की बात बोल रहा है एक चिंता का विषय है।

दिल्ली परिवहन विभाग/ दिल्ली सरकार अगर दिल्ली के लिए व्यवसायिक गतिविधि में प्रयोग होने वाले वाहनों को पूर्ण रूप से इलैक्ट्रिक वाहनों में परिवर्तित करने की सोच रखता है तो समयानुसार इसके प्रति घोषणा जारी करे जिससे वाहन मालिकों और दिल्ली की जनता को आने वाले समय में किसी प्रकार की परेशानियों का सामना नहीं करना पड़े।

दिल्ली में 2010 में जब इस प्रकार का आदेश जारी हुआ था तब भी जनता को आवागमन और कार्य क्षेत्र में पहुंचने में बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा था। दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग अगर दिल्ली में फिर से वाहनों के फ्यूल मोड को व्यवसायिक श्रेणी के लिए बदलने का विचार रखता है तो उसकी पूर्ण जानकारी की घोषणा जारी करे।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

लिंक एक्सप्रेस-वे न्यू नोएडा को भी देगा नोएडा एयरपोर्ट से सीधे कनेक्टिविटी, विकास परियोजनाओं के लगेंगे नए पंख

परिवहन विशेष न्यूज

लिंक एक्सप्रेस-वे नोएडा एयरपोर्ट को गंगा एक्सप्रेस-वे से जोड़ेगा जिससे न्यू नोएडा और यमुना प्राधिकरण के औद्योगिक क्षेत्रों को सीधी कनेक्टिविटी मिलेगी। यह विकास परियोजनाओं को गति देगा और माल ढुलाई और यात्रियों के लिए आवागमन को सुविधाजनक बनाएगा। नोएडा एयरपोर्ट को डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर एवं दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग से जोड़ने के लिए चोला तक प्रस्तावित 16 किमी लंबे मार्ग से इसे जोड़ने का प्रस्ताव अहम है।

ग्रेटर नोएडा। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को गंगा एक्सप्रेस-वे से जोड़ने के लिए प्रस्तावित लिंक एक्सप्रेस-वे संरेखण बदलने को यमुना प्राधिकरण ने तीन विकल्प सुझाव उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीडा, UPIDA) को दिए हैं। नोएडा एयरपोर्ट को डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर एवं दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग से जोड़ने के लिए चोला तक प्रस्तावित 16 किमी लंबे मार्ग से इसे जोड़ने का प्रस्ताव अहम है।

इसके साथ ही कार्गो टर्मिनल को यमुना एक्सप्रेस-वे से कनेक्टिविटी के लिए बनने वाली 30 मीटर चौड़ी सड़क और तीसरे विकल्प में पलवल-खुर्जा प्रस्तावित एक्सप्रेस-वे से जोड़ने का विकल्प दिया है। लिंक एक्सप्रेस-वे न्यू नोएडा को यीडा क्षेत्र के साथ नोएडा एयरपोर्ट से भी जोड़ेगा। माल की ढुलाई और यात्रियों के लिए लिंक एक्सप्रेस-वे (Link Express Way) आवागमन का काफी सुविधाजनक मार्ग बनेगा।

नोएडा एयरपोर्ट और यमुना एक्सप्रेस-वे होगा कनेक्ट

मेरठ से प्रयागराज तक बन रहे 594 किमी लंबे गंगा एक्सप्रेस-वे (Ganga Expressway) से नोएडा एयरपोर्ट एवं यमुना एक्सप्रेस-वे की कनेक्टिविटी के लिए लिंक एक्सप्रेस-वे प्रस्तावित किया है। यूपीडा ने 79 किमी लंबे लिंक एक्सप्रेस-वे का गंगा एक्सप्रेस-वे के 44 किमी से यमुना एक्सप्रेस-वे के 30 किमी प्वाइंट तक संरेक्षण किया है, लेकिन एमआरओ के लिए अधिगृहीत जमीन से होकर गुजरने पर यमुना प्राधिकर ने लिंक एक्सप्रेस-वे के संरेखण में बदलाव को तीन विकल्प दिए हैं।

ये हैं तीन विकस्प

पहले विकल्प में चोला तक लिंक एक्सप्रेस-वे व दूसरे विकल्प में तीस मीटर चौड़ी सड़क से जोड़ने पर अधिक जोर है। चोला तक लिंक एक्सप्रेस-वे का संरेखण होने से यीडा के मास्टर प्लान 2041 में नियोजित 75 मीटर चौड़े मार्ग व लाजिस्टक एवं वेयरहाउसिंग सेक्टर को फायदा मिलेगा। यह क्षेत्र भी लिंक एक्सप्रेस-वे के जरिये न्यू नोएडा एवं गंगा एक्सप्रेस-वे से जुड़ जाएगा।

तीस मीटर चौड़ी सड़क से लिंक होने पर कार्गो टर्मिनल व यमुना एक्सप्रेस-वे होकर यात्री टर्मिनल तक पहुंचना आसान हो जाएगा। इसके साथ ही यमुना प्राधिकरण के औद्योगिक सेक्टर 28, 29, 32, व 33 को फायदा होगा। इन सेक्टरों में यमुना प्राधिकरण के महत्वपूर्ण औद्योगिक पार्क (मेडिकल डिवाइस पार्क, अपैरल पार्क, टॉय पार्क, एमएसएमई पार्क, हैंडीक्राफ्ट पार्क) को भी गंगा एक्सप्रेस-वे की सीधे कनेक्टिविटी मिल जाएगी।

न्यू नोएडा के तीन व यमुना प्राधिकरण के 17 गांवों से होकर गुजरेगा लिंक एक्सप्रेस-वे

लिंक एक्सप्रेस-वे बुलंदशहर, गौतमबुद्ध नगर के 68 गांवों से होकर गुजरेगा। बुलंदशहर के स्याना क्षेत्र से गुजरते हुए यह न्यू नोएडा होकर यीडा क्षेत्र में प्रवेश करेगा। न्यू नोएडा में शामिल तीन गांव व यीडा क्षेत्र के 17 अधिसूचित गांव इसके मौजूदा संरेखण में आ रहे हैं।

लिंक एक्सप्रेस-वे बनने से गंगा एक्सप्रेस-वे से जुड़े पश्चिम उत्तर प्रदेश के जिलों के अलावा बुलंदशहर का स्याना क्षेत्र, न्यू नोएडा व यीडा क्षेत्र की कनेक्टिविटी बेहतर हो जाएगी। न्यू नोएडा को कनेक्टिविटी देने वाला लिंक एक्सप्रेस-वे तीसरा होगा। ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेस-वे और एनएच 34 की भी न्यू नोएडा से कनेक्टिविटी है।

लिंक एक्सप्रेस-वे के लिए यूपीडा को तीन विकल्प दिए गए हैं। चोला से जुड़ने से प्राधिकरण क्षेत्र के औद्योगिक सेक्टरों को भी इसका फायदा मिलेगा। चोला से यीडा क्षेत्र में रेलवे व सड़क कनेक्टिविटी मास्टर प्लान 2041 में प्रस्तावित की गई है।

-डॉ. अरुणवीर सिंह, मुख्य कार्यपालक अधिकारी यमुना प्राधिकरण

दिल्ली-NCR में सांसों पर संकट, कई इलाकों में AQI 'बेहद खराब'; ड्रोन से की जा रही पानी की बौछार

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में प्रदूषण का स्तर थोड़ा कम हुआ है लेकिन अभी भी बहुत खराब श्रेणी में बरकरार है। रविवार सुबह दिल्ली का औसत सुबह 10 बजे एक्यूआई 333 दर्ज किया गया। आनंद विहार में ड्रोन तकनीक से पानी की बौछार की जा रही है। सांसों पर बढ़ते संकट के बीच दिल्ली-एनसीआर में एयर प्यूरीफायर की मांग बढ़ रही है।

नई दिल्ली। मौसमी उतार चढ़ाव के बीच रविवार को भी दिल्ली में न्यूनतम तापमान सामान्य से ऊपर ही रहा। यह 18.4 डिग्री दर्ज किया गया, जो सामान्य से चार डिग्री अधिक है। आज अधिकतम तापमान 32 डिग्री रहने के आसार हैं। दिन में आसमान साफ ही रहने की संभावना है।

दूसरी तरफ हवा चलने से आज दिल्ली का एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) कई दिनों के बाद 350 से नीचे आया है। हालांकि प्रदूषण को श्रेणी अभी भी बहुत खराब ही है, लेकिन आज रविवार सुबह 10 बजे यह 333 रिकॉर्ड किया गया। एक्यूआईसीएन के अनुसार, सुबह 10 बजे जहांगीरपुरी में एक्यूआई 384, आनंद विहार में 254 और मेजर ध्यानचंद स्टेडियम के पास एक्यूआई 288 दर्ज किया गया, जो प्रदूषण की बेहद खराब श्रेणी में आता है। मौसम विभाग की मानें तो अभी अगले कुछ दिन मौसम में बहुत अधिक बदलाव होने के आसार नहीं हैं। इससे पहले शनिवार को दिल्ली के बवाना, न्यू मोती बाग, रोहिणी, विवेक विहार और वजीरपुर सहित कुछ स्टेशनों ने 'गंभीर' प्रदूषण स्तर दर्ज किया गया और एक्यूआई 400 से ज्यादा रहा।

आनंद विहार में प्रदूषण पर काबू पाने के लिए ड्रोन तकनीक का 'प्रयोग' किया जा रहा है। इसे दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति के मॉनिटरिंग स्टेशन के 100 वर्ग मीटर के दायरे में ही उड़ाया जा रहा है। इतने क्षेत्रफल में ड्रोन ने शनिवार को 12 से छह बजे के बीच चार बार उड़ान भरी और पानी की बौछार की। इस दौरान यहां का पीएम-10 का स्तर 293 से 376 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा। वहीं पीएम-2.5 का स्तर 118 से 177 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर के बीच रिकॉर्ड किया गया। यह बौछार की शुरुआत से पहले के दिनों की तुलना में कम रहा। यह सिलसिला एक सप्ताह तक चलेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि ड्रोन जितने दिन उड़ेगा, उसके डाटा के विश्लेषण के आधार पर सही नतीजे तक पहुंचा जा सकेगा। एक दिन के डाटा के आधार पर निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा। ड्रोन के टैंक में 15 लीटर पानी आता है। आठ मिनट की बौछार में इसका टैंक खाली हो जाता है। ड्रोन के जरिये पानी की बौछार कर रही कंपनी के प्रतिनिधियों ने बताया कि ड्रोन में छह नोजल लगे हैं, जिनसे 100 माइक्रोन की बौछार एक समय में होती है।

लखनऊ: राजधानी में इस तरह लग रही है गाड़ियों के वीआईपी नंबर के लिए बोली, बाइक के लिए लगी 21 लाख की बोली

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ। ट्रांसपोर्टनगर आरटीओ में जिस वीआईपी नंबर के लिए 21 लाख रुपये की बोली लगाई गई थी, वह 5.56 लाख रुपये में बिका। यह पढ़कर आप चौंक गए होंगे। यह कोई मजाक नहीं, बल्कि ऑनलाइन नीलामी की व्यवस्था की खामी है, जिसका बेजा इस्तेमाल आवेदक करते हैं। इससे परिवहन विभाग को राजस्व का नुकसान होता है। अक्तूबर में परिवहन विभाग के ट्रांसपोर्टनगर आरटीओ में वीआईपी नंबर खोले गए। अपनी पसंद के नंबरों के लिए ऑनलाइन बोली लगानी होती है। इसकी नीलामी होती है और सबसे ऊंची बोली लगाने वाले को नंबर आवंटित किया जाता है। वीआईपी नंबर यूपी 32 पीवाई 0001 गत 28 अक्तूबर को तब चर्चा में आ गया, जब उसके लिए 21 लाख रुपये की बोली लगी। इस नंबर के लिए कुल 13 लोगों ने बोली लगाई थी। लेकिन ऐन मौके पर आवेदक ने अपनी बोली कैंसिल कर दी। इसके चलते दूसरी बड़ी बोली लगाने वाले को यह नंबर 5,56,500 रुपये में आवंटित कर दिया गया। यह नंबर फूलन सिंह जनकल्याण ट्रस्ट के नाम से आवंटित हुआ है।

...इसलिए होता है "बड़ी बोली" का खेल : सूत्र बताते हैं कि वीआईपी नंबरों की बोली में व्यवस्था की खामी के चलते खेल होता है। इस पर अफसर कार्रवाई भी नहीं कर पाते। मसलन, किसी भी वीआईपी नंबर के लिए पहले बड़ी बोली लगा दी जाती है, फिर ऐन मौके पर उसे कैंसिल कर दिया जाता है। इससे आवेदक को केवल फीस का नुकसान होता है, जोकि बाइक के लिए 8000 रुपये व कार के लिए 33,000 रुपये होती है। जबकि परिवहन विभाग को राजस्व हानि होती है। बड़ी बोली निरस्त होने पर स्वतः दूसरे स्थान के आवेदक को नंबर आवंटित हो जाता है। यही वजह है कि सबसे बड़ी बोली 21 लाख रुपये व दूसरे स्थान के आवेदक की बोली 5,56,500 है, जिसके बीच बड़ा अंतर है।

30 दिन के अंदर वाहन लेना अनिवार्य: अधिकारी बताते हैं कि बोली के बाद नंबर आवंटित होने के 30 दिन यानी एक महीने के अंदर वाहन लेना अनिवार्य होता है। अन्यथा नंबर निरस्त कर दिया जाता है।

90 हजार की बाइक, बोली लगाई 21 लाख : आरटीओ के अधिकारी बताते हैं कि यूपी 32 पीवाई 0001 नंबर का इस्तेमाल बाइक पर किया जाना था। बाइक की कीमत 90 हजार रुपये के आसपास बताई जा रही है। फिर भी आवेदक ने नंबर के लिए 21 लाख की बोली लगा दी।

दिल्ली के 10 हजार बस मार्शलों के लिए गुड न्यूज, 11 नवंबर से शुरू होगी नियुक्ति प्रक्रिया

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार ने राजधानी में प्रदूषण विरोधी विभिन्न उपायों को लागू करने के लिए 10000 सिविल डिफेंस वालंटियर्स (सीडीवी) की बहाली को मंजूरी दे दी है जिन्हें पिछले साल बस मार्शल के पद से हटा दिया गया था। मुख्यमंत्री आतिशी ने शनिवार को यह एलान किया है। उन्होंने कहा कि अस्थायी तैनाती सोमवार से शुरू होगी और जल्द ही उपराज्यपाल को उनकी स्थायी नियुक्ति पर प्रस्ताव भेजने की योजना है।

नई दिल्ली। तमाम आरोप प्रत्यारोप के बाद आखिरकार अब 10 हजार सिविल डिफेंस वालंटियरों को फिर से रोजगार मिलने की प्रक्रिया शुरू होने जा रही है। सोमवार से इन्हें नियुक्त करने की प्रक्रिया शुरू होगी। मुख्यमंत्री आतिशी ने शनिवार को इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। उन्होंने बताया कि एक सप्ताह के अंदर सिविल डिफेंस वालंटियर ऑन-ड्यूटी होंगे।

प्रदूषण के खिलाफ निभाएंगे अहम भूमिका

मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि दिल्ली सरकार ने इन 10 हजार सिविल डिफेंस वालंटियरों की नियुक्ति की मंजूरी दे दी है और प्रदूषण के खिलाफ युद्ध में ये चार महीने अहम भूमिका निभाएंगे। दिल्ली सरकार जल्द डिफेंस वालंटियरों की स्थायी नियुक्ति का प्रस्ताव उपराज्यपाल को भेजेगी, लेकिन जब तक इनकी स्थायी नियुक्ति नहीं होती तब तक फरवरी माह तक प्रदूषण के खिलाफ युद्ध में उन्हें तैनात किया जाएगा।

सीएम ने कहा कि प्रदूषण हॉट स्पॉट की निगरानी से लेकर खुले में कूड़ा जलाने की घटनाओं को रोकने और शिकायतों के फॉलोअप में सिविल डिफेंस वालंटियरों की भागीदारी महत्वपूर्ण होगी। ये कंस्ट्रक्शन वेस्ट मैनेजमेंट और उससे उड़ने वाली धूल की रोकथाम, डीजल जनरेटर के अवैध उपयोगों को रोकने से लेकर ग्रीन दिल्ली एप में आने वाली शिकायतों का फॉलोअप भी करेंगे।

रजिस्ट्रेशन के 2-3 दिन के भीतर होगी तैनाती

सीएम ने कहा कि सोमवार से इन सिविल डिफेंस वालंटियरों का कॉल-ऑउट नोटिस जारी किया जाएगा और उसके बाद ये अलग-अलग डीएम कार्यालाओं में जाकर अपना रजिस्ट्रेशन कर सकेंगे।

रजिस्ट्रेशन के 2-3 दिन के भीतर इनकी तैनाती होगी। उन्होंने कहा कि इनकी होने जा रही नियुक्ति इस बार का प्रमाण है कि भाजपा दिल्ली सरकार के कामों को रोकने की कितनी भी कोशिश करे, कोई काम रुकने नहीं दिया जाएगा। जो काम भाजपा ने रोके हुए हैं वे आगे भी इसी तरह पूरे किए जाएंगे।

वालंटियर्स को एक नवंबर से मिले मानदेय: भाजपा

वालंटियर्स को एक नवंबर से मिले मानदेय: भाजपा

दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा है कि एक वर्ष पहले आम आदमी पार्टी की सरकार ने सिविल डिफेंस वालंटियर्स (सीडीवी) को नौकरी से निकाल दिया था। भाजपा के दबाव के कारण मुख्यमंत्री आतिशी को उनकी सेवा बहाल का आदेश देना पड़ा है।

उपराज्यपाल ने दिल्ली सरकार को एक नवंबर से सीडीवी को तैनात करने का आदेश दिया था। इसके अनुसार उन्हें एक नवंबर से मानदेय भी दिया जाना चाहिए। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा, दिल्ली सरकार ने 10 हजार सीडीवी की सेवा बहाल करने का निर्णय विलंब से लिया है।

उपराज्यपाल ने सरकार को इन्हें नियमित करने की प्रक्रिया शुरू करने और इसके लिए तीन सदस्यीय समिति बनाने का भी निर्देश दिया था। सरकार ने इस दिशा में कोई काम नहीं किया है। इससे सीडीवी का भविष्य अंधकारमय बना हुआ है। सरकार इन्हें नियमित नहीं करना चाहती है, इसलिए वह इस दिशा में काम नहीं कर रही है। ये एक तरह से इनके साथ धोखा है।

पाचन की समस्याओं को दूर करने के लिए घर पर बनाएं आंवले खट्टी-मिठी डाइजेस्टिव गोली,

पेट संबंधित से समस्याओं से परेशान रहते हैं तो आप घर पर आसान तरीके से खट्टी-मीठी आंवला कैंडी। इससे आपका पेट भी दुरुस्त रहेगा। इसे बनाने के लिए नोट करें रेसिपी।

आंवला एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन सी से भरपूर होता है। आंवला इम्यूनिटी बूस्ट करने में कारगर साबित हो सकता है। आंवले के सेवन से हेल्थ ठीक रहती है। आंवले का जूस पीने से शरीर हेल्दी है। आंवले को डाइट में शामिल करने से पाचन संबंधी समस्याओं में लाभदायक होता है। आप भी अपने घर पर बेहद आसान तरीके से डाइजेस्टिव खट्टी-मीठी गोलियां बनाएं। इसे बच्चे से लेकर बड़े भी खूब खाना पसंद करेंगे।

आंवले की खट्टी-मीठी गोली बनाने के लिए सामग्री

- 500 ग्राम आंवला
- एक कप गुड़
- सेंधा नमक स्वादानुसार
- काला नमक एक चम्मच
- काली मिर्च पाउडर एक चम्मच
- भुना जीरा एक चम्मच
- आधा कप पिसी चीनी
- एक चौथाई चम्मच हींग
- नींबू का रस

आंवले की खट्टी-मीठी गोली बनाने की विधि

- इसके लिए आप आंवले को अच्छे से धो लें। इसके बाद कूकर में उबाल लें।
- उबले आंवले को कूकर से निकालें और ठंडा होने के लिए रख दें। जब ये ठंडे हो जाएं तो आवले की गुठली को निकाल दें।
- अब आप आंवलों को मिक्सी में डालकर पीस लें और पेस्ट तैयार कर लें। ध्यान रहे कि आंवला बारीक पीसा हुआ। पीसने में पानी का थोड़ा इस्तेमाल करें।
- इसके बाद पैन गर्म करें और एक कप गुड़ डालें। इसके साथ ही पिसा हुआ आंवले का पेस्ट भी जरुर डालें।
- धीरे-धीरे मिक्स करते हुए आप इसे भूनें। गैस को धीमा ही रखें फिर अब इसमें सारे मसाले डाल दें। भुना हुआ जीरा, काली मिर्च, हींग, काला नमक, सेंधा नमक सब डाल दें, फिर इसे अच्छे से भूनें।
- आप इसे जब तक चलाएं कि ये गाढ़ा ना हो जाए। जब गाढ़ा हो जाए तो इक्ट्ठा तो गैस को बंद कर दें और इसे ठंडा होने दें।
- प्लेट पर पिसी चीनी डालें और तैयार आंवले की छोटी गोली बनाएं और पिसी चीनी को इस पर लपेटें।
- तैयार है आपकी डाइजेस्टिव खट्टी-मीठी आंवले की गोली।

नवंबर-दिसंबर के महीने में केरल की इन जगहों पर नहीं घूमा, तो क्या ही घूमें

नवंबर और दिसंबर के महीने में भारत के कई हिस्सों में ठंड पड़ने लगती है। ऐसे में अगर आप भी कहीं घूमने का प्लान बना रहे हैं तो केरल की इन शानदार पर जरुर जाएं। केरल के हिल स्टेशन, जो हर किसी के लिए एक शानदार अनुभव देता हैं, चाहे आप एक शांत पारिवारिक छुट्टी की योजना बना रहे हों। तो आप यहां जरुर जाएं।

केरल में सबसे सुंदर और आकर्षक पर्यटन स्थल हैं जो साल भर पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। जबकि केरल के खूबसूरत बैकवाटर, रेतीले समुद्र तट और आकर्षक शहर लोकप्रिय हैं। इन हिल स्टेशन पर नवंबर और दिसंबर के महीनों के दौरान भी काफी मस्त नजारा रहता है। केरल के इन हिल स्टेशन में हरे-भरे पश्चिमी घाटियां स्थित हैं, जो मनमोहक दृश्य देखने के लिए के लिए लायक होते हैं। यहां पर आप मनमोहक दृश्यों के साथ ही ठंडे मौसम का मजे भी ले सकते हैं। आप चाहे तो अपने हनीमून के लिए यहां आ सकते है, परिवार के साथ मस्त छुट्टी की योजना बना सकते हो या प्रकृति की खोज कर रहे हों, केरल के हिल स्टेशन सभी के लिए एक जादुई अनुभव प्रदान करेगा।

केरल के ये बेस्ट 5 हिल स्टेशन

मुन्नार

केरल का यह हिल स्टेशन उन लोगों के लिए एक सर्दियों के लिए बेस्ट है, जो प्राकृतिक नजारे का आनंद लेना चाहते हैं। यह हिल स्टेशन अपने चाय बागानों के लिए भी प्रसिद्ध है, क्योंकि चाय के पौधों की कतारें पहाड़ियों को कवर करती हैं। मुन्नार में रहने के लिए बहुत सारे स्थान उपलब्ध हैं और एक सुंदर स्थान का चयन अनुभव को और भी यादगार बना सकता है।

वायनाड

भारत का स्पाइस गार्डन एक प्रकृति प्रेमी के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है, यहां आप पहाड़ की चोटियां, हरी घास के मैदान और चाय और मसाले के बगीचे देख सकते हैं। वायनाड में आप ट्रैकिंग ट्रेल्स, झरने और यहां तक कि वन्य जीवन का भी पता लगाया जा सकता है। वायनाड में चाय, कॉफी और चावल के साथ-साथ इलायची, काली मिर्च और जीरा जैसे मसाले भी पाए जाते हैं।

वागामोन

केरल का यह हिल स्टेशन अपने ठंडे मौसम और प्राकृतिक दृश्यों के लिए जाना जाता है। इसे एशिया का स्कॉटलैंड माना जाता है। यह हिल स्टेशन साहसिक प्रेमियों के लिए एक लोकप्रिय स्थान है, यहां आप ट्रैकिंग और पैराग्लाइडिंग जैसी गतिविधियों का आनंद ले सकते हैं। यहां पर आप मार्माला झरने और करिकाडु व्यू प्वाइंट जैसे खूबसूरत स्थानों की यात्रा करना न भूलें।

पोनमुडी

यदि आप सड़क यात्रा पर निकलने के मूड में हैं तो तिरुवनंतपुरम के पास स्थित, पोनमुडी एक शानदार ऑप्शन है। यहां कि हरी-भरी पहाड़ियां, चाय के बागान और झरने एक अनोखा वातावरण बनाते हैं। रोमांच प्रेमियों के लिए यहां ट्रैकिंग का भी विकल्प है, जहां वे मीनमुट्टी और कल्लार जैसे झरनों की सुंदरता भी देख सकते हैं।

थेक्कडी

यह उन लोगों के लिए एक आदर्श हिल स्टेशन है जो सर्दियों की सुंदरता का आनंद लेना चाहते हैं।

पेरियार नेशनल पार्क और सुरुली फॉल्स दर्शनीय स्थलों में से एक हैं। थेक्तडी में आप राष्ट्रीय उद्यान में हाथियों, बाघों और अन्य वन्यजीवों को देखने का मौका मिलता है। इसके अतिरिक्त, यहां पर चाय, कॉफी और मसाले के बागानों के मनमोहक दृश्य देखने को मिलते हैं।

कॉफी की मदद से की जा सकती है घर की सफाई, जानिए कैसे

बर्तन साफ़ करने से लेकर बदबूदार सिंक को ताज़ा करने तक, कॉफ़ी ग्राउंड्स नेचुरल तरीके से आपके घर की सफाई करते हैं। अगर आप अपने घर की नेचुरल तरीके से क्लीनिंग करना चाहते हैं तो ऐसे में कॉफी ग्राउंड्स की मदद ली जा सकती हैं।

सुबह के समय उठते ही एक कप गरमा-गरम कॉफी मूड बना देती है। अक्सर हम सभी अपने दिन की शुरुआत कॉफी के साथ करना पसंद करते हैं या फिर काम की थकान को दूर करने के लिए सबसे पहले कॉफी की ही याद आती है। लेकिन क्या आपको पता है कि कॉफी ग्राउंड्स आपके घर की सफाई करने में भी बहुत अधिक मददगार है। जी हां, कॉफी ग्राउंड्स को अक्सर हम बाहर फेंक देते हैं। जबकि इन्हें फेंकने के बजाय आप उनका इस्तेमाल घर में मौजूद सभी तरह की गंदगी को साफ करने के लिए कर सकते हैं।

बर्तन साफ़ करने से लेकर बदबूदार सिंक को ताज़ा करने तक, कॉफ़ी ग्राउंड्स नेचुरल तरीके से आपके घर की सफाई करते हैं। अगर आप अपने घर की नेचुरल तरीके से क्लीनिंग करना चाहते हैं तो ऐसे में कॉफी ग्राउंड्स की मदद ली जा सकती हैं। तो चलिए जानते हैं इसके बारे में-

फ्रिज की बदबू करें दूर

अक्सर फ्रिज से अजीब सी स्मेल आती है, जो बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती है। ऐसे में कॉफी ग्राउंड्स की मदद ली जा सकती है। बदबू को बेअसर करने के लिए अपने फ्रिज के पीछे सूखे कॉफी ग्राउंड्स का एक कटोरा रखें। वे फ्रिज में मौजूद बैड स्मेल को अब्जॉर्ब कर लेगा और फिर आपका फ्रिज दोबारा महकने लगेगा।

नालियों की गंदगी करें साफ

सुनकर शायद आपको हैरानी हो, लेकिन नालियों में हल्की गंदगी को साफ़ करने के लिए कॉफ़ी ग्राउंड्स का इस्तेमाल किया जा सकता है। वे हल्के घर्षण वाले होते हैं, जो नीचे जाते समय गंदगी को दूर धकेलने में मदद करते हैं। बस उन्हें गर्म पानी से धोएँ और सारा पानी बाहर निकाल दें। हालांकि, ऐसा कभी-कभार ही करें, क्योंकि अगर आप सावधान नहीं हैं तो बार-बार इस्तेमाल करने से नालियां क्लॉग भी हो सकती हैं।

सिंक के दाग को करे साफ़

स्टेनलेस स्टील या सिरेमिक सिंक समय के साथ डिस्कलर्ड हो जाते हैं, खासकर खाने के दागों के कारण। ऐसे में कॉफ़ी ग्राउंड्स का इस्तेमाल करना अच्छा विचार हो सकता है। बस आप अपने सिंक में कॉफ़ी ग्राउंड्स को थोड़ा-सा छिड़कें और सर्कुलर मोशन में रगड़ें। यह एक सौम्य अपघर्षक की तरह काम करता है जो आपकी सतहों को खरोंचे बिना दाग हटाता है। जब आप सिंक के दाग को स्क्रब कर लें तो फिर इसे अच्छी तरह पानी की मदद से धोएं।

अगले महीने है शादी, तो ब्राइड-ट-बी अभी से शुरु कर दें ये फेस पैक लगाना, पार्लर जैसा आएगा निखार

अगर आपकी भी अगले महीने शादी होने जा रही है और चेहरे पर आप भी नेचुरल ग्लो चाहते हैं, तो आज ही इस फेस पैक को लगाना शुरु कर दें। ग्लो शादी के बाद भी नजर आएगा। आइए आपको बताते हैं फेस पैक को कैसे बनाएं?

12 नवंबर से शादियों का सीजन शुरु होने जा रहा है। ब्राइड के लिए शादी का दिन बेहद खास होता है। इस दिन के लिए लड़कियां काफी समय से इंतजार करती है। शादियों के सीजन शुरु होने से पार्लर में काफी भीड होने लगती है। कई पार्लर तो इतने बिजी हो जाते हैं कि स्किन केयर करवाने के लिए जगह नहीं होती है। ऐसे में अपना पैसा और समय बचाने के लिए आप घर पर ही पार्लर जैसा ग्लो पा सकते हैं। इस फेस पैके के लगाने से शादी वाले दिन तक ऐसा ग्लो नजर आता है कि सबकी आंखें आप पर रहेगी। इस जादुई फेस पैक को लगाने से शादी के बाद भी निखार नजर आएगा, जिससे आपके पति भी काफी तारीफ करते नहीं थकेंगे।

पार्लर जैसा ग्लो पाने के लिए बनाएं ये फेस पैक

सामग्री

- संतरें का छिलका
- दो चम्मच छिली हुई मसूर की दाल
- दो चम्मच चावल
- दो चम्मच अलसी
- दो चम्मच मुलेठी पाउडर
- एक चम्मच हल्दी
- पांच से सात केसर के धागे
- दो चम्मच चीनी
- एक चम्मच बेसन

फेस पैक बनाने की विधि

- सबसे पहले किसी बर्तन में संतरे का छिलका गर्म कर लें, जब ये ड्राई हो जाए। -इसके बाद चावल और अलसी को हल्का रोस्ट कर लें। ग्राइंडर जार में संतरे का छिलका, दाल, चावल और अलसी को डाल दें।
- फिर आप केसर के रेशे, एक चम्मच बेसन, मुलेठी पाउडर, हल्दी को डाल दें। इसके साथ ही आप चीनी भी मिलाएं। सभी चीजों को अच्छे से पीसकर पाउडर बना लें और किसी एयर टाइट डिब्बे में रख दें।

कैसे लगाएं ग्लोइंग फेस पैक

इसके लिए आप एक बाउल लें उसमें फेस पैक का मिश्रण डालें और कच्चा दूध या गुलाबजल मिलाकर पेस्ट तैयार करें। चेहरे से लेकर गर्दन, हाथ-पैर में लगाकर सूखने दें। 15 से 20 मिनट बाद हल्के हाथों से रब करते हुए छुड़ाएं और पानी से साफ कर दें। इस पैक को लगाने से त्वचा टाइट होगी और स्किन से दाग-धब्बे होंगे दूर। मसूर की दाल चेहरे की रंगत को साफ करती है, जिससे स्किन चमकदार और सुंदर दिखने लगती है। इस पैक को 20-25 दिनों तक इस्तेमाल करें फिर देखें इसका फर्क चेहरे पर आएगा नजर।

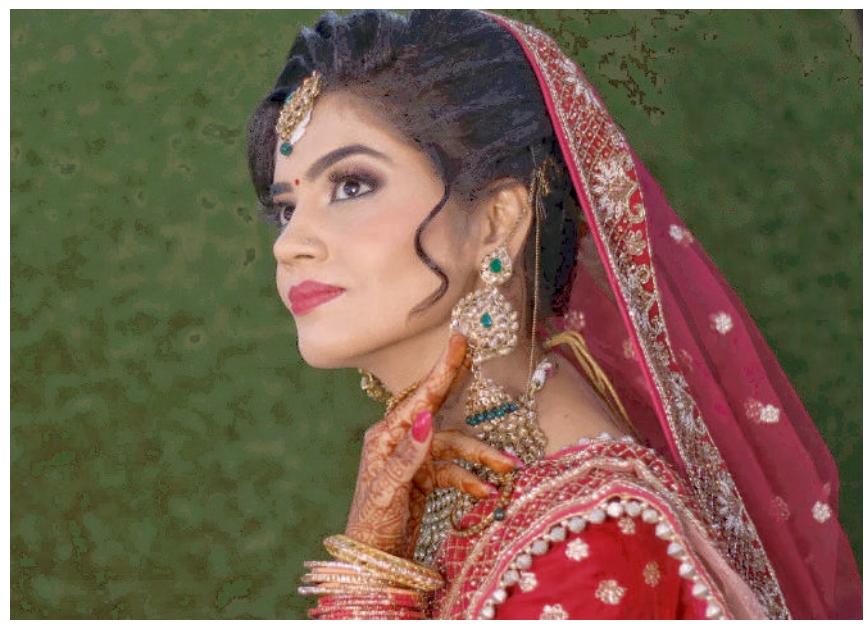

सर्दियों में इम्यूनिटी को बूस्ट करने के लिए इन 5 ड्राई फ्रूट्स और सीड्स का सेवन करें

अखरोट को सर्दियों में नाश्ते के दौरान खाना सबसे बेहतरीन माना जाता है क्योंकि यह आवश्यक पोषक तत्वों, एंटीऑक्सिडेंट और विटामिन से भरपूर होता है और विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में मदद कर सकता है। इसके अलावा सूखे मेवे और सीड्स खाने के कई फायदे मिलते हैं।

आखिरकार सर्दियां आ गई हैं। इस मौसम में चिलचिलाती गर्मी से बड़ी राहत मिलती है। वैसे ही सर्दियों में हेल्थ का ध्यान रखना भी काफी जरुरी होता है। सर्द मौसम कई स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकता है, जैसे श्वसन संबंधी बीमारियां, ड्राई स्किन, हृदय संबंधी समस्याएं, हाइपोथर्मिया, निमोनिया और यहां तक कि अस्थमा का दौरा भी। इन सबसे निपटने का सबसे अच्छा तरीका हमारे आहार और पोषण पर ध्यान केंद्रित करना है। सर्दियों के दौरान हमारी ऊर्जा के स्तर, चयापचय और यहां तक कि आहार विकल्पों में भी महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिलता है। इसलिए यह आवश्यक है कि आप एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए जंक फूड के स्थान पर फायदेमंद नट्स और बीजों का का सेवन करें।

सर्दियों में इन नट्स और बीजों के सेवन से बीमारियां होगी दूर

बादाम

बादाम में प्रोटीन, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, मैंगनीज और विटामिन से भरपूर पोषक तत्व पाए जाते है। बादाम खाने से शरीर को खांसी और सर्दी से बचाने में सहायता मिलती है। इन सूखे मेवों में मौजूद स्वस्थ फैट आपके शरीर को गर्म रखने और बीमारियों से लड़ने के लिए आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने में मदद करता है। इसके अलावा बादाम आपकी त्वचा की सेहत, दिल की सेहत, दिमाग की सेहत और पाचन के लिए भी अच्छे होता है।

अखरोट

अखरोट को सर्दियों के लिए एक बेहतरीन माना जाता है क्योंकि यह आवश्यक पोषक तत्वों, एंटीऑक्सिडेंट और विटामिन से भरपूर होता है और कई तरह की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में मदद कर सकता है। ओमेगा-3 फैटी एसिड से भरपूर, यह मस्तिष्क के कामकाज में मदद करता है, खराब कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करता है और खाली पेट सेवन करने पर ऊर्जा को बढ़ावा देता है।

सूरजमुखी के बीज

सूरजमुखी के बीज आपके सर्दियों के आहार में सबसे बेहतरीन हैं क्योंकि ये पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं जो कई स्वास्थ्य में मदद करते हैं। इन बीजों में जिंक होता है, जो एंजाइम को सक्रिय करते हैं जो आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने में मदद करता है। विटामिन ई, जो सूजन को कम करता है और प्रोटीन, वसा और फाइबर में उच्च होता है। जो वजन बनाए रखने में मदद कर सकता है।

काजू

काजू में पॉलीअनसेचुरेटेड और मोनोअनसैचुरेटेड फैटी एसिड दोनों होते हैं जो आपके शरीर में थर्मोजेनेसिस को बढ़ावा देते हैं, इससे आप सर्दियों के दौरान गर्म रह सकते हैं। इसके साथ ही ये खनिज और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं जो प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में मदद करते हैं। इसके अलावा, काजू में विटामिन ई होता है, जो आपकी त्वचा को स्वस्थ और चमकदार बनाए रख सकता है।

चिया बीज

चिया बीज आवश्यक पोषक तत्वों का एक पावरहाउस हैं जो सर्दियों के महीनों के दौरान फायदेमंद हो सकते हैं। एंटीऑक्सिडेंट, विटामिन और खनिजों से भरपूर, ये बीज आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने और स्थिर ऊर्जा स्तर बनाए रखने में मदद कर सकते हैं। साथ ही इनमें फाइबर भी भरपूर होता है, जो पाचन में मदद कर सकता है।

तुलसी विवाह में क्या-क्या सामग्री चाहिए होती है नोट करें

कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि या द्वादशी तिथि में तुलसी विवाह का अयोजन होता है। अगर आप भी तुलसी विवाह की पूजा कर रहे हैं तो इन जरुरी चीजों को शामिल करें।

सनातन धर्म में तुलसी का बेहद महत्व माना जाता है। धार्मिक कार्यों में तुलसी के पत्तों को प्रयोग किया जाता है। हर एक घर में तुलसी पौधे की पूजा होती है। कार्तिक मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी या द्वादशी के तिथि पर तुलसी विवाह कराया जाता है। इस तुलसी मां और भगवान विष्णु के शालिग्राम स्वरुप से विधि-विधान से विवाह कराया जाता है। इसी दिन से शादी-विवाह सहित सभी शुभ कार्य शुरु हो जाते है। हिंदू पंचांग के अनुसार, इस साल 13 नवंबर 2024 को तुलसी विवाह है। इस दिन जो व्यक्ति विधिवत तुलसी विवाह अयोजन करने वैवाहिक जीवन खुशियों से भर जाता है और सुख-समृद्धि का आशीर्वाद मिलता है। तुलसी विवाह के पूजन में क्या-क्या चीजें शामिल करना जरुरी है। आइए जानते हैं पूरी सामग्री की लिस्ट।

कब है तुलसी विवाह?

पंचांग के अनुसार, कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को 12 नवंबर 2024 को 4.04 पीएम पर शुरु होगा और अगले दिन दोपहर 13 नवंबर 2024 को 1 बजकर 1 मिनट पर समाप्त होगा। उदया तिथि के मुताबिक, 13 नवंबर 2024 को तुलसी विवाह मनाया जाएगा।

तुलसी विवाह पूजन सामग्री लिस्ट

तुलसी विवाह के पूजन के लिए तुलसी का पौधा, शालीग्राम भगवान, विष्णुजी की तस्वीर पूजा की चौकी, लाल रंग का वस्त्र, कलश, केले का पत्ता, हल्दी की गांठ, चंदन, रोली, तिल, मौली, धूप, दीप, तुलसी माता के लिए श्रृंगार सामग्री(बिंदी, लाल चुनरी, सिंदूर, मेंहदी, बिछुआ, साड़ी आदि) गन्ना, अनार, केला, सिघाड़ा, मूली, आंवला, आम का पत्ता, नारियल, अष्टदल कमल, शकरकंद, गंगाजल, सीताफल, अमरुद, कपूर, फल, फूल, बताशा, मिठाई आदि लेकर आएं।

मंदिर पर हमले के विरोध में कनाडा उच्चायोग के बाहर सुरक्षा बढ़ाई गई, हिंदू-सिख संगठन का मार्च

परिवहन विशेष न्यूज

कनाडा में हिंदू मंदिरों पर हुए हमलों के विरोध में एक हिंदू-सिख संगठन के सदस्यों के मार्च करने के बाद कनाडा उच्चायोग के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। हिंदू सिख ग्लोबल फोरम के सदस्य चाणक्यपुरी इलाके में उच्चायोग की ओर मार्च कर रहे हैं। पुलिस ने कहा कि कानून-व्यवस्था में किसी तरह की बाधा न आए यह सुनिश्चित करने के लिए उच्चायोग के बाहर बैरिकेडिंग लगा दी है।

नई दिल्ली। कनाडा में हिंदू मंदिरों पर हो रहे हमलों और हिंसा के विरोध में हिंदू सिख ग्लोबल फोरम ने दिल्ली में शांति पथ स्थित कनाड़ा के दूतावास के पास विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस द्वारा सुरक्षा के इंतजाम की पहली कड़ी को तोड़ दिया और बैरिकेडिंग को लांगते हुए दूतावास के नजदीक पहुंचने की कोशिश दिखे।

हालांकि मौके पर तैनात पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों की टुकड़ियों ने प्रदर्शनकारियों दूतावास के नजदीक जाने से रोकने में सफलता प्राप्त की। पुलिस द्वारा रोके जाने पर प्रदर्शनकारियों ने वहीं पर नारेबाजी की। इसके बाद कनाडा के दूतावास में ज्ञापन भी सौंपा गया।

प्रदर्शन में महिलाएं भी शामिल

इसमें कनाडा.में हुई हिंसा में शामिल आरोपितों पर त्वरित कार्रवाई की मांग की गई। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में सिख पुरुष व महिलाएं शामिल थी। जो कि हाथों में हिंसा का विरोध करने वाले नारे लिखी तख्तियां लेकर थी। साथ ही हिंदू सिख भाई-भाई के नारे भी प्रदर्शनकारियों द्वारा लगाए गए।

दूतवास को सौंपा ज्ञापन

प्रदर्शन का नेतृत्व रहे प्रो. हरजिंदर कौर, रिटायर्ड ब्रिगेडियर पीएस गोथरा, सरदार तजिंदर सिंह मारवाह ने किया। प्रदर्शनकारियों ने कनाडा दूतावास को सौंपे ज्ञापन में चार नवंबर को ब्रैंपटन (कनाडा) में एक मंदिर के पास हुई हिंसा की घटना की निंदा की गई। घटना ने दुनियाभर में हिंदू और सिख समुदायों के बीच भारी संकट और भय पैदा कर दिया है।

हमले की निंदा की

रिटायर्ड ब्रिगेडियर पीएस गोथरा ने कहा कि हम अलगाववादियों द्वारा कनाडा में गुप्त उद्देश्यों से विभाजन पैदा कर कथित समर्थन को लेकर बेहद चिंतित हैं। हम इन तत्वों की भूमिका की निंदा करते हैं। उन्होंने कहा कि कनाडा सरकार को चाहिए कि इन चिंताओं को दूर करने और अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तत्काल कार्रवाई करें।

प्रदर्शनकारियों ने साफ तौर पर कहा कि हमेशा से सिख समुदाय मंदिर निर्माण में योगदान देता रहा है। जिस तरह के आरोप सिख समुदाय पर लगाए जा रहे हैं वह हिंदुओं और सिखों को बांटने की कोशिश है। इसे सिख समुदाय कभी भी बर्दाश्त नहीं करेगा। साथ ही कनाडा में हिंदू मंदिरों की सुरक्षा पुख्ता होनी चाहिए।

दूतावास की बढ़ाई गई सुरक्षा

कनाडा में हिंदू मंदिरों पर हुए हमलों के विरोध में हिंदू-सिख संगठन के विरोध प्रदर्शन के बाद शांतिपथ स्थित कनाडा उच्चायोग के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। हिंदू सिख ग्लोबल फोरम के सदस्यों ने चाणक्यपुरी इलाके में उच्चायोग की ओर मार्च निकाला था।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि कानून-व्यवस्था में किसी तरह की बाधा न आए, यह सुनिश्चित करने के लिए उच्चायोग के बाहर बैरिकेडिंग लगा दी है, क्योंकि कुछ प्रदर्शनकारियों को बैरिकेडिंग को लांघने की कोशिश करते देखा गया था।

उन्होंने बताया कि हमने विरोध मार्च के आह्वान के बाद कनाडा के उच्चायोग के बाहर अतिरिक्त बल और बैरिकेडिंग तैनात की है। किसी को भी कानून-व्यवस्था का उल्लंघन करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

दिल्ली चुनाव से पहले सियासत तेज, इस बार क्या होंगे चुनावी मुद्दे?

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली विधानसभा चुनाव में बिजली और पानी एक बार फिर बड़ा मुद्दा बनने जा रहा है। आम आदमी पार्टी ने अपने चुनावी वादे के मुताबिक 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली और 2000 लीटर मुफ्त पानी देने का एलान किया था। लेकिन इस बार गर्मी के मौसम में दिल्ली में जल संकट होने से भाजपा को उसे घेरने का मौका मिल गया है।

नई दिल्ली। दिल्ली में वर्षों से बिजली व पानी चुनावी मुद्दा बनता रहा है। निशुल्क बिजली-पानी को मुद्दा बनाकर आम आदमी पार्टी दिल्ली की सत्ता तक पहुंची है। अब विरोधी पार्टियां उसे बिजली-पानी के मुद्दे पर घेरने में जुट गई हैं। भाजपा इसे लेकर अधिक मुखर है। वह आप सरकार पर बिजली वितरण कंपनियों (डिस्काम) को लाभ पहुंचाने और शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने में विफल होने का आरोप लगा रही है।

दिल्ली में 200 यूनिट बिजली मिलती है मुफ्त

वर्ष 2015 में सत्ता में आने के बाद आप ने अपने चुनावी वादे को पूरा करते हुए प्रति माह 200 यूनिट तक निशुल्क बिजली और दो हजार लीटर निशुल्क पानी देने की घोषणा की थी। इसे वह अपनी सफलता बताते हुए दूसरे राज्यों में भी इसे प्रचारित करती है।

भाजपा ने पेयजल की समस्या को बनाया मुद्दा

उसका दावा है कि सिर्फ आम आदमी पार्टी की सरकार ही निशुल्क बिजली व पानी दे रही है। परंतु, इस बार गर्मी के मौसम में दिल्ली में जल संकट होने से भाजपा को उसे घेरने का मौका मिल गया है। लोकसभा चुनाव में भाजपा ने इसे बड़ा मुद्दा बनाया था। इस समय भी यमुना में अमोनिया की मात्रा बढ़ने से अक्सर दिल्ली में पेयजल की समस्या हो रही है।

केजरीवाल ने किया पानी का बिल माफ करने का वादा

पेयजल आपूर्ति व दूषित पेयजल की समस्या के साथ ही उपभोक्ता पानी का अधिक बिल भेजने की शिकायत कर रहे हैं। भाजपा इसे फिर से चुनावी मुद्दा बनाने में लगी हुई है। पार्टी के नेता बयानबाजी करने के साथ ही सोशल मीडिया पर इसे लेकर अभियान चला रहे हैं। इसकी गंभीरता को देखते हुए आप संयोजक अरविंद केजरीवाल अपनी पदयात्रा में लोगों से पानी का बढ़ा हुआ बिल जमा नहीं करने और दोबारा सत्ता में आने पर उसे माफ करने का वादा कर रहे हैं। पानी के साथ ही बिजली पर भी खूब राजनीति हो रही है। भाजपा बिजली बिल पर पेंशन अधिभार, स्थायी शुल्क, बिजली खरीद समायोजन शुल्क लगाने का विरोध कर रही है। उसका आरोप है कि बिजली कंपनियों को लाभ पहुंचाने के लिए उपभोक्ताओं पर बोझ बढ़ा रही है। अब डिस्काम की नियामक परिसंपत्ति 21 हजार करोड़ रुपये तक पहुंचने और बीएसईएस की दोनों कंपनियों पर दिल्ली सरकार के बिजली उत्पादन संयंत्रों का 26638 करोड़ से अधिक का बकाया होने को लेकर आप सरकार को कठघरे में खड़ा कर रही है।

दिल्ली में मौतों के आंकड़ों ने डराया, संक्रामक बीमारियों ने सबसे ज्यादा छीनी जिंदगियां

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में मौतों का आंकड़ा डराने वाला है। 2023 में दर्ज कुल मौतों में से लगभग 24 प्रतिशत मौतें संक्रामक और परजीवी बीमारियों के कारण हुई हैं। सेप्टीसीमिया और तपेदिक प्रमुख कारण थे। कैंसर से होने वाली मौतों में भी वृद्धि हुई है। संचार संबंधी रोगों से होने वाली मौतों में कमी आई है। 45-64 आयु वर्ग में सबसे अधिक मौतें हुई हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली में 2023 में दर्ज कुल 89,000 मौत में से लगभग 24 प्रतिशत मौत हैजा, डायरिया, तपेदिक और हेपेटाइटिस-बी जैसी संक्रामक और परजीवी (वेक्टर जनित) बीमारियों के कारण हुईं। दिल्ली सरकार के आर्थिक और सांख्यिकी निदेशालय द्वारा अगस्त में जारी की गई मृत्यु के कारणों का चिकित्सा प्रमाणन (एमसीसीडी) रिपोर्ट 2023 में कहा गया है कि कुल 88,628 संस्थागत मौतों में से लगभग 21,000 लोगों की मृत्यु संक्रामक और परजीवी रोगों के कारण हुई।

रिपोर्ट पर नजर डालें तो दिल्ली में वर्ष 2023 में मृत्यु का प्रमुख कारण संक्रामक और परजीवी रोग थे, जो संस्थागत मृत्यु का लगभग एक चौथाई हिस्सा थे। सेप्टीसीमिया और तपेदिक प्रमुख कारण थे, और इन रोगों से होने वाली मौत में पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि हुई।

कैंसर से होने वाली मौतों में हुई वृद्धि

जबकि सेप्टीसीमिया 15,332 मौत के साथ सबसे बड़ा कारण था, 3,904 मौतें तपेदिक के कारण हुईं। संचार संबंधी रोगों से होने वाली मौतों में कमी आई, कैंसर से होने वाली मौतों में वृद्धि हुई। 45-64 आयु वर्ग में सबसे अधिक मौतें हुईं। दिल्ली में संक्रामक और परजीवी रोग एक बड़ी सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या बनी हुई है।

मौतों के और भी कारण

वर्ष 2023 में कैंसर और उससे संबंधित बीमारियों के कारण संस्थागत मौतों की संख्या 6,054 दर्ज की गई, जो वर्ष 2022 में दर्ज 5,409 से लगभग 12 प्रतिशत अधिक है। शिशुओं में संस्थागत मौतों की अधिकतम संख्या भ्रूण के धीमे विकास, भ्रूण के कुपोषण और अपरिपक्वता 1,517 के कारण थी, इसके बाद निमोनिया से 1,373 मौत हुईं।

जन्म के समय श्वासावरोध और अन्य श्वसन संबंधी स्थितियों से 704 मौत हुईं। रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2023 में इस श्रेणी में कुल 28,611 (32.28 प्रतिशत) पुरुषों और महिलाओं की मृत्यु हुई, इसके बाद 65 वर्ष और उससे अधिक आयु के 26,096 (29.44 प्रतिशत) लोगों की मृत्यु हुई।

वहीं राष्ट्रीय राजधानी में कैंसर की बीमारी भी बढ़ रही है। इस वजह से पिछले डेढ़ दशक में ही कैंसर से मौत करीब दोगुनी हो चुकी हैं। दिल्ली सरकार के आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय द्वारा इस रिपोर्ट के अनुसार जन्म व मृत्यु पंजीकरण रिपोर्ट से यह बात सामने आई है।

पिछले वर्ष दिल्ली में 6.83 प्रतिशत मौत का कारण कैंसर की बीमारी बनी। इससे विभिन्न संक्रमण, हृदय रक्तवाहिनियों की बीमारियों व सांस रोग के बाद कैंसर की बीमारी दिल्ली में मौत का चौथा बड़ा कारण साबित होने लगी है। पाचन तंत्र से संबंधित कैंसर से मौत सबसे ज्यादा हो रही हैं।

वर्ष 2009 में दिल्ली में कैंसर से 3936 मरीजों की मौतें हुई थीं। जिसमें से 3227 मरीजों की मौत अस्पतालों में इलाज के दौरान हुई थी। जबकि पिछले वर्ष 7926 मरीज कैंसर से काल के शिकार हो गए। इसमें से 6054 मरीजों की मौत अस्पतालों में हुईं। हर उम्र के लोग कैंसर से जान गंवा रहे हैं लेकिन 45 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की मौत अधिक हुई।

दिल्ली के इन इलाकों में नहीं आएगा पानी, जल बोर्ड ने जारी किए हेल्पलाइन नंबर

सुषमा रानी

दिल्ली के कुछ इलाकों में पानी की किल्लत हो सकती है। दिल्ली जल बोर्ड ने बताया कि रोहिणी सेक्टर 7 बीपीएस की 700 मिमी व्यास की आउटलेन लाइन पर फ्लो मीटर लगाने के कारण 16 घंटे तक पानी की सप्लाई प्रभावित रहेगी। प्रभावित इलाकों में रोहिणी सेक्टर 6 7 8 और आसपास के इलाके शामिल हैं। आपातकालीन स्थिति या पानी का टैंकर मंगाने के लिए 1916 नंबर डायल करें।

नई दिल्ली। बाहरी दिल्ली के कुछ इलाकों में पानी की किल्लत हो सकती है। दिल्ली जल बोर्ड ने कहा कि इलाकों में पानी की आपूर्ति प्रभावित रहेगी। पानी सोमवार (11 नवंबर) शाम से मंगलवार सुबह तक नहीं आएगा। डीजेबी ने इसकी वजह भी बताई है। दिल्ली जल बोर्ड के अनुसार, रोहिणी सेक्टर 7 बीपीएस की 700 मिमी व्यास की आउटलेन लाइन पर फ्लो मीटर लगाने के कारण 16 घंटे तक पानी की सप्लाई प्रभावित रहेगी। फ्लो मीटर लगाने का काम सोमवार सुबह 10 बजे से शुरू होगा और अगले 16 घंटे तक चलेगा।

इन इलाकों में नहीं आएगा पानी

पानी की सप्लाई से प्रभावित इलाके रोहिणी सेक्टर 6, रोहिणी सेक्टर 7, रोहिणी सेक्टर 8 और उसके असापास के हैं। यहां पानी सोमवार शाम और मंगलवार सुबह नहीं आएगा। अगर सोमवार सुबपह पानी की आपूर्ति होती है तो उसका पानी का प्रेशर काफी कम रहेगा।

जारी किए हेल्पलाइन नंबर

दिल्ली जल बोर्ड ने लोगों की सहायता के लिए हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए हैं। आपातकाल स्थिति या फिर पानी का टैंकर मंगाने के लिए 1916 नंबर डायल कर सकते हैं।

मंगोलपुरी के लिए हेल्पलाइन नंबर-01127915965

पश्चिम विहार के लिए हेल्पलाइन नंबर-01125281197

सेंट्रल कंट्रोल रूम के नंबर-

1916
23527679
23624469
9650291021
1800117118

कचरा स्थल के चारों ओर नीली शीट लगाने के निर्देश

दिल्ली नगर निगम की महापौर डॉ. शैली ओबेराय ने शनिवार को रोहिणी जोन में सफाई व्यवस्था का जायजा लिया और कचरे के अनुचित तरीके से निपटान पर नाखुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि कचरा बिखरने, अनधिकृत डंपिंग, अस्वच्छ परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं और सर्विस सर्विस लेन में कचरा फैल रहा है।

उन्होंने कचरे को मुख्य सड़कों से दिखाई देने से रोकने के लिए तत्काल उपाय लागू करने के निर्देश दिए और कहा कि अस्थायी रूप से दृश्य अवरोधक के रूप में चारों ओर नीली शीट्स का उपयोग किया जाए।ढलाव घरों के चारों ओर अस्थायी सीमा बनाकर कचरे को बिखरने से रोकने के उपाय किए जाएं और सफाई प्रोटोकाल के अनुसार दिन में दो बार कचरे का उठान होना चाहिए।

डॉ. शैली ओबेराय ने रोहिणी जोन के अंतर्गत मंगोलपुरी, सुल्तानपुरी, नांगलोई, बुध विहार, और रोहिणी क्षेत्रों में कचरे के बिखराव और सार्वजनिक स्थानों का निरीक्षण किया। इस निरीक्षण का उद्देश्य जोन के कचरा-संवेदनशील स्थानों की स्थिति का मूल्यांकन करना और सफाई तथा बेहतर कचरा प्रबंधन के लिए तत्काल उपायों को लागू करना था।

दिल्ली गण परिषद का धमाल, भविष्य की दिल्ली को लेकर पंच परमेश्वर संवाद

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली गण परिषद देश की राजधानी को विश्व स्तरीय शहर बनाने की दिशा में लगातार प्रयासत है। परिषद के अध्यक्ष एमसीडी के पूर्व चेयरमैन धर्मवीर सिंह लगातार जन सहयोग से दिल्ली को साफ सुथरा, हरा भरा बनाने में दिन-रात लगे हुए हैं। इस प्रयास में सभी की भागीदारी एवं उनके सुझावों को जानने समझने के लिए अग्रवाल भवन कालकाजी गोविंदपुरी में भविष्य की दिल्ली को लेकर पंच परमेश्वर संवाद का शानदार आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विद्वतजनों ने दिल्ली को स्वच्छ सुंदर सुव्यवस्थित बनाने के लिए अपने सारगर्भित विचार रखें। इस अवसर पर अतिथि के रूप में पूर्व आईपीएस अधिकारी उदय सहाय एमसीडी के पूर्व चेयरमैन जगदीश ममगाईं, अभिषेक दत्त, वरिष्ठ पत्रकार आशुतोष पाठक, रश्मि सेठी, अनंत चतुर्वेदी, अतुल गोयल के अलावा सैकड़ो की संख्या में गणमान्य लोगों ने भाग लेकर इस कार्यक्रम में अपनी पूरी अभिरुचि दिखाई तथा दिल्ली को बेहतर बनाने के लिए अपने सुझाव दिए। जिन लोगों को मंच से अपना सुझाव रखने का अवसर नहीं मिला उन लोगों ने कागज पर अपनी सुझाव दिल्ली गण परिषद के अध्यक्ष धर्मवीर सिंह को सुपुर्द किये। एडवोकेट धर्मवीर सिंह ने कहा कि प्रबुद्ध लोगों के सुझाव मेरे लिए काफी महत्वपूर्ण है। इन सुझावों को संकलित कर सभी पार्टियों को भेजा जाएगा, ताकि वह बेहतर दिल्ली बनाने की दिशा में अपनी योजना में इसे शामिल कर सकें। श्री सिंह के इस तरह के सामाजिक कार्य की कालकाजी ही नहीं पूरी दिल्ली में जबरदस्त चर्चा हो रही है। यही कारण है कि इस पंच परमेश्वर संवाद में विभिन्न दलों के लोगों ने राजनीति से ऊपर उठकर खुले दिल से भाग लिया और अपने विचार रखें।

बीजेपी के बाद कांग्रेस के गढ़ में सेंध लगा रही आप, पूर्वी दिल्ली के मुस्लिम वोटरों को साधने में जुटे केजरीवाल

पूर्वी दिल्ली की सीलमपुर विधानसभा में कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। आम आदमी पार्टी (आप) के मुखिया अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली के मंत्री इमरान हुसैन के साथ खुद चौधरी मतीन अहमद के घर पहुंचकर उन्हें पार्टी में शामिल करवाया। यह पहली बार है जब केजरीवाल खुद किसी कांग्रेस नेता को पार्टी में शामिल करने के लिए पहुंचे हैं। मतीन अहमद के बेटे-बहू पहले ही आप के सदस्य हैं।

पूर्वी दिल्ली। सीलमपुर विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। रविवार को एक बड़ा फेरबदल पार्टी में हुआ। आम आदमी पार्टी (आप) के मुखिया अरविंद केजरीवाल दिल्ली के मंत्री इमरान हुसैन के साथ खुद चौधरी मतीन अहमद के घर पहुंचे और उन्हें पार्टी में शामिल करवाया। दिल्ली विधानसभा चुनाव नजदीक है, उत्तर पूर्वी जिले में पहली बार ऐसा हुआ है कि केजरीवाल खुद कांग्रेस के किसी नेता को पार्टी में शामिल करवाने के लिए पहुंचे।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मतीन अहमद दिल्ली की राजनीति में एक बड़ा चेहरा हैं। लेकिन उन्होंने आप में शामिल होने में दस वर्ष लगा दिए। यह एक शादी है, जिसमें तलाक नहीं होगी। आप लोगों के हक व विकास के लिए लड़ाई लड़ रही है। भाजपा आप के नेताओं को झूठे केस में फंसाकर जेल भेज रही है। लेकिन यह आंदोलन वाली पार्टी है, इस पार्टी के नेता इस तरह के केस से डरने वाले नहीं है।

मतीन अहमद ने कांग्रेस पर नजरअंदाज करने का लगाया आरोप

उन्होंने कहा कि आप की ही सरकार लोगों को मुफ्त बिजली व पानी की सुविधा दे रही है। भाजपा की जिन राज्यों में सरकार है, वहां के लोगों को दिल्ली जैसी सुविधाओं का लाभ नहीं मिल रहा है। मतीन अहमद ने कहा कि कुछ दिन पहले उनके बेटे व बहू आप में शामिल हुए थे। इस पर उन्होंने कहा था कि वह कांग्रेस में रहेंगे और पार्टी चाहेगी तो वह चुनाव भी लड़ेंगे। लेकिन पार्टी उन्हें अनदेखा करती रही और दिल्ली में शुरू हुई न्याय यात्रा तक में नहीं बुलाया।

आप से सीलमपुर के विधायक अब्दुल रहमान से नाराज

आप के मुखिया खुद घर पर मिलने आए और पार्टी में शामिल होने की दावत दी तो वह पार्टी में शामिल हो गए। आप से सीलमपुर विधायक अब्दुल रहमान इसमें शामिल नहीं हुए। उन्होंने कहा जो लोग पार्टी को गोली देते थे, उन्हीं को इसमें शामिल करवाया जा रहा है। यह पार्टी का निर्णय है। 29 अक्टूबर को मतीन के बेटे व कांग्रेस के बाबरपुर जिलाध्यक्ष चौधरी जुबैर व चौहान बांगर वार्ड से कांग्रेस पार्षद शगुफ्ता चौधरी ने आप के मुख्यालय में पार्टी की सदस्यता ली थी।

यूपी में 32 जमीन खरीदारों को बड़ा झटका, वापस योगी सरकार को मिलेगा मालिकाना हक

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद के मोहिउद्दीनपुर में अनुसूचित जाति के चार भाइयों को पट्टे पर मिली जमीन को बिना अनुमति बेचने का मामला सामने आया है। इस मामले में 32 जमीन खरीदारों को बड़ा झटका लगा है। अपर जिलाधिकारी सदर की कोर्ट ने अब बेची गई जमीन को राज्य सरकार में निहित करने का आदेश दिया है। बिना जिलाधिकारी की अनुमति के 32 लोगों को जमीन बेची गई थी।

गाजियाबाद। महिउद्दीनपुर में अनुसूचित वर्ग के चार भाइयों को कब्जे के आधार पर पट्टे में मिली 2,982 वर्गमीटर जमीन को बिना जिला प्रशासन की अनुमति के 32 लोगों को बेच दिया गया। अपर जिलाधिकारी सदर की कोर्ट ने इस मामले में अब बेची गई जमीन को राज्य सरकार में निहित करने का आदेश जारी कर दिया है। इससे खरीदारों को झटका लगा है।

1993 में चार भाइयों को पट्टे में मिली थी जमीन

जमीन की कीमत 15 करोड़ रुपये से अधिक बताई जा रही है। ज्यादातर खरीदारों ने जमीन पर मकान बना लिए हैं और वहां परिवार के साथ रह रहे हैं। महिउद्दीनपुर में रहने वाले अनुसूचित वर्ग के शीशराम के चार बेटों जगत सिंह, भगत सिंह, चरन सिंह और चमन सिंह को 13,780 वर्गमीटर जमीन पर कब्जे के आधार पर वर्ष 1993 में मेरठ मंडल की अपर आयुक्त ने असंक्रमणीय भूमिधर घोषित किया था।

आरोप है कि दस साल बाद पट्टे में मिली कुल जमीन में से 2,982 वर्गमीटर जमीन बिना जिला प्रशासन की अनुमति के बेच दी गई। यह उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था अधिनियम की धारा 157- एए का उल्लंघन है। नियम के तहत दस साल बाद जमीन को असंक्रमणीय से संक्रमणीय कराया जा सकता है, जिससे कि जमीन को बेचने का अधिकार मिलता है।

जमीन बेचने से पहले लेनी होती है डीएम की अनुमति

अनुसूचित वर्ग के व्यक्ति को पट्टे में मिली जमीन को सिर्फ अनुसूचित वर्ग के लोगों को ही बेचने का अधिकार होता है। जमीन बेचने से पहले जिलाधिकारी से अनुमति लेना आवश्यक होता है। इसकी लिखित शिकायत वर्ष 2017 में पूर्व प्रधान के बेटे मुंदराज ने जिलाधिकारी गाजियाबाद से की। जिलाधिकारी ने इस मामले की जांच सदर तहसील के तहसीलदार को सौंपी और रिपोर्ट तलब की।

इस मामले में जांच में आरोप सही पाए गए और राजस्व निरीक्षक व लेखपाल ने रिपोर्ट सौंपी। इस रिपोर्ट के आधार पर केस दर्ज किया गया और सुनवाई के लिए इसे 15 नवंबर 2022 को अपर उप जिलाधिकारी सदर की कोर्ट में भेजा गया। इस केस में सुनवाई अब पूरी हो गई है। कोर्ट ने बिना जिला प्रशासन की अनुमति के बेची गई पट्टे की जमीन को राज्य सरकार में निहित करने का आदेश जारी कर दिया है।

बिना नियम का पालन किए बेची थी जमीन

ऐसे में अब यह जमीन वापस सरकार के पास आ जाएगी और बिना नियम का पालन किए जमीन खरीदने वाले खरीदारों के पास से जमीन का मालिकाना हक हट जाएगा, जल्द ही जिला प्रशासन की टीम जमीन पर कब्जा लेने के लिए पहुंचेगी।

अपर उप जिलाधिकारी सदर चंद्रेश सिंह ने कहा कि अनुसूचित वर्ग के व्यक्ति से पट्टे में मिली जमीन की खरीद करने से पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जमीन संक्रमणीय है या नहीं। जमीन बेचने के लिए जिलाधिकारी से अनुमति ली गई है या नहीं, यदि अनुमति नहीं मिली है तो जमीन की खरीद न की जाए।

विक्रेता - क्रेता - जमीन वर्गमीटर में
भगत सिंह - कुसुम देवी - 41.80
भगत सिंह - मूलचंद - 50.16
भगत सिंह - शिवनंदन - 41.80
जगत सिंह - बबीता झा - 58.54
जगत सिंह - विनीता झा - 41.80
जगत सिंह - सीमा देवी - 83.61
जगत सिंह - अनीता मिरुके - 20.90
जगत सिंह - अनीता मिरूके - 20.90
चरन सिंह - कलावती शर्मा - 167.22
चरन सिंह - कलावती शर्मा - 167.22
चमन सिंह - संतोष झा - 83.61
चमन सिंह - अशर्फीलाल - 25.083
चमन सिंह - दर्शन - 41.805
चमन सिंह - राजू - 25.080
चमन सिंह - राम सजीवन - 83.61
चमन सिंह - सपना तिवारी - 62.70
चमन सिंह - धनदेवी यादव - 83.61
चमन सिंह - राजाराम - 25.803
चमन सिंह - मधुपाल - 54.34
चमन सिंह - रामभूली - 41.805
भगत सिंह - मेहताब सिंह - 50.16
भगत सिंह - संध्या सिंह - 41.805
भगत सिंह - पूनम - 20.90
भगत सिंह - सरल शर्मा - 94.01
चमन सिंह - निखिल - 167.22
भगत सिंह - सीमा - 83.61
चरन सिंह - गीता - 334.44
चमन सिंह - भगवत स्वरूप, सतपाल नागर - 418.00
चमन सिंह - विजयपाल सिंह - 250.80
चरन सिंह - अम्बो देवी - 41.805
चरन सिंह - धर्म सिंह - 91.96
चरन सिंह - शबनम - 83.61
चरन सिंह - द्रोपदी - 83.61

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर 40 यात्रियों से भरी बस पलटी, सामने नीलगाय आने से हुआ हादसा; चालक सहित तीन घायल

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम के सोहना शहर में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर रविवार को एक बड़ा हादसा टल गया। एक्सप्रेस-वे पर बस के सामने नीलगाय आने से असंतुलित हुई डबल डेकर बस पलट गई जिसमें बस चालक समेत तीन लोग घायल हो गए। बस में करीब 40 सवारियां थीं जिनकी जान बाल-बाल बच गई। घायलों का इलाज के लिए गुरुग्राम के अस्पताल पहुंचाया गया है।

गुरुग्राम। सोहना शहर थाना क्षेत्र में बालूदा गांव के पास शनिवार रात साढ़े तीन बजे दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर नीलगाय के सामने आ जाने से असंतुलित हुई डबल डेकर बस पलट गई। हादसे में बस चालक समेत तीन लोग घायल हो गए। बस में करीब 40 सवारियां थीं। तीनों घायलों का इलाज गुरुग्राम के नागरिक अस्पताल में चल रहा है।

कोटा से देहरादून जा रही थी बस

बस चालक विमलेश ने बताया कि उत्तराखंड नंबर की डबल डेकर निजी बस लेकर वह राजस्थान के कोटा से देहरादून जा रहे थे। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर सोहना में बालूद गांव के पास जब उनकी बस पहुंची तो सामने से अचानक नील गाय आ गई। नील गाय को बचाने के चक्कर में उन्होंने तेजी से बस को घुमाया तो वह असंतुलित होकर पलट गई।

घायलों को सोहना के अस्पताल ले जाया गया

हादसे में विमलेश समेत बस में बैठीं उषा गुप्ता व तन्नु घायल हो गए। अन्य सवारियों की जान बाल-बाल बच गई। घटना की सूचना बस मालिक को दी गई। गुरुग्राम के सुभाष चौक से एक अन्य निजी बस मौके पर पहुंची और सभी सवारियों को इससे देहरादून के लिए रवाना किया गया।

दूसरी ओर तीनों घायलों को पहले सोहना के अस्पताल ले जाया गया। यहां से इन्हें गुरुग्राम रेफर कर दिया गया। सोहना शहर थाना पुलिस ने घटनास्थल से क्षतिग्रस्त बस को हटाकर यातायात सुचारु कराया। वहीं एक्सप्रेस-वे पर नीलगाय कैसे पहुंच गई, इसकी जांच भी की जा रही है।

पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी उठ रहे सवाल

उधर, पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी उठ रहे सवाल बांधवाड़ी के पास हुए हादसे के बाद पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठ रहे हैं। ग्वाल पहाड़ी चौकी क्षेत्र में जिस जगह यह हादसा हुआ, इससे पांच सौ मीटर दूर बांधवाड़ी कूड़े का पहाड़ है। यहां पर कूड़ा डालने के लिए रात में ट्रक और डंपर आते हैं। कई बार कूड़ा डालने के बाद चालक अपने-अपने वाहन सड़क पर ही खड़े कर देते हैं।

पहले भी फरीदाबाद रोड समेत दिल्ली-जयपुरी हाईवे पर बेतरतीब तरीके से सड़क पर खड़े वाहनों के कारण हादसे हो चुके हैं। इसके बाद भी पुलिस ऐसे वाहन चालकों के विरुद्ध कार्रवाई नहीं कर रही है। अगर नियमित रूप से पुलिस टीम इस इलाके में गश्त करती तो शायद सड़क पर वाहन नहीं खड़े होते और हादसे से बचाव होता।

नोएडा के तीन भू माफिया पर कार्रवाई का फरमान, टॉप-10 की लिस्ट बनाने का निर्देश जारी

परिवहन विशेष न्यूज

गौतमबुद्ध नगर के भू माफियाओं पर नकेल कसना शुरू कर दी गई है। नोएडा के जिलाधिकारी ने तीन चिन्हित भू माफिया पर कार्रवाई का फरमान सुनाया है। साथ ही उन्होंने अधिकारियों को टॉप-10 भू माफियाओं की सूची तैयार कर कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं। इससे धोखाधड़ी करने वाले भू-माफिया पर लगाम लग सकेगी।

ग्रेटर नोएडा। गौतमबुद्ध नगर में सक्रिय भू-माफिया पर जिलाधिकारी ने कार्रवाई का डंडा चलाना शुरू कर दिया है। शनिवार को बैठक कर तीन चिन्हित भू माफिया पर कार्रवाई का फरमान सुनाया। इसके अलावा टॉप-10 की सूची तैयार कर कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने जिले में भू माफियाओं के विरुद्ध कार्रवाई के निर्देश दिए।

डूब क्षेत्र में की जा रही थी अवैध प्लॉटिंग

कैंप कार्यालय के सभागार में बैठक में संबंधित विभागीय अधिकारियों को अवैध कॉलोनी काटने वाले, डूब क्षेत्र में अवैध प्लॉटिंग, अवैध निर्माण करने व लोगों से जमीन लेकर धोखाधड़ी करने वाले भू-माफिया के विरुद्ध प्राथमिकता से कार्रवाई के निर्देश दिए।

इनमें कुलदीप सिंह निवासी ग्राम बिसरख जलालपुर तहसील दादरी, श्यामा चरण मिश्रा निवासी बार्तालो अपार्टमेंट वसुंधरा थाना इंदिरापुरम, मैसेर्स डीपीएल फार्म्स एंड बिल्डर पर कार्रवाई के निर्देश दिए। कहा चिन्हित टॉप 10 भू माफिया जिन पर अभी तक कोई कार्रवाई प्रस्तावित नहीं की गई है। तत्काल सूची उपलब्ध कराएं। उनके खिलाफ कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

बैठक में अनुपस्थित अधिकारियों को नोटिस जारी करने के निर्देश

जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ कैंप कार्यालय के सभागार में समीक्षा बैठक हुई। डीएम ने कहा कि जिन विभागों के आइजीआरएस पोर्टल पर जन सामान्य के शिकायती प्रकरण लंबित हैं। उन्हें तत्काल निस्तारित करें। बताया जो अधिकारी लापरवाही बरतेंगे उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। डीएम ने समीक्षा बैठक में अनुपस्थित अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

राजस्व वसूली का लक्ष्य तय समय में पूरा करें अफसर

राजस्व वसूली को लेकर शनिवार को डीएम मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कैंप कार्यालय सेक्टर 27 नोएडा के सभागार में समीक्षा बैठक हुई। जिलाधिकारी ने संबंधित विभागों से तय लक्ष्य पूरा करने कार्य योजना तैयार कर वसूली सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके अलावा शासकीय अधिवक्ताओं के साथ अभियोजन की बैठक कर आह्वान किया कि पास्को एवं महिला उत्पीड़न से संबंधित प्रकरण को लेकर पीड़ितों को न्याय दिलाने की कार्रवाई करें।

यह भी कहा कि अधिवक्ता अभियोजन कार्य को नियोजित कर संपादित करें। ताकि अधिक से अधिक वादों का निस्तारण सरकार के हित में संभव हो सके। अपर जिलाधिकारी अधिकारी बच्चू सिंह, अपर जिलाधिकारी प्रशासन मंगलेश दुबे, उप जिलाधिकारी जेवर अभय सिंह समेत अन्य रहे।

बाल विवाह प्रथा का पूर्ण उन्मूलन आवश्यक

दीपिका अरोड़ा

समाज सुधारकों के अनथक प्रयासों एवं सरकारों द्वारा व्यापक जन-जागृति फैलाने के बावजूद, हमारे समाज का एक वर्ग आज भी पुरातन कुप्रथाओं से पूर्ण रूपेण मुक्त नहीं हो पाया। इसी कड़ी में शामिल है बाल विवाह प्रथा, जो कानूनन निषेध होने के बावजूद देश के...

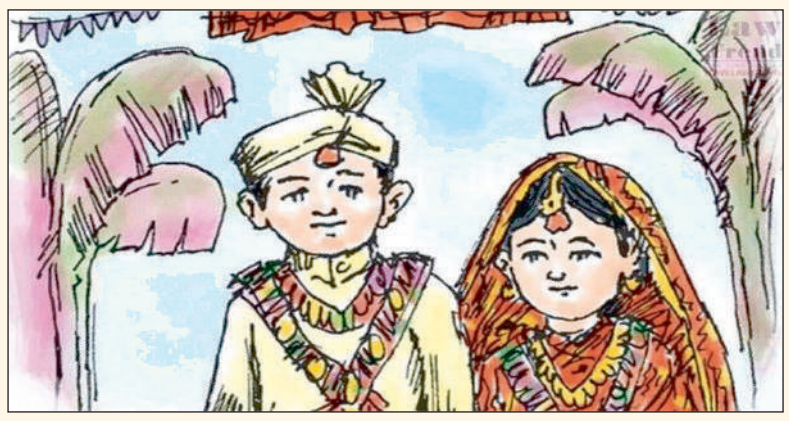

समाज सुधारकों के अनथक प्रयासों एवं सरकारों द्वारा व्यापक जन-जागृति फैलाने के बावजूद, हमारे समाज का एक वर्ग आज भी पुरातन कुप्रथाओं से पूर्ण रूपेण मुक्त नहीं हो पाया। इसी कड़ी में शामिल है बाल विवाह प्रथा, जो कानूनन निषेध होने के बावजूद देश के विभिन्न भागों में विद्यमान है। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एन.सी.पी.सी.आर.) के अनुसार, आज भी देश के लगभग साढ़े 11 लाख बच्चों पर बाल विवाह का संकट मंडरा रहा है। रिपोर्ट के तहत, वर्ष 2022 के दौरान देश में एक हजार से अधिक बाल विवाह के मामले सामने आए। अप्रत्यक्ष प्रकरण जुडने पर संभवतः सूची और लंबी हो जाए!

एक बड़ी जनसंख्या वाले भारत के समक्ष भले ही यह संख्या मामूली प्रतीत हो, किंतु देश के प्रगतिशील बुद्धिजीवियों को अवश्य झकझोरती है। बाल विवाह न केवल देश के सर्वांगीण विकास में एक बड़ा अवरोधक है, बल्कि बच्चों की सुरक्षा, शिक्षा व अधिकार सुनिश्चित कर रहे निकायों के लिए भी महत्वपूर्ण चुनौती है। भारतीय समाज में प्रचलित कुप्रथा के मद्देनजर देखें तो 'बाल विवाह' के विरुद्ध लंबे संघर्ष की एक अलग ही गाथा है। समाज सुधारकों के अतुलनीय योगदान के फलस्वरूप संभव हुई जनजागृति की लहर के प्रसार से जहां स्थिति बेहतर होने की उम्मीद जगी, वहीं कानूनी स्तर पर बाल विवाह प्रतिबंधित घोषित किए जाने से भी सुधार की संभावनाएं प्रबल हुईं।

बाल विवाह पर रोक संबंधी कानून सर्वप्रथम 1929 में पारित हुआ, जिसे 1 अप्रैल, 1930 से देश भर में लागू किया गया। विशेष विवाह अधिनियम, 1954 एवं बाल विवाह निषेध अधिनियम (पी.सी.एम.ए.), 2006 के आधार पर विवाह योग्य न्यूनतम आयु बालिकाओं के लिए 18 वर्ष और बालकों के लिए 21 वर्ष निर्धारित की गई। 1949, 1978 तथा 2006 में समयानुकूल संशोधन होते गए।

बाल विवाह कुप्रथा की भुक्त भोगी बालिकाओं का प्रतिशत 1993 में 49 से घटकर 2021 के दौरान 22 फीसदी तक आना तथा कम वय में बालकों के विवाह का प्रतिशत 2006 के 7 फीसदी से घटकर 2021 में 2 फीसदी पर पहुंचना यद्यपि इस दिशा में किए जा रहे प्रयत्नों के संदर्भ में एक उल्लेखनीय प्रगति है, तथापि वर्ष 2016 से 2021 के मध्य बाल विवाह समाप्ति की ओर उन्मुख प्रयासों में उदासीनता दृष्टिगोचर होना निःसंदेह निराशाजनक है। ताजा आंकड़े स्पष्ट गवाह हैं कि मंजिल फतह करने में अभी कई पड़ाव शेष हैं।

घोर आश्चर्य होता है, जब तुलनात्मक आधार पर साक्षरता का स्तर ऊंचा होने पर भी दक्षिण स्थित कर्नाटक, तमिलनाडु सरीखे राज्यों की गणना बाल विवाह प्रकरणों में शीर्षस्थ 3 राज्यों में की जाए। जहां यह पर्याप्त जन-जागरूकता का अभाव दर्शाता है, वहीं हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्य को लेकर भी प्रश्नचिन्ह अंकित करता है। कम उम्र में बच्चे ब्याहने की सोच के पीछे कारण खंगालें तो इस विषय में सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि अनेक पक्ष उभरकर सामने आते हैं। सामाजिक वातावरण में कलुषित मानसिकता का समावेश होना इनमें प्रमुख कारण है, जोकि पिछड़े इलाके के अभिभावकों पर विशेष प्रभाव डालता है। किशोरावस्था में पथभ्रष्ट होने का भय, दुराचार के अनवरत बढ़ते मामले आदि समाधानिक रूप में उन्हें संतान के शीघ्र विवाह का उपाय ही सुझाते हैं। निर्धनता भी अपने आप में एक बड़ा अभिशाप है, जिसके चलते अतिरिक्त खर्चे से बचने हेतु अभिभावक एक के साथ दूसरे बच्चे की शादी भी तय कर देते हैं, बिना यह विचारे कि उसकी अवस्था क्या है! अनेक मामलों में लड़कियों की आयु लड़कों के मुकाबले काफी कम होती है।

बाल विवाह के समर्थक भले ही कितने भी तर्क क्यों न दें, किंतु अबोध उम्र में विवाह से बच्चों का बचपन तो छिनता ही है, उनके शिक्षा-स्वास्थ्य-सुरक्षा संबंधी अधिकारों का भी हनन होता है। बालिकाओं के मामलों में तो कठिनाइयां और भी अधिक हैं। इससे उनकी शिक्षा, वित्तीय स्वतंत्रता तो प्रभावित होती ही है, स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएं भी अपेक्षाकृत बढ़ जाती हैं। अशिक्षित होने के कारण वे अपने आस-पास घटित हो रही घटनाएं समझने में अक्षम रहती हैं। कच्ची उम्र में मां बनना जहां उनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है, वहीं गर्भस्थ शिशु का विकास भी बाधित करता है। बच्चे कुपोषित पैदा होते हैं अथवा किसी गंभीर बीमारी का शिकार हो जाते हैं। प्रसव के दौरान जच्चा-बच्चा, दोनों की जान पर बराबर खतरा बना रहता है।

बाल विवाह गले की फांस बन जाता है, जब वर अपने रिश्ते के प्रति गैर जिम्मेदाराना रवैया अपनाए रखे अथवा कालान्तर में विवाहिता का परित्याग कर दे। आज भी कोर्ट में अनेकों मामले आते हैं, जिनमें पुरुषों का कहना है कि बचपन में उनसे ब्याही गई लड़की उनकी पसंद अथवा वर्तमान योग्यता के आधार पर खरी नहीं उतरती। वर-वधू की आयु में भारी अंतर होने पर भविष्य में बाल विधवा बनने का दंश भोगने संबंधी आशंकाएं बढ़ जाती हैं, तो कभी बेमेल पुनर्विवाह सारे जीवन को अभिशाप बना छोड़ता है।

स्पष्ट शब्दों में, यह कुप्रथा बाल अधिकारों पर कुठाराघात है। वास्तव में इनकी रक्षा एक नैतिक, कानूनी, पारिवारिक व सामाजिक जिम्मेदारी है। किसी भी स्तर पर इसकी अनदेखी अंततः राष्ट्र के समग्र विकास को प्रभावित करेगी। सर्व शिक्षा अभियान के लक्ष्य को कहीं पीछे धकेलती बाल विवाह प्रथा राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के मार्ग में सबसे बड़ा रोड़ा है। इसे प्रत्येक प्रकार से गंभीरतापूर्वक लेना अनिवार्य है। इस विषय में न तो रिपोर्ट के निष्कर्ष को हल्के में लेना उचित कहा जाएगा और न ही इसके कारणों के निवारण के प्रति उदासीनता दर्शाना ही सही होगा।

न्याय में देरी वास्तव में अमानवीय

भारत की न्यायपालिका ने स्वतंत्रता के पश्चात कई बड़े महत्वपूर्ण संवैधानिक सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और अन्य मसलों पर बड़े खूबसूरत तरीके से अपनी जिम्मेदारियों को सर-अंजाम दिया है। कई ऐतिहासिक फैसले भविष्य के लिए माडल बन गए हैं।

भारत की न्यायपालिका ने स्वतंत्रता के पश्चात कई बड़े महत्वपूर्ण संवैधानिक सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और अन्य मसलों पर बड़े खूबसूरत तरीके से अपनी जिम्मेदारियों को सर-अंजाम दिया है। कई ऐतिहासिक फैसले भविष्य के लिए माडल बन गए हैं। भारत के माननीय न्यायाधीशों के स्वतंत्रतापूर्वक और निष्पक्षता से किए गए फैसलों का विश्व के प्रसिद्ध विधिवेत्ता भी लोहा मानते हैं। परंतु सर्व-अधिकार सम्पन्न होने के बावजूद भारत की जिला अदालतों, हाईकोर्ट्स और सुप्रीम कोर्ट में 2024 मे 5 करोड़ लोगों के मुकद्दमे विचाराधीन हैं। इनमें दीवानी और फौजदारी के मुकद्दमों की भरमार है। 87 प्रतिशत मुकद्दमे जिला अदालतों में सुनवाई के लिए पड़े हैं। जमीनों के 66 प्रतिशत केस हैं। 5 करोड़ मुकद्दमों में से आधे यानी 2 करोड़ 50 लाख प्रादेशिक सरकारों के हैं। 1 करोड़ 80 लाख लोग पिछले 30 वर्षों से न्याय पाने की इंतजार कर रहे हैं और कई लोग अल्लाह मियां को प्यारे हो गए हैं तथा दूसरी पीढ़ी भी उम्रदराज हो गई है। कइयों के कारोबार बुरी तरह चौपट हो गए हैं। वे निराशा, उदासीनता और मायूसी भरा जीवन बसर कर रहे हैं।

2018 की नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, अदालतों में मामलों को जल्दी से जल्दी निपटने में 324 वर्षों से अधिक समय लगेगा। उस समय अदालतों में 2 करोड़ 90 लाख केस विचाराधीन थे। अब 5 करोड़ मुकद्दमों से निपटने के लिए कम से कम 500 वर्ष लगेंगे, जबकि मानव जीवन ही 60 से 70 वर्ष तक है। विश्व के 100 देशों में इतने मुकद्दमे नहीं हैं, जितने केवल भारत में हैं। पांच करोड़ लोग प्रत्यक्ष रूप से और 70 करोड़ लोग अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हैं। यह एक अति गंभीर समस्या है। विलंबित मुकद्दमों के लिए सरकार को जी.डी.पी. का 2 प्रतिशत खर्च करना पड़ता है।

वर्तमान भारतीय न्यायिक व्यवस्था ब्रिटिश हकूमत की ही देन है। न्याय में देरी पर इंगलैंड के तत्कालीन प्रधानमंत्री लार्ड ग्लैडस्टोन ने 16 मार्च, 1868 को संसद में अपने भाषण में कहा था कि 'न्याय में देरी, न्याय देने से ही इन्कार है।' विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार फ्रांसिस बेकन, धार्मिक विचारक विलियम पेन और नस्लीय भेदभाव को जड़ से उखाडने वाले नेता माूटन लूथर और कई अन्य प्रतिष्ठित विधिवेत्ताओं ने भी न्याय देने में देरी को अनुचित ठहराया है। न्याय में देरी अनैतिक, गैर अखलाकी, गैर कानूनी, गैर संवैधानिक और वास्तव में अमानवीय है। भारत की न्यायिक व्यवस्था अति खर्चीली, पेचीदा, अनावश्यक थका देने वाली और हैरतअंगेज रूप से समय और साधन बर्बाद करने वाली है। तारीख पर तारीख की संस्कृति ने याचिकाकत्र्ता को शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक तौर पर भी परेशान कर दिया है। हर तारीख पर न्याय पाने की आशा लेकर लोग कोर्ट जाते हैं, परंतु तारीख लेकर मुंह लटकाए वापिस आ जाते हैं। जब तारीख पर सुनवाई ही नहीं होनी तो फिर तारीख डालना कोई सकारात्मक पहलू नहीं है।

हकीकत में यह ब्रिटिश सरकार का भारतीयों को जानबूझकर परेशान करने का एक तरीका था। स्वतंत्र देश में इस घिसी-पिटी रिवायत से छुटकारा पाना होगा, परन्तु कब, यह भविष्य के गर्भ में ही है। अदालतों में, विशेषकर हाईकोर्ट्स और सुप्रीम कोर्ट में आने जाने पर अत्यधिक खर्च करना पड़ता है। मामूली केसों के लिए भी 10 से 15 वर्ष तक इंतजार करना मानसिक प्रताडना से कम नहीं। हकीकत में यह संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों का हनन है। यह एक बड़ी विडम्बना, त्रासदी और संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है। पिछले कई वर्षों से माननीय न्यायाधीशों और न्याय सुधारवादियों की तरफ से यह मांग की जा रही है कि देश में बढ़ते हुए मुकद्दमे वर्तमान व्यवस्था द्वारा शीघ्रता से निपटाना मुश्किल हो रहा है। सभी अदालतों में न्यायाधीशों की भारी कमी है। गैर न्यायिक कर्मचारियों की कमी से भी न्यायालयों में केस निपटाने में मुश्किल आ रही है।

- :सौजन्य :-
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

फुल चार्जिंग में दिल्ली से मथुरा पहुंचा देगी ये धाकड़ इलेक्ट्रिक बाइक

परिवहन विशेष न्यूज

ओबेन इलेक्ट्रिक ने भारत में अपनी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल रोर ईजेड को लॉन्च कर दिया है। शहर की भागदौड़ के बीच ये इलेक्ट्रिक बाइक आपको जोरदार रेंज देगी, साथ ही साथ इसका ट्रेंडी डिजाइन ग्राहकों की जरूरतों को समझते हुए तैयार किया गया है। रोर ईजेड लिमिटेड समय के लिए ₹89,999 (एक्स-शोरूम) कीमत पर उपलब्ध है जो कि इंट्रोडक्ट्री प्राइज है।

बढ़ते ईंधन के दाम और हाई मेंटेनेंस को ध्यान में रखते हुए क्लच और गियर शिफ्टिंग, हीटिंग जैसी रोजमर्रा की यातायात चुनौतियों से निपटने के लिए रोर ईजेड कम्फर्टेबल हैंडलिंग, अट्रैक्टिव डिजाइन, हाई परफॉर्मेंस को एक ही प्लेटफॉर्म पर लेकर आती है। तीन बैटरी वैरिएंट 2.6 kWh, 3.4 kWh और 4.4 kWh में उपलब्ध हैं। रोर ईजेड एक आसान और आरामदायक सवारी राइड ऑफर करती है जो हर सवार की अलग-अलग तरह की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक बेहतरीन सॉल्यूशन साबित हो सकती है।

रोर ईजेड में ग्राहकों को अत्याधुनिक पेटेंट वाली उच्च-प्रदर्शन वाली एलएफपी बैटरी तकनीक मिल जाती है, जो अपने 50% उच्च तापमान प्रतिरोध, 2X लंबी लाइफ, भारत की विविध जलवायु में असाधारण विश्वसनीयता के लिए प्रसिद्ध है। इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों में एलएफपी रसायन विज्ञान के अग्रणी के रूप में, ओबेन इलेक्ट्रिक जोरदार परफॉर्मेंस के लिए मानक स्थापित करता है। रोर ईजेड के सभी वेरिएंट प्रभावशाली प्रदर्शन करते हैं, 95 किमी/घंटा की टॉप स्पीड तक पहुंचते हैं और केवल 3.3 सेकंड में 0 से 40 किमी/घंटा की गति पकड़ लेते हैं।

52 एनएम के कैटरेग्री में सबसे जोरदार टॉर्क के साथ, रोर EZ एक बेहतरीन इलेक्ट्रिक बाइक है। ये सब खासियतें इसे शहर के यातायात में किसी भी तरह की परेशानी से बचाते हैं और आपको अच्छी 175 किमी (आईडीसी) तक की विस्तारित रेंज के साथ, रोर ईज़ी आसानी से सवारों की शहर की यात्रा आवश्यकताओं को पूरा करता है, जिससे बार-बार चार्जिंग की परेशानी के बिना यात्रा करने की आजादी मिलती है। इसके अलावा रोर ईजेड फास्ट-चार्जिंग क्षमताओं से लैस है, जो इसे केवल 45 मिनट में 80% चार्ज प्राप्त करने की अनुमति देता है।

दिल्ली परिवहन विभाग कब दिल्ली में व्यवसायिक गतिविधि में प्रयोग होने वाले वाहनों को इलैक्ट्रिक में लाने के निर्देश जारी करेगा ?

संजय बाटला

दिल्ली परिवहन विभाग व्यवसायिक गतिविधि में चालित वाहनो को कब से इलेक्ट्रिक श्रेणी के वाहनों से पंजीकरण करने की घोषणा करेगा को लेकर व्यवसायिक गतिविधि में शामिल मालिकों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है।

दिल्ली परिवहन विभाग कई बार यह घोषित कर चुका है की दिल्ली में 2025 तक अधिकतम व्यवसायिक गतिविधि के वाहन इलेक्ट्रिक होंगे पर अभी तक सभी व्यवसायिक गतिविधियों में शामिल वाहनों को सीएनजी से चालित वाहनो से परिवर्तन करने के आदेश जारी कर रहा है।

क्या ?

दिल्ली परिवहन विभाग दुबारा दिल्ली के व्यवसायिक वाहनों के मालिकों को 2010 की तरह डीजल से सीएनजी में परिवर्तन करने जैसी दुविधा और परेशानी के साथ फाइनेंशियल नुकसान पहुंचाने की सोच लेकर बैठा है, क्योंकि जिन वाहन मालिकों ने अभी नए वाहन खरीदकर व्यवसायिक श्रेणी में लगाए है वह वाहन की आयु के अनुसार आने वाले 15 साल तक प्रयोग में आएंगे। ऐसे में किस आधार पर दिल्ली परिवहन विभाग दिल्ली में सभी व्यवसायिक गतिविधियों में प्रयोग/ शामिल वाहनों को इलैक्ट्रिक वाहनों में परिवर्तित होने की बात बोल रहा है एक चिंता का विषय है।

दिल्ली परिवहन विभाग/ दिल्ली सरकार अगर दिल्ली के लिए व्यवसायिक गतिविधि में प्रयोग होने वाले वाहनों को पूर्ण रूप से इलैक्ट्रिक वाहनों में परिवर्तित करने की सोच रखता है तो समयानुसार इसके प्रति घोषणा जारी करे जिससे वाहन मालिकों और दिल्ली की जनता को आने वाले समय में किसी प्रकार की परेशानियों का सामना नहीं करना पड़े।

दिल्ली में 2010 में जब इस प्रकार का आदेश जारी हुआ था तब भी जनता को आवागमन और कार्य क्षेत्र में पहुंचने में बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा था। दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग अगर दिल्ली में फिर से वाहनों के फ्यूल मोड को व्यवसायिक श्रेणी के लिए बदलने का विचार रखता है तो उसकी पूर्ण जानकारी की घोषणा जारी करे।

होंडा और असाही कासेई ने बैटरी सेपरेटर के लिए बनाया संयुक्त उद्यम

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने राष्ट्रीय राजधानी में बढ़ते प्रदूषण पर लगाम लगाने के लिए रविवार, 10 नवंबर को सीईएसएल (कन्वर्जेंस एनर्जी सर्विसेज लिमिटेड) के 'ईवी एज़ ए सर्विस' कार्यक्रम के तहत 'ईवी रैली' को हरी झंडी दिखाई। इस अवसर पर बोलते हुए केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि यह पहल एक नेक काम का हिस्सा है और इससे दिल्ली में प्रदूषण पर लगाम लगाने में मदद मिलेगी।

'ईवी एज़ ए सर्विस' कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा, यह कार्यक्रम एक नेक काम के लिए शुरू किया गया है, जिसकी दिल्ली को बहुत ज़रूरत थी।

आज यहां कार्यक्रम में बोलते हुए केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा, ₹आज 'ईवी एज़ ए सर्विस' कार्यक्रम एक नेक काम के लिए शुरू किया गया है, दिल्ली जैसी जगह को इस तरह की पहल की ज़रूरत थी। पहले चरण में हम सरकारी वाहनों को ईवी बनाएंगे जिसमें सरकारी अधिकारियों के वाहन भी शामिल हैं।₹

केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने दिल्ली के प्रदूषण संकट में योगदान देने वाले बढ़ते कार्बन डाइऑक्साइड स्तरों में औद्योगिक गतिविधियों, निर्माण और परिवहन की भूमिका पर प्रकाश डाला।

उन्होंने पर्यावरण के अनुकूल पहल शुरू करके प्रदूषण से निपटने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया, जिसमें एक स्थायी परिवहन विकल्प के रूप में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना शामिल है।

उन्होंने कहा, "हमने उद्योगों, निर्माण और यहां तक कि परिवहन के माध्यम से कृत्रिम रूप से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ा दी है, जो प्रदूषण के बढ़ने में योगदान दे रहा है, प्रदूषण को कम करने के लिए हम कई तरह की सुविधाएँ लेकर आए हैं और उनमें से एक ई-वाहन है।"

ईवी चार्जिंग स्टेशनों का जाल बिछाने जा रही योगी सरकार

परिवहन विशेष न्यूज

उत्तर प्रदेश सरकार इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए मजबूत चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने की दिशा में बड़ा कदम उठा रही है। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में राज्य में ईवी चार्जिंग स्टेशनों का जाल बिछाने के लिए एक व्यापक योजना बनाई गई है। उत्तर प्रदेश नवीकरणीय और ईवी इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (यूपीआरईवी) के तहत राज्य भर में चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना की जाएगी। यह पहल न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण है, बल्कि राज्य के नागरिकों के लिए रोजगार के नए अवसर भी पैदा करेगी। पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल के तहत इन चार्जिंग स्टेशनों का निर्माण किया जाएगा, जो भविष्य में ईवी को अपनाने को बढ़ावा देगा। योगी सरकार ने ईवी चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने के लिए राज्य के प्रमुख शहरों, राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों, तथा शहरी क्षेत्रों में चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना की योजना बनाई है। इस योजना के तहत, पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मॉडल का इस्तेमाल किया जाएगा ताकि निजी निवेश आकर्षित किया जा सके और स्टेशनों के निर्माण में गति लाई जा सके। इसके साथ ही यूपी सरकार ने अन्य सरकारी विभागों के साथ मिलकर राज्य की भूमि को चार्जिंग स्टेशनों के लिए राइट टू यूज के आधार पर देने की मंजूरी दी है। इससे डिस्कॉम कार्यालयों, सब-स्टेशनों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी चार्जिंग पॉइंट्स स्थापित होंगे। सरकार ने ईवी चार्जिंग की बिजली दरों में भी बदलाव किया है। उत्तर प्रदेश विद्युत नियामक आयोग (यूपीईआरसी) के नए आदेश के तहत, सार्वजनिक चार्जिंग स्टेशनों पर ईवी के लिए टैरिफ को औसत लागत से भी कम रखा गया है। इसका उद्देश्य उपभोक्ताओं को किफायती दरों पर चार्जिंग की सुविधा उपलब्ध कराना है, जिससे ईवी अपनाने में तेजी आएगी। इस पहल से राज्य में ईवी उपयोगकर्ताओं की संख्या में बढ़ोतरी की संभावना है।

ईवी चार्जिंग स्टेशनों के विकास से राज्य में पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होंगे। योगी सरकार का उद्देश्य स्थानीय लोगों, तकनीकी विशेषज्ञों और इंजीनियरों को रोजगार प्रदान करना है। इसके अलावा, यूपीआरईवी के तहत केंद्र सरकार के साथ मिलकर 2000 करोड़ रुपये की सब्सिडी का लाभ उठाने की योजना भी बनाई जा रही है, जिससे और अधिक चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना संभव हो सके।

गाजियाबाद में आराम से दौड़ाइए ईवी, मिलेंगे 20 स्थानों पर ई-चार्जिंग प्वाइंट

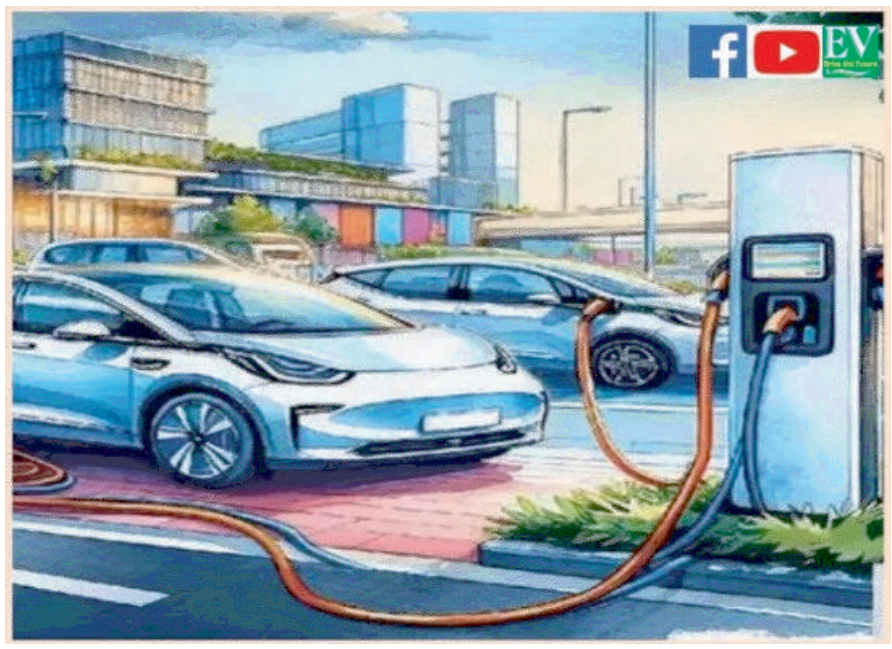

परिवहन विशेष न्यूज

उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में लोगों को अपनी इलेक्ट्रिक गाड़ियों को चार्ज करने के लिए अधिक परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा, इसके लिए नगर निगम ने बड़ा प्लान बनाया है। दावा है कि नए साल पर 20 स्थानों पर ई-चार्जिंग की सुविधा मिलने लगेगी। इसके लिए टेंडर फाइनल कर दिया गया है। आचार संहिता खत्म होते ही इसे जारी किया जाएगा। अधिकारियों का कहना है कि नए साल की शुरुआत में ही लोगों को शहर में 20 स्थानों पर ई-चार्जिंग की सुविधा मिल जाएगी।

नगर निगम के अधिकारियों का कहना है कि एक चार्जिंग स्टेशन के लिए 180 वर्गमीटर जमीन की जरूरत पड़ती है। नगर निगम ने जमीन की तलाश करके उसका टेंडर किया था। कविनगर और सिटी जोन में 8-8 चार्जिंग स्टेशन बनाए जाएंगे, जबकि विजयनगर में तीन, मोहननगर में 5 और वसुंधरा में 4 चार्जिंग स्टेशन बनेंगे। अधिकारियों ने बताया कि चार्जिंग स्टेशन पर वाहनों की चार्जिंग का शुल्क भी न्यूनतम ही रखा जाएगा, ताकि पब्लिक पर इसका अधिक भार न पड़े।

जिले में 15 हजार से अधिक इलेक्ट्रिक वाहन पंजीकृत हैं, लेकिन इन वाहनों को चार्ज करने के लिए पर्याप्त चार्जिंग स्टेशन नहीं हैं, जो चार्जिंग स्टेशन हैं, वहां पर लंबी लाइन लग जाती है। ऐसे में वाहन चालक को परेशानी होती है। शहरी एरिया में बढ़ते हुए इलेक्ट्रिक वाहनों को देखते हुए चार्जिंग स्टेशन बनाने की जरूरत महसूस हुई। इसके बार निगम ने इस दिशा में काम शुरू किया। फिर शासन की तरफ से चार्जिंग स्टेशन बनाने का आदेश जारी किया गया।

दिल्ली मेरठ एक्सप्रेसवे पर चलने वाले लोगों को कोई बार चार्जिंग स्टेशन नहीं मिल पाता है तो वह निगम के वसुंधरा एरिया में बनाए जाने वाले चार्जिंग स्टेशन पर पहुंचकर वाहनों को चार्ज कर सकते हैं। इसके अलावा मेरठ रोड और जीटी रोड पर लंबी दूरी से आने वाले इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए चार्जिंग स्टेशन काफी सहूलियत देंगे। वहीं, दूसरी तरफ शहर में चार्जिंग स्टेशन बन जाने से इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या में भी बढ़ोतरी की संभावना जताई जा रही है।

बनेंगे ईवी चार्जिंग स्टेशन:

कविनगर जोन : गोविंदपुरम, स्वर्णजयंतीपुरम मास्टर प्लान रोड (पांच पॉइंट)
एनएच-58 के पास मेरठ रोड दुहाई (पांच प्वाइंट)
डायमंड रेलवे फ्लाईओवर रोड (पांच प्वाइंट)
विवेकानंद रेलवे ओवरब्रिज (पांच प्वाइंट)
सिटी जोन : रेतमंडी नंदग्राम रोड (पांच प्वाइंट)
राजनगर एक्सटेंशन मेन रोड डीएनएन डीजल पंप के पास (पांच प्वाइंट)
साईं एन्क्लेव पुलिस चौकी हिंडन पेट्रोल पंप के पास (पांच प्वाइंट)
साईं उपवन हिंडन श्मशान पार्किंग (पांच प्वाइंट)
पटेल मार्ग जीटी रोड (पांच प्वाइंट)
बस अड्डे के पास मल्टीलेवल पार्किंग (15 प्वाइंट)
विजयनगर जोन : घोड़े वाले मंदिर के पास (पांच प्वाइंट)
ताज हाइवे (पांच प्वाइंट)
क्रॉसिंग रिपब्लिक में सिया अस्पताल के पास (पांच प्वाइंट)
अकबरपुर बहरामपुर ट्रांसफर स्टेशन के पास (पांच प्वाइंट)
मोहननगर जोन : हिंडन एयरफोर्स स्टेशन के पास (पांच प्वाइंट)
मोहन नगर टी-पॉइंट (पांच प्वाइंट)
अर्थला मेट्रो स्टेशन के पास (पांच प्वाइंट)
राजेंद्र नगर में अग्रवाल स्वीट्स के पास (पांच प्वाइंट)
वसुंधरा जोन : कनावनी पुलिया के पास (पांच प्वाइंट)
सौर ऊर्जा मार्ग पर महक लगन के पास (पांच प्वाइंट)

गाजियाबाद नगर निगम के नगर आयुक्त विक्रमादित्य मलिक ने कहा कि नगर निगम की सीमा में बनने वाले 20 इलेक्ट्रिक वाहनों के चार्जिंग स्टेशन के लिए टेंडर फाइनल कर दिया गया। आचार संहिता के खत्म होते ही इसे जारी किया जाएगा। नए साल की शुरुआत में जिले में 20 स्टेशन पर चार्जिंग की सुविधा शुरू होने की पूरी संभावना है।

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने सीईएसएल के 'ईवी एज ए सर्विस' प्रोग्राम का किया अनावरण

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्र सरकार के विद्युत मंत्रालय के अधीन संचालित एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड (ईईएसएल) की सब्सिडियरी कन्वर्जेंस एनर्जी सर्विसेज लिमिटेड (सीईएसएल) ने आज रविवार, 10 नवंबर को अपने 'ईवी एज ए सर्विस' प्रोग्राम की शुरुआत की। भारत सरकार के केंद्रीय विद्युत और आवास एवं शहरी मामलों के मंत्री मनोहर लाल खट्टर की उपस्थिति में मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में इसका उद्घाटन किया गया। यह प्रोग्राम केंद्र व राज्य सरकारों के मंत्रालयों/विभागों, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (सीपीएसई) और संस्थानों में इलेक्ट्रिक कारों को अपनाने की गति बढ़ाने की दिशा में उल्लेखनीय कदम है।

अगले दो साल में 5,000 ई-कारें चलाने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के साथ सीईएसएल के 'ईवी एज ए सर्विस' प्रोग्राम के माध्यम से सरकारी सेक्टर में ईवी की बढ़ती मांग को पूरा किया जाएगा। सरकारी खरीद के एक लचीले मॉडल को अपनाते हुए इस प्रोग्राम के माध्यम से अलग-अलग बनावट एवं मॉडल की ई-कारों को उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे सरकारी कार्यालयों के लिए परिचालन से जुड़ी अपनी जरूरत के हिसाब से सर्वश्रेष्ठ ई-कारों का चयन कर पाना संभव होगा। यह पहल न केवल पर्यावरण को लेकर सरकार के लक्ष्य का समर्थन करती है, बल्कि 2070 तक नेट जीरो उत्सर्जन के भारत के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को पाने की दिशा में भी सहायक है।

सरकारी कार्यालयों के वाहनों के बेड़े में ईवी की हिस्सेदारी को बढ़ाते हुए सीईएसएल कार्बन उत्सर्जन कम करने, जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता घटाने और भारत की ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दे रही है। उल्लेखनीय है कि सीईएसएल ने अब तक पूरे भारत में करीब 2000 ई-कारें उपलब्ध कराई हैं और करीब 17,000 ई-बसों को उपलब्ध कराने की दिशा में भी काम कर रही है।

लॉन्च कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी देखी गई। इस दौरान एक ईवी प्रदर्शनी का आयोजन हुआ और ईवी रैली भी निकाली गई, जिसमें ई-बाइसिकिल, इलेक्ट्रिक दोपहिया, तिपहिया, चौपहिया, ई-ट्रैक्टर, ई-मोबाइल चार्जिंग वैन, ई-कार्गो पिकअप, ई-बस और ई-ट्रक समेत विभिन्न सेगमेंट के 100 से ज्यादा इलेक्ट्रिक वाहनों ने हिस्सा लिया। इस रैली के माध्यम से वर्तमान समय में भारत में उपलब्ध ई-मोबिलिटी सॉल्यूशन की विविधता सामने आई। इससे हरित एवं पर्यावरण के अनुकूल यातायात के साधनों को बढ़ावा देने की सीईएसएल की प्रतिबद्धता भी दिखती है।

इस अवसर पर मनोहर लाल ने कहा ईवी एज ए सर्विस प्रोग्राम सस्टेनेबल इनोवेशन को लेकर सीईएसएल की प्रतिबद्धता को दिखाता है और यातायात के स्वच्छ साधनों की तत्काल जरूरत को पूरा करने की इसकी क्षमता को प्रदर्शित करता है। मैं न केवल बदलाव का नेतृत्व करने के लिए सीईएसएल की सराहना करता हूं, बल्कि हरित यातायात की दिशा में भारत की यात्रा में एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए भी इसकी प्रशंसा करता हूं। इस तरह की पहल के माध्यम से भारत ऐसे भविष्य की ओर बढ़ेगा, जहां स्वच्छ ऊर्जा विकल्प नहीं, बल्कि एक निश्चित व्यवस्था होगी, जिससे आने वाली पीढ़ियों के जीवन पर स्थायी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

इस दौरान सीईएसएल के एमडी एवं सीईओ विशाल कपूर ने कहा ईवी एज ए सर्विस की लॉन्चिंग हाल ही में शुरू की गई पीएम ई-ड्राइव स्कीम को ध्यान में रखकर की गई है। पीएम ई-ड्राइव स्कीम एक राष्ट्रीय पहल है, जिसका लक्ष्य इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को अपनाने की भारत की गति को तेज करना है। यातायात का भविष्य इलेक्ट्रिक है और सीईएसएल में हम सरकारी वाहनों के बेड़े में ईवी की उपलब्धता को सुगम बनाते हुए बड़े पैमाने पर उत्सर्जन को कम करने और भारत की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर रहे हैं। यह प्रोग्राम मैन्यूफैक्चरर्स और फ्लीट ऑपरेटर्स से लेकर नीति निर्माताओं और यूजर्स तक सभी हितधारकों को साथ लेकर विकास के लिए तत्पर एक साझा इकोसिस्टम बनाता है। सीईएसएल ऊर्जा दक्षता एवं लो-कार्बन इकोनॉमी के लक्ष्य को लेकर प्रतिबद्ध है और हम एक ऐसा इन्फ्रास्ट्रक्चर बनाते हुए इसका नेतृत्व कर रहे हैं, जो पर्यावरण के अनुकूल यातायात के लिए मानक की तरह काम करेगा। कार्यक्रम के दौरान विद्युत मंत्रालय, भारी उद्योग मंत्रालय, राजस्व विभाग, आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय समेत विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों के कई प्रतिष्ठित अधिकारियों ने हिस्सा लिया। इनके अतिरिक्त, कई ई-मोबिलिटी ओईएम, थिंक टैंक और ईवी के प्रति उत्साही लोग भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

श्रीनगर में ई-रिक्शा चालक ने सेवा और उत्पाद की खामियों को लेकर उपभोक्ता फोरम में की याचिका दायर, साथ ही वीडियो मे अपील करता हुआ शिकायतकर्ता इनायत रफीक

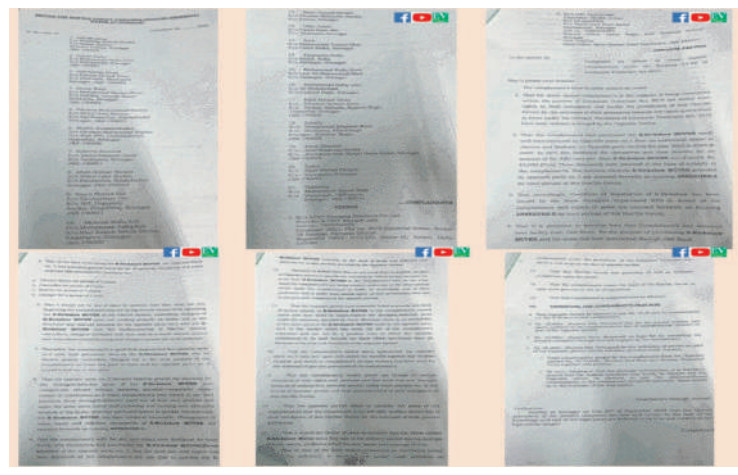

परिवहन विशेष न्यूज

कश्मीर के 21 ई-रिक्शा चालकों ने डीलर डी2डी एंटरप्राइजेज और कंपनी ईएफईवी चार्जिंग सॉल्यूशंस के खिलाफ श्रीनगर के जिला उपभोक्ता फोरम में याचिका दायर की है, जिसमें उन पर बिक्री के बाद आवश्यक सेवाएं प्रदान नहीं करने का आरोप लगाया गया है।

स्थानीय युवाओं ने रोजगार के अवसरों और आय के नए स्रोत के लालच में ई-रिक्शा खरीदने में अपना पैसा लगाया। ई-रिक्शा चालकों का कहना है कि खरीदने के तुरंत बाद ही ई-रिक्शा में दोष दिखाई देने लगे। जब ई-रिक्शा चालकों ने सहायता के लिए डीलर के साथ कंपनी से संपर्क किया, तो उन्हें प्रभावी सहायता नहीं मिली। ई-रिक्शा चालकों का आरोप है कि कंपनी ने उनके साथ धोखाधड़ी की है, जिससे वे ई-रिक्शा खरीदकर आजीविका सुरक्षित करने के प्रयासों के बावजूद गंभीर संकट में फंस गए हैं।

स्थानीय डीलर डी2डी एंटरप्राइजेज ने ईवी ड्राइव द फ्यूचर को टेलीफोन पर बताया कि उन्होंने इस व्यवसाय में बहुत सारे संसाधन लगाए हैं, जिसके कारण उनकी वित्तीय स्थिरता और डीलर की प्रतिष्ठा दोनों दांव पर हैं। ई-रिक्शा चालकों द्वारा किस्तों का भुगतान न करने पर बैंक डीलर के खाते से राशि काट रहा है।

एक चौंकाने वाली नई जानकारी से पता चलता है कि ईएफ ईवी चार्जिंग सॉल्यूशंस डी2डी एंटरप्राइजेज के साथ अनसुलझे मुद्दों को संबोधित किए बिना डीलरशिप के अधिकार किसी और को सौंपने की तैयारी कर रहा है। खराब ई-रिक्शा को ठीक करने के लिए मरम्मत या प्रयासों की कमी ने पीड़ितों द्वारा महसूस किए गए विश्वासघात की भावना को और बढ़ा दिया है। डीलर ने स्वीकार किया कि शिकायतकर्ताओं ने उनसे ई-रिक्शा खरीदा था और कुछ समस्याओं को देखने के बाद इसे सर्विस के लिए लाया था। वारंटी के तहत ई-रिक्शा की मरम्मत मुफ्त में ठीक कराई गई थी।

किताबों से संपर्क करें

विजय गर्ग

कई शताब्दियों के प्रयास के बाद मनुष्य अक्षरों के निर्माण तक पहुँचा। अक्षरों से शब्द बनते हैं, शब्दों से वाक्य बनते हैं और वाक्यों से किताबें और ग्रंथ बनते हैं। शब्दों में बड़ी ताकत होती है. हमारे गुरुओं ने शबद को शबद-गुरु कहा और हमें उनकी महानता का एहसास कराया। कहते हैं कि पत्थर घिस जाते हैं, शब्द नहीं। ऋग्वेद को विश्व का प्रथम धर्मग्रन्थ माना जाता है। ऋग्वेद की रचना 3500 से 4000 वर्ष पूर्व पंजाब में हुई थी। इसका मतलब यह है कि जब पूरी दुनिया के लोग जंगलों और पहाड़ों में जानवर पालते हैंयदि वे इसी तरह का जीवन जी रहे थे तो उस समय यहां के लोग इस शब्द से परिचित हो चुके थे। मनुष्य ने पहले पत्थरों पर लिखना शुरू किया, फिर पत्तों पर। जब उन्हें कपड़ा बुनने का लालच हुआ तो उन्होंने कपड़े पर लिखना शुरू कर दिया। कई सदियों बाद उन्होंने कागज का आविष्कार किया और किताबें अस्तित्व में आईं। शब्दों की शक्ति क्या है? एक कथा है कि एक बार एक राजा किसी विद्वान से बहुत प्रभावित हुआ। उन्होंने कहा कि मुझे कोई ऐसा मंत्र बताइए जो हर संकट में काम आ सके। विद्वान ने राजा से दो महीने बाद उसके पास आने को कहा। जब राज्यजब वह दोबारा गया तो विद्वान ने एक अंगूठी दी और राजा से कहा, "इस अंगूठी के नीचे एक छोटे से कागज के टुकड़े पर कुछ शब्द लिखे हैं, जो संकट के समय आपका मार्गदर्शन करेंगे। याद रखें कि अंगूठी के इस टुकड़े को तभी तोड़ें और पढ़ें जब अन्य सभी तरकीबें विफल हो जाएं, इससे पहले नहीं। समय बीतता गया, कई संकट समस्याएँ आईं और गईं, लेकिन राजा ने अंगूठी की ओर नहीं देखा। फिर एक समय ऐसा आया जब पड़ोसी राजा ने उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया। घमसाणा का युद्ध हुआ। राजा की सेना पड़ोसी सेना से हार गयी। पराजय देखकर राजाअपनी जान बचाने के लिए वह घोड़े पर सवार होकर युद्धभूमि से भाग गये, लेकिन दुश्मन की सेना को इसका पता चल गया। सेना की टुकड़ी राजा का पीछा करने लगी. पहाड़ी क्षेत्र में राजा ने शत्रु सेना से बचते हुए पहाड़ी रास्ता अपना लिया। घूम कर कुछ दूरी पर रास्ता ख़त्म हो गया। आगे गहरी खाई थी. राजा का घोड़ा खाई में गिर गया और गिरने से बच गया। शत्रु सेना वापस आ रही थी। इसी समय राजा को अंगूठी का ख्याल आया। चाकू की नोक से उसने अंगूठी खींच ली। उसने अखबार निकाला और पढ़ा। ऊपर लिखा था, 'यह वक्त भी गुजर जाएगा।'इससे राजा के भीतर एक अनोखी ऊर्जा का संचार हुआ। राजा ने अंगूठी बंद कर दी और उसे अपने बागे की जेब में रख लिया। शत्रु सेना पीछे मुड़ने के बजाय आगे बढ़ गई। राजा की जान बच गयी. कई महीनों की कड़ी मेहनत के बाद उसने एक गुप्त स्थान पर अपनी सेना को संगठित करना शुरू कर दिया। मित्र राजाओं की मदद से उसने एक बड़ी सेना खड़ी की और दुश्मन राजा को युद्ध के मैदान में चुनौती दी, युद्ध जीता और राज्य का अपना हिस्सा वापस हासिल कर लिया। अब भी राजा कभी-कभी 'यह समय बीत जायेगा' ये शब्द पढ़ लेता था। इन शब्दों से उसे एहसास हुआकि अच्छा और बुरा दोनों ही समय हमेशा के लिए नहीं रहता। किसी ने सच ही कहा है कि आप शब्दों से पूरी दुनिया जीत सकते हैं, लेकिन तलवार से नहीं। जो लोग शब्दों के महत्व को समझते हैं वे जीवन भर किताबों से जुड़े रहते हैं। अच्छी किताबें पढ़ने से हमारा व्यक्तित्व निखरने लगता है। किताबों की महानता के बारे में लिखते हुए विद्वान जेम्स रसेल लिखते हैं: किताबें शहद की मक्खियों की तरह होती हैं जो फूलों की कलियों को एक दिमाग से दूसरे दिमाग तक ले जाती हैं। किताबें हमें बीते समय की झलक दिखाती हैंवे ऐसा नहीं करते. सदियों पहले के लोगों से मिलें. विश्व की प्रमुख घटनाओं के दृश्य हमारी आँखों के सामने उपस्थित हो जाते हैं। एक बहुत दिलचस्प अरब कहावत है, ₹एक किताब जेब में रखे बगीचे की तरह होती है।₹ किताबें कई प्रकार की होती हैं, लेकिन मोटे तौर पर किताबें चार प्रकार की होती हैं। उन किताबों में से एक जिन्हें हम खुद भी नहीं पढ़ते और किसी और को मुफ्त में दे देते हैं। दूसरे वे हैं जिन्हें हम खुद पढ़ते हैं और जानने वालों को यह कहकर रोक देते हैं कि यह समय की बर्बादी है, इसलिए ऐसा न करें।पढ़ कर सुनाएं। तीसरी को हम बड़े चाव से पढ़ते हैं और दूसरे दोस्तों को भी पढ़ने की सलाह देते हैं। चौथे प्रकार की वे पुस्तकें हैं जिन्हें जब हम पढ़ते हैं तो हमें यह डर लगता है कि कहीं वह पुस्तक जल्दी समाप्त न हो जाए। चौथे प्रकार की पुस्तकें वे हैं जो हम किसी को नहीं देते। अगर कोई इसे मांग भी ले तो हमें तब तक चैन नहीं मिलेगा जब तक हम इसे दोबारा खरीदकर अपनी लाइब्रेरी में नहीं रख लेते। पंजाब उन महापुरुषों की भूमि है जिन्होंने अपनी बुद्धि से पूरी दुनिया को प्रभावित कियाइसे करें गुरु नानक देव जी से लेकर गुरु गोबिंद सिंह जी तक, हमारे दस गुरु इस धरती पर रहे और अपनी विचारधारा से समाज को एक महान उपहार दिया। उन्होंने जो कहा वह सिर्फ कहा नहीं बल्कि करके दिखाया। गुरु अर्जन देव जी ने आदि ग्रंथ की स्थापना की। गुरु गोबिंद सिंह ने गुरु ग्रंथ साहिब को शबद को गुरु का दर्जा दिया और वे भी शबद गुरु के सामने झुक गए। भगत पूरन सिंह ने मानवता की सेवा करके देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में एक मिसाल कायम की। भगत जी किताबें पढ़ते थेवे इसे अपनी वाचा मानते थे।

शब्दों की ताकत को भलीभांति जानते थे. वे स्वयं एक अच्छे लेखक थे। इंग्लैण्ड और फ्रांस जैसे देशों में किताबें पढ़ने का रिवाज हमसे भी ज़्यादा था और आज भी है। कई देशों में, यदि एक बस में पचास यात्री यात्रा कर रहे थे, तो उनमें से चालीस कोई किताब या पत्रिका पढ़ रहे थे। किसी भी समाज को बेहतर बनाने में किताबें सबसे बड़ी भूमिका निभाती हैं। आज अगर हमारी युवा पीढ़ी दूसरे देशों में अपना भविष्य तलाश रही है तो उसमें कहीं न कहीं किताबें ही हैंयह भी एक बड़ी भूमिका है. हम अब उस दौर में प्रवेश कर चुके हैं, जहां न सिर्फ अनपढ़ बल्कि पढ़े-लिखे लोग भी चीजों को पढ़ने की बजाय देखने लगे हैं। अब हम खबरें पढ़ते कम हैं और सुनते ज्यादा हैं। पढ़ने की प्रवृत्ति घट रही है. इंटरनेट पर ई-बुक्स का चलन बढ़ता जा रहा है। हम किताबों से कुछ हद तक दूर हो गए हैं. इन सबके बावजूद किताबों की प्रासंगिकता बनी रहेगी। इसका कारण यह है कि इंटरनेट पर किताब पढ़ते समय कॉल, मैसेज, विज्ञापन बार-बार हमारी एकाग्रता को बाधित करते रहते हैं। स्क्रीन की रोशनी भी हमारी हैआँखों पर असर पड़ता है, आँखें थक जाती हैं। इसलिए, किताब पढ़ने के लिए जिस एकाग्रता की जरूरत होती है, वह इंटरनेट पर नहीं बन पाती। किताबें पढ़ने के लिए हमें घर में ही किताबें पढ़ने के लिए एक पुस्तकालय बनाना चाहिए और अपने पढ़ने के लिए एक समय और स्थान निर्धारित करना चाहिए। हर दिन किसी किताब के दस से बारह पन्ने पढ़ने से हम अपने अंदर बदलाव महसूस कर सकते हैं। इसलिए हमें पढ़ने के लिए आधा घंटा या एक घंटा आरक्षित रखना चाहिए। हम पूरे दिन मोबाइल स्क्रीन पर उंगलियां थपथपाकर अपना काफी समय बर्बाद करते हैंहमने दिया डेटा के रूप में बहुत सारा कबाड़ हम अपने दिमाग में भर रहे हैं। यह हमें बौद्धिक रूप से बौना बना रहा है। हमें अपने सोचने के तरीके को वैज्ञानिक बनाने के लिए अच्छी किताबें पढ़नी चाहिए। एक बार केरल जाने का मौका मिला. हमने वहां किताबें लटकी हुई देखीं. बस में यात्रा करते समय एक 55-60 वर्ष की महिला किताबें बेचने के लिए बस में चढ़ी। उनके पास नागा रासी वाली किताबें नहीं, बल्कि विश्व प्रसिद्ध लेखकों की विश्व प्रसिद्ध किताबें थीं।

यहां हम किराना औरमुन्यारी की दुकानों के बाहर किताबें और पत्रिकाएँ भुजिया के पैकेट की तरह लटकी हुई दिखाई देती थीं। इधर हमारे पंजाबी समाज में पढ़ने के प्रति रुचि कम होती जा रही है। टीवी इसके कई कारण हैं जैसे चैनलों पर अंधविश्वासी कार्यक्रमों का प्रसारण, मोबाइल इंटरनेट और मशीनीकृत संस्कृति का विकास। पढ़े-लिखे होने के बावजूद अधिकांश पंजाबी किताबें पढ़ना तो दूर अखबार तक नहीं पढ़ते। हमारे लोग मोबाइल फोन पर धुन बजाकर या किसी से व्यर्थ बातें करके दस-पंद्रह रुपये बर्बाद कर देंगे, लेकिन दो-तीन रुपये का अखबार खरीदना फिजूलखर्ची है।वो समझ गए धनवान लोग अपने घरों में पूजा कक्ष तो बना लेते हैं, परंतु उनके घरों में पुस्तकों के लिए कोई स्थान नहीं होता। हमारे लोग तब भी पैसा निवेश करने के लिए तैयार रहते हैं जब उनके लिए सार्वजनिक प्रदर्शन, लोक अनुष्ठान, शादियाँ करना, भारी कर्ज लेना और पैसा निवेश करना, महंगे घर बनाना और महंगी कारें खरीदना अधिक कठिन हो जाता है। ऐसे और भी कई काम करने में हम भारत में नंबर वन हैं, लेकिन किताबों के लिए ज्यादातर लोगों का बजट जीरो फीसदी है। तथाकथित साधु, डेरे, ज्योतिषी, वास्तुशास्त्रियों का व्यवसाय भी भारत के अन्य राज्यों की तुलना में पंजाब में अधिक चमक रहा है। दूसरे राज्यों खासकर बंगाल से तथाकथित काली विद्या के विशेषज्ञ यहां आकर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। पंजाबी लोग अपनी लूट प्राप्त कर उन्हें समृद्ध कर रहे हैं। हमारे साथ हर तरह की चीजें हर दिन बढ़ती जा रही हैं, लेकिन बौद्धिक रूप से हम गरीब होते जा रहे हैं।

जहाँ पुस्तकों का अपमान होगा वहाँ मानवता का भी अपमान होगा। बेशक किताबें कम पढ़ी जा रही हैं, लेकिन इसके बावजूद पहले की तुलना में किताबें ज्यादा हैंलेटे हैं # झूठ बोल रहे हैं एक किताबी कीड़ा है. वहां भीड़ है कुछ लोग जो किताबें पढ़ने की जहमत उठाते हैं, उनके लिए किताबें चुनना बहुत मुश्किल हो जाता है। प्रति सप्ताह सैकड़ों पुस्तकों का छपना यह दर्शाता है कि अधिकांश पुस्तकें केवल अपने अहंकार को पोषित करने के लिए प्रकाशित की जाती हैं। इसके बाद उन्हें रिहा कर, उनके बारे में अफवाहें फैलाकर मन को ठंडा करने की कोशिश की जाती है। आयोजनों के बाद इनका वितरण किया जाता है। ऐसी कई किताबें हैं जो नए पाठकों को दूसरी किताबें पढ़ने से हतोत्साहित करती हैंवे रोकते हैं # वे रुकते हैं यहां पाठक को निराश नहीं होना चाहिए बल्कि अच्छी किताबें ढूंढने और पढ़ने का प्रयास करना चाहिए। साहित्य सभाओं और पुस्तक मेलों में जाएँ। धीरे-धीरे वह बहुमूल्य पुस्तकों में पारंगत हो जायेगा। गुरबानी का पाठ करने के बाद जब हम प्रार्थना करते हैं तो बाबाइक दान मांगते हैं, जिसका अर्थ है कि हमारी सोचने-समझने की शक्ति बढ़ती है। लेकिन इसके लिए हम खुद बहुत कम प्रयास करते हैं. अच्छे अखबार, अच्छी किताबें इसमें हमारी सबसे ज्यादा मदद कर सकती हैं। इसके अलावा अच्छे विचार रखेंलेखकों, लेखकों, विद्वानों, विचारकों को स्कूलों और कॉलेजों में सेमिनार आयोजित करने चाहिए। हम अपनी सोच विकसित करके और अपने इतिहास और विरासत के महान लोगों के मूल्यों को अपनाकर बौद्धिक रूप से आगे बढ़ सकते हैं। चीनी लोग कहते हैं कि 'किताब में सोने का घर होता है।' इसी तरह, आइसलैंड में एक कहावत है कि 'किताब के बिना रहना बेहतर है।' हंगेरियाई लोग कहते हैं कि पुस्तक मूक गुरु होती है।

संपादक की कलम से

डिजिटल अरेस्ट और "साइबर सुरक्षा"

आज के डिजिटल युग में ₹डिजिटल अरेस्ट ₹ और ₹साइबर सुरक्षा₹ का गहरा संबंध है। आइए इन शर्तों को तोड़ें और वे कैसे जुड़ते हैं।

डिजिटल अरेस्ट

डिजिटल अरेस्ट से तात्पर्य साइबर अपराधियों को पकड़ने या कानूनों का उल्लंघन करने वाली साइबर गतिविधियों को रोकने के लिए की गई कार्रवाई से है। इसमें ऐसे उपाय शामिल हो सकते हैं:

1. पहचान और कब्जाः हैकिंग, धोखाधड़ी, पहचान की चोरी आदि जैसी अवैध गतिविधियों में संलग्न साइबर अपराधियों की पहचान करने और उन्हें गिरफ्तार करने के लिए डिजिटल फ़ुटप्रिंट का उपयोग करना।

2. फोरेंसिक जांचः आपराधिक गतिविधियों को स्थापित करने और उन्हें व्यक्तियों से जोड़ने के लिए लॉग और आईपी पते जैसे डिजिटल साक्ष्य का विश्लेषण करना।

3. डिजिटल संपत्तियों को फ्रीज करनाः अवैध लेनदेन में उपयोग की जाने वाली डिजिटल संपत्तियों (जैसे क्रिप्टोकरेंसी) तक पहुंच को जब्त करना या अवरुद्ध करना।

4. सभी न्यायक्षेत्रों में सहयोगः साइबर अपराध अक्सर सीमाओं को पार कर जाता है, इसलिए डिजिटल गिरफ्तारी के लिए अक्सर विश्व स्तर पर विभिन्न कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच समन्वय की आवश्यकता होती है।

साइबर सुरक्षा

साइबर सुरक्षा में डिजिटल सिस्टम, नेटवर्क और डेटा को हमलों, क्षति या अनधिकृत पहुंच से बचाने के लिए डिज़ाइन की गई प्रथाओं, उपकरणों और प्रोटोकॉल को शामिल किया गया है। साइबर सुरक्षा के मुख्य घटकों में शामिल हैं:

1. सुरक्षाः अनधिकृत पहुंच को रोकने के लिए फ़ायरवॉल, एनक्रिप्शन और सुरक्षित सॉफ़्टवेयर का उपयोग करना।

2. पता लगानाः संदिग्ध गतिविधि का पता लगाने के लिए निगरानी प्रणाली जो सुरक्षा उल्लंघन का संकेत दे सकती है।

3. प्रतिक्रिया और पुनर्प्राप्तिः साइबर घटनाओं पर प्रतिक्रिया देने और डेटा पुनर्प्राप्त करने के लिए प्रोटोकॉल होना।

4. शिक्षा और जागरूकताः फ़िशिंग या सोशल इंजीनियरिंग हमलों जैसे जोखिमों को कम करने के लिए व्यक्तियों और संगठनों को सुरक्षित प्रथाओं पर प्रशिक्षण देना।

वे कैसे जुड़ते हैं

साइबर अपराध से निपटने के लिए कानून और सुरक्षा प्रोटोकॉल लागू करते समय डिजिटल गिरफ्तारियां और साइबर सुरक्षा एक-दूसरे से जुड़ जाती हैं। उदाहरण के लिए:

साइबर सुरक्षा उपकरण उल्लंघनों का पता लगा सकते हैं, जिससे हमलावरों की पहचान हो सकती है।

डिजिटल फोरेंसिक, साइबर सुरक्षा का एक क्षेत्र, डिजिटल गिरफ्तारियों की ओर ले जाने वाले कानूनी मामलों के लिए सबूत इकट्ठा करता है।

साइबर सुरक्षा कानून परिभाषित करते हैं कि अवैध डिजिटल गतिविधि क्या है, जिससे कानून प्रवर्तन एजेंसियों को अपराधियों पर मुकदमा चलाने में मदद मिलती है।

साथ मिलकर, इन क्षेत्रों का लक्ष्य साइबर अपराध को रोककर और उपयोगकर्ताओं और संगठनों को डिजिटल खतरों से बचाकर एक सुरक्षित डिजिटल परिदृश्य बनाना है।

राय

घोंसलों का वास्तु और विज्ञान !

बच्चो, जाड़ा, गर्मी, बरसात से बचने के लिए तुम्हारे पास एक घर है। ठीक वैसे ही पक्षी भी अपने बच्चों (चूजों) को सुरक्षित स्थान

देने के लिए घोंसला बनाते हैं। अंडा देने से लेकर चूजों के उड़ने लायक बनने तक वह उन्हें यहीं रखती है। घोंसले चूजों को शिकारियों से तो बचाते ही हैं, साथ में प्रकृति की मार से बचाने के लिए भी अनुकूल वातावरण देते हैं। घास और मिट्टी के बने इन घोंसलों के निर्माण में वास्तु और विज्ञान के नियमों का भी ध्यान रखा जाता है।

■ वातानुकूलित तापमान

पक्षियों में वातावरण अनुकूलन की गजब की क्षमता होती है। इनकी कुछ प्रजातियों के अंडों और चूजों को एक खास तापमान की जरूरत होती है। ऐसे में ये घोंसला बनाने में उसी तरह की सामग्री का चयन करते हैं, जो मौसम के अनुकूल तापमान को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। ठंडी जलवायु में वे गर्म और गरम जलवायु में ठंडी हवा का प्रवाह बनाए रखने वाली सामग्री चुनते हैं। कुछ पक्षी प्लास्टिक और तार जैसी मानव निर्मित सामग्री का भी उपयोग करते हैं, जिससे परजीवियों को दूर रखने में मदद मिलती है।

खास रंग और आकार

शिकारियों से बचने के लिए पक्षी अपने घोंसलों के लिए खास आकार और रंग की सामग्री का चयन करते हैं। जैसे, प्लोवर पक्षी जमीन पर घोंसला बनाने के लिए कंकड़ और प्राकृतिक मलबे का उपयोग करते हैं, जिससे वे ऊपर से लगभग अदृश्य होते हैं। इससे शिकारियों के हमले का खतरा भी कम हो जाता है। पेड़ों पर घोंसला बनाने वाले पक्षी अंडे चुराने वाले जानवरों को रोकने के लिए ऊंची शाखाओं पर घोंसले बनाते हैं।

■ कमाल की इंजीनियरिंग बुनकर पक्षी हवा के दबाव को झेलने के लिए जटिल और लटकते हुए घोंसले बनाते हैं। इसी तरह स्वैलोज और स्विफ्ट पक्षी घोंसले बनाने के लिए इस तरह की मिट्टी का उपयोग करते हैं कि इनके घोंसले कप के आकार में दीवार या चट्टान पर चिपक जाते हैं।

■ सभी पक्षी नहीं बनाते घाँसला समुद्री और तटीय पक्षी घोंसला नहीं बनाते हैं। ये रेत या पत्थर पर अपने अंडे देते हैं। ब्राउन-हेडेड काउबर्ड जैसे पक्षी दूसरे पक्षियों के घोंसलों में अंडे देते हैं। यहां तक की इनके बच्चों की देखभाल भी घोंसले का मालिक पक्षी ही करता है। कैसे सीखते हैं यह कला पक्षियों में घोंसला बनाने का हुनर प्रकृति से मिला एक उपहार है, लेकिन जटिल घोंसला बनाने वाले पक्षी समय के साथ इस हुनर को तराशते जाते हैं। ज्यादातर पक्षी हर साल नया घोंसला बनाते हैं। सर्दियों में इनके घोंसले क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। हालांकि, बाल्ड ईगल या ऑस्प्रे जैसे बड़े शिकारी पक्षी लंबे समय तक एक ही घोंसले का प्रयोग करते हैं और पिछले साल के घोंसले की मरम्मत करते हैं। सभी पक्षियों के घोंसलों में अंतर होता है। ऐसे में घोंसलों के आधार पर ज्यादातर पक्षियों को पहचाना जा सकता है।

नीट युजी 2025 के लिए स्कूल, कोचिंग और तैयारी के बीच

नीट युजी 2025: कोचिंग, स्कूल और नीट युजी की तैयारी में संतुलन बनाना आसान नहीं है, लेकिन स्मार्ट टाइम मैनेजमेंट से आप तीनों में सफल हो सकते हैं। अपने काम के लिए प्राथमिकताएँ निर्धारित करें, निर्धारित समय सारिणी का पालन करें, कोचिंग सत्रों का अच्छा उपयोग करें और स्वस्थ दिनचर्या अपनाएँ। एनईईटी यूजी तैयारीः यदि आपके पास अच्छा समय प्रबंधन कौशल है तो आप बिना थके इन तीन क्षेत्रों में संतुलन बना सकते हैं नीट युजी 2025: कोचिंग, स्कूल और नीट युजी की तैयारी का प्रबंधन करना असंभव लग सकता है, लेकिन सावधानीपूर्वक समय प्रबंधन के साथ यह संभव है। भारत में सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक नीट युजी है, जिसके लिए प्रतिबद्धता और दृढ़ता की आवश्यकता होती है। कोचिंग सत्र और स्कूल पाठ्यक्रम के साथ बने रहने से चुनौती और भी बढ़ जाती है। यदि आपके पास अच्छा समय प्रबंधन कौशल है तो आप बिना थके इन तीन क्षेत्रों में संतुलन बना सकते हैं। अपना कैलेंडर सेट करने, उसका अधिकतम लाभ उठाने और अध्ययन-जीवन में अच्छा संतुलन बनाए रखने के लिए यहां कुछ युक्तियां दी गई हैं। 1. कार्य प्राथमिकताएँ बनाएँ संक्षिप्त लेख सम्मिलित करें प्राथमिकताएँ निर्धारित करना कुशल समय प्रबंधन की दिशा में पहला कदम है। प्रत्येक कार्य के महत्व को पहचानें, चाहे वह नीट यूजी की तैयारी हो, प्रशिक्षण कार्य हो या शिक्षक हों। कार्यों को उनके महत्व, कठिनाई और समय सीमा के अनुसार पदानुक्रम में क्रमबद्ध करें। उदाहरण के लिए, नीट युजी पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि यह आपका अंतिम उद्देश्य है। हालाँकि, स्कूलवर्क को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यह आवश्यक विषयों को सुदृढ़ करने में मदद करता है जो नीट युजी पाठ्यक्रम में भी शामिल हो सकते हैं। 80/20 नियम का उपयोग करें: 20 प्रतिशत असाइनमेंट पर ध्यान केंद्रित करें जो 80 प्रतिशत परिणाम प्रदान करते हैं। ये नीट युजी के लिए जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान और भौतिकी जैसे बुनियादी पाठ्यक्रम हो सकते हैं। 2. एक सुव्यवस्थित समय सारिणी बनाना एक अच्छी तरह से परिभाषित कार्यक्रम आवश्यक है। सबसे पहले, यह पता लगाएं कि एक दिन में कितने घंटे होते हैं। कोचिंग, शिक्षा और एनईईटी की तैयारी के लिए विशिष्ट समय निर्धारित करें। ध्यान रखें कि गुणवत्ता मात्रा से पहले आती है, इसलिए ओवरबुकिंग न करें। मुख्य बात यह है कि आपने प्रत्येक कार्य के लिए जो समय निर्धारित किया है, उस दौरान जितना संभव हो उतना ध्यान केंद्रित करें। एक प्रभावी कार्यक्रम विकसित करने के चरणः अलग समय निर्धारित करें: प्रत्येक दिन स्व-अध्ययन, कोचिंग, स्कूल और विश्राम के लिए समय निर्धारित करें। कोई व्यक्ति सुबह का समय पढ़ाई के लिए, दोपहर का समय ट्यूशन के लिए और शाम का समय एनईईटी की तैयारी के लिए निर्धारित कर सकता है। ब्रेक शामिल करें: अध्ययन सत्रों के दौरान संक्षिप्त लेकिन नियमित विराम लेने से एकाग्रता और आउटपुट में सुधार हो सकता है। पोमोडोरो विधि जैसी रणनीतियों का उपयोग करें, जिसमें आपको 25 मिनट तक अध्ययन करना होता है और फिर पांच मिनट का ब्रेक लेना होता है। साप्ताहिक पुनरीक्षण योजनाएँ बनाएँ: संपादन के लिए सप्ताहांत पर समय अलग रखें। शाम को नीट युजी सामग्री और दिन के दौरान स्कूल सामग्री की समीक्षा करें। 3. नीट युजी कोचिंग का उपयोग करें नीट युजी की तैयारी में कोचिंग से काफी मदद मिलती है, जो व्यवस्थित निर्देश और दिशा प्रदान करती है।

कोचिंग को एक केंद्रित अध्ययन सत्र की तरह अपनाकर इसका लाभ उठाएं। अपने स्कूल और एनईईटी यूजी तैयारी के बीच वैचारिक संरेखण बनाए रखें। यदि आपके कोचिंग कार्यक्रम और स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल विषय संरेखित हों तो अवधारणा पुनरीक्षण में कम समय लगता है। नीट युजी की तैयारी में मदद के लिए कोचिंग असाइनमेंट और होमवर्क का उपयोग करें। कोचिंग कक्षाओं से प्रश्नों का अभ्यास करें: कोचिंग संस्थानों द्वारा अक्सर बहुत सारे एनईईटी यूजी-स्तरीय प्रश्न और मॉक परीक्षाएँ पेश की जाती हैं। महत्वपूर्ण विषयों की अपनी समझ को बेहतर बनाने के लिए उनका उपयोग करें। कोचिंग सत्र के दौरान, अपने किसी भी संदेह का समाधान करें। ऐसा न करेंबाद में प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रतीक्षा करें; भ्रम से बचने के लिए तुरंत प्रश्न पूछें। व्यावहारिक अध्ययन के तरीके प्रभावशीलता के मामले में प्रत्येक अध्ययन घंटा एक जैसा नहीं होता है। ऐसी रणनीतियाँ अपनाएँ जो समझ और धारण में सुधार लाएँ। यहां कई तकनीकें हैं: सक्रिय स्मरणः निष्क्रिय रूप से पढ़ने के बजाय, आपके द्वारा अध्ययन किए गए विचारों को सक्रिय रूप से याद रखने का लक्ष्य निर्धारित करें। इससे समझ और याददाश्त में सुधार होता है। अंतराल पर दोहरावः इस तकनीक में समान विषयों को उत्तरोत्तर लंबे अंतराल पर दोहराना शामिल है। मॉक परीक्षाओं का अभ्यास करें: परीक्षा पैटर्न सीखने, अपना समय मापने और अपने कमजोर बिंदुओं को पहचानने का सबसे अच्छा तरीका लगातार नीट युजी मॉक टेस्ट का अभ्यास करना है। एनईईटी यूजी परीक्षा परिदृश्य का अनुकरण करने से बेहतर तैयारी आती है। 5. कल्याण और स्वास्थ्य स्कूल, कोचिंग और एनईईटी यूजी की तैयारी को संतुलित करने के लिए आवश्यक ऊर्जा की आपूर्ति के लिए उत्कृष्ट स्वास्थ्य बनाए रखना आवश्यक है। छात्र अक्सर अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि पढ़ाई में बिताया गया हर घंटा बर्बाद हो जाता है। फिर भी, अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने से एकाग्रता और उत्पादकता में सुधार होता है। अच्छे से आराम करें: आपके मस्तिष्क को ठीक से काम करने के लिए कम से कम 7-8 घंटे की नींद की जरूरत होती है। अपर्याप्त नींद का असर याददाश्त और फोकस पर पड़ता है। जारी रखें: योग या पैदल चलने जैसे सरल व्यायाम करने से आपको अधिक आराम महसूस करने, बेहतर परिसंचरण और स्पष्ट सोच प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

स्वस्थ भोजन करें: जंक फूड से दूर रहें और प्रोटीन, विटामिन और खनिजों से भरपूर आहार लें। मेवे, फल और हरी सब्जियाँ ऐसे खाद्य पदार्थ हैं जो संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करते हैं। 6. लगातार बने रहें अपने समय का अच्छे से प्रबंधन करना एक यात्रा है, कोई दौड़ नहीं। अपने शेड्यूल में निरंतरता बनाए रखें और परीक्षाओं से ठीक पहले पढ़ाई करने से बचें। अनुशासित रहें, लेकिन आवश्यकतानुसार अपनी योजनाओं को बदलने के लिए पर्याप्त रूप से अनुकूलनशील भी रहें। 7. एक साथ कई काम करने की कोशिश न करें एक साथ कई काम करने से मानसिक थकावट और उत्पादकता में कमी आ सकती है। एक समय में एक ही काम पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करें। आपके पास जो कुछ भी है उसे दें, चाहे वह नीट युजी प्रश्नों का उत्तर देना हो, कोचिंग सत्र में जाना हो या स्कूल का काम पूरा करना हो। कोचिंग, स्कूल और नीट यूजी की तैयारी में संतुलन बनाना आसान नहीं है, लेकिन स्मार्ट समय प्रबंधन से आप तीनों में सफल हो सकते हैं। अपने काम के लिए प्राथमिकताएँ निर्धारित करें, निर्धारित समय सारिणी का पालन करें, कोचिंग सत्रों का अच्छा उपयोग करें और स्वस्थ दिनचर्या अपनाएँ। याद रखें कि सफलता का रहस्य दृढ़ता और सूक्ष्म अध्ययन तकनीकें हैं।

नदियों की सेहत और अदालतों के निर्देश

नेचर में प्रकाशित रिपोर्ट में वैश्विक स्तर पर 50000 से अधिक नगरपालिकाओं में प्लास्टिक कचरे पर नजर रखने के लिए उन्नत एआई मॉडल का इस्तेमाल किया गया। प्रकृति का सबसे बड़ा खजाना नदियों को शुद्ध रखने के प्रयासों की कमजोर हालत के कारण वे दिन दूर नहीं, जब देश में जल संकट और गहरा होगा

हिंदू शास्त्रों में गंगा और यमुना नदी का धार्मिक महत्व बताया गया है। इन नदियों की उपयोगिता के कारण इन्हें जीवनदायिनी कहा गया है। वर्तमान में हालत यह है कि ये जीवनदायिनी खुद जीवन के लिए तरस रही हैं। देश में अन्य समस्याओं की तरह इन नदियों के की बर्बादी के लिए भी राजनीति जिम्मेदार है। नदियों के प्रदूषण का मुद्दा राजनीतिक दलों को वोट नहीं दिला सकता, इसलिए इनकी सेहत लगातार बिगड़ती जा रही है। सत्तारूढ़ दलों की प्राथमिकता में नदियों की पवित्रता बरकरार रखना नहीं रह गया है। इन नदियों की हालत नालों जैसी बन चुकी है। भ्रष्टाचार और वोट बैंक की राजनीति के कारण इस हालत से निपटने के लिए सरकारी प्रयास विफल साबित हुए हैं। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण, हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के दखल के बावजूद नदियों में अपेक्षित सुधार नहीं हो पा रहा है। अदालतों ने नदियों में प्रदूषण के लिए कई बार भारी जुर्माना लगाया है। चूंकि जुर्माना नेता-अफसरों की जेब से नहीं जाता, इसलिए उसका ऊंट के मुंह में जीरे जितना ही असर हुआ है। सुप्रीम कोर्ट ने यमुना नदी को अनुपचारित अवशिष्ट से प्रदूषित करने के लिए आगरा नगर निगम को 58.39 करोड़ रुपए पर्यावरणीय मुआवजा देने का आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने नगर निगम के सारे दावों की पोल खोल कर रख दी और यमुना नदी में बढ़ते प्रदूषण स्तर को लेकर नगर निगम को फटकार लगाई। इस तरह के मामले में इससे पहले राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (एनजीटी) ने भी नगर निगम के खिलाफ अप्रैल में आदेश दिया था। यह पहला मौका नहीं है कि जब एनजीटी या अदालत ने नदियों के प्रदूषण के लिए सरकारी एजेंसियों पर जुर्माना लगाया हो, इससे पहले भी ऐसे कदम उठाए जा चुके हैं, किन्तु शासन-प्रशासन की मिलीभगत से नदियों में प्रदूषण का स्तर बढ़ता ही जा रहा है।

हालात यह हो गए हैं कि नदियों का जल पीने लायक तो दूर, आचमन करने लायक भी नहीं रह गया है। दिल्ली में बहने वाली यमुना नदी कभी धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण थी। अब प्रदूषण के कहर से जूझ रही है। आंकड़े बताते हैं कि यमुना का प्रदूषण स्तर खतरनाक स्तर तक पहुंच चुका है। छठ जैसे पर्व पर महिलाओं को इस नदी पर स्नान करने से रोक लगाई गई। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार यमुना में खतरनाक बैक्टीरिया और प्रदूषकों का स्तर मानक सीमा से कई गुना अधिक पाया गया है। दिल्ली में यमुना के प्रमुख हिस्सों में पानी की गुणवत्ता, बीओडी (बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड) और अन्य प्रदूषक तत्वों के कारण न केवल पीने के योग्य नहीं है। यमुना में प्रतिदिन लगभग 3000 मिलियन गैलन से अधिक सीवेज प्रवाहित होता है। यह बिना किसी सफाई प्रक्रिया के सीधे नदी में जा रहा है। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण ने नोएडा विकास प्राधिकरण पर 100 करोड़, यानी एक अरब रुपए और दिल्ली जल बोर्ड पर 50 करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया था। इसी तरह बिहार सरकार में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने सॉलिड और लिक्विड वेस्ट का वैज्ञानिक तरीके से निपटारा नहीं कर पाने को लेकर राज्य सरकार पर चार हजार करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया। सर्वोच्च न्यायालय ने 28 नवंबर, 2023 को एनजीटी के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें महाराष्ट्र को अनुचित अपशिष्ट प्रबंधन के लिए पर्यावरण मुआवजे के रूप में 12000 करोड़ रुपए का भुगतान करने का निर्देश दिया गया था। एनजीटी ने पंजाब सरकार पर कई चेतावनियों के बावजूद राज्य में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन में विफल रहने के लिए 1000 करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया। इसी तरह सुप्रीम कोर्ट ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल द्वारा राजस्थान सरकार पर लगाए 3000 करोड़ रुपए के जुर्माने पर रोक लगा दी। एनजीटी ने राजस्थान में गीले और सूखे कचरे के समुचित प्रबंधन में नाकाम रहने से पर्यावरण पर पड़ रहे बुरे असर को लेकर यह जुर्माना लगाया था। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई) की ओर से 5 जून को पर्यावरण दिवस के मौके पर जारी स्टेट ऑफ एनवायरमेंट (एसओई) रिपोर्ट 2023 में यह खुलासा किया गया कि देश के 30 राज्यों में कुल 279 (46 फीसदी) नदियां प्रदूषित हैं, हालांकि 2018 के मुकाबले मामूली सुधार 2022 में देखा गया है।

2018 में 31 राज्यों में 323 नदियां प्रदूषित थीं। एसओई रिपोर्ट के मुताबिक देश की 279 अथवा 46 फीसदी प्रदूषित नदियों में सर्वाधिक प्रदूषित नदियां महाराष्ट्र (55) में हैं, जबकि इसके बाद मध्य प्रदेश में 19 नदियां प्रदूषित हैं। वहीं, बिहार में 18 और केरल में भी 18 नदियां प्रदूषित हैं। उत्तर प्रदेश में 17 और कर्नाटक में भी 17 नदियां, जबकि राजस्थान में 14 और गुजरात में 13, मणिपुर में 13, पश्चिम बंगाल में 13 नदियां प्रदूषित हैं। देश की सर्वाधिक पवित्र नदी गंगा के जल को घरों में रखा जाता था। अब हालत यह है कि गंगा नदी दो साल में 10 गुना मैली चुकी है। उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल की 94 जगहों से गंगा जल की जांच की गई। नदी के पानी में प्रदूषण का बुरा हाल देखने को मिला। प्लास्टिक की थैलियां, दूध की पॉलिथीन, नदी के किनारे शवों का जलाना, गंगा नदी को लगातार प्रदूषित कर रहा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल के 94 स्थानों पर गंगा जल की जांच में यह भयावह तस्वीर सामने आई थी। 13 फरवरी 2023 को केंद्रीय जल शक्ति (जल संसाधन) राज्य मंत्री विश्वेश्वर टुडू ने संसद को बताया था कि नमामि गंगे कार्यक्रम गंगा नदी में प्रदूषण को कम करने में कारगर रहा है।

आईपीओ आया नहीं पर आपके पास होगा शेयर, आप भी लिस्टिंग से पहले कर सकते हैं प्री-आईपीओ में निवेश

परिवहन विशेष न्यूज

आईपीओ आज के समय में स्टॉक के साथ निवेशकों की दिलचस्पी आईपीओ को लेकर भी काफी है। निवेशक आईपीओ में निवेश करते हैं पर जब उन्हें शेयर अलॉट नहीं होता है तो उनक हाथ निराश लगती है। अगर आप भी किसी कंपनी का शेयर लेना चाहते हैं पर आईपीओ अलॉटमेंट न होनेका डर है तो आप शेयर बाजार में लिस्टिंग से पहले भी आईपीओ खरीद सकते हैं।

नई दिल्ली। स्टॉक मार्केट (Share Market) में आईपीओ को लेकर काफी क्रेज देखने को मिल रहा है। इस हफ्ते भी कई आईपीओ की लिस्टिंग होगा और कई कंपनियों के आईपीओ निवेश के लिए ओपन होंगे। ऐसे में कई बार निवेशक आईपीओ में निवेश करते हैं पर जब उन्हें शेयर अलॉट नहीं होता है तो उनके हाथ निराश लगती है।

ऐसे में अब आप चाहें तो आईपीओ की लिस्टिंग से पहले शेयर खरीद सकते हैं। आप ऐसा प्री-आईपीओ (Pre-IPO) के जरिये कर सकते हैं। हम आपको इसके बारे में विस्तार से बताएंगे।

क्या होता है प्री-आईपीओ? (What is Pre-IPO)

शेयर बाजार में सूचीबद्ध करने से पहले शेयर खरीदने का एक तरीका होता है प्री-आईपीओ। यह ऑप्शन वैसे तो संस्थागत निवेशकों, वेंचर कैपिटलिस्ट या हाई-नेट-वर्थ वाले लोगों के लिए होता है। प्री-आईपीओ के जरिये निवेश करके आप कम कीमत पर कंपनी के शेयर खरीद सकते हैं। हालांकि, यह काफी जोखिम भरा होता है।

दरअसल, जो कंपनियां लिस्ट नहीं होता है उसमें लिक्विडिटी कम होती है। इसमें कंपनी के वैल्यूएशन की जानकारी नहीं होती है और न ही ये कंफर्म होता है कि शेयर की लिस्टिंग होगी या नहीं। इसके अलावा भविष्य में इसकी कीमत बढ़ेगी या नहीं इसको लेकर भी कोई अंदाजा नहीं होता है।

कैसे खरीद सकते हैं शेयर

आप कई तरीके से कंपनियों के शेयर खरीद सकते हैं। आइए, जानते हैं-

- आप ब्रोकरेज फर्म से आसानी से नॉन-लिस्टेड कंपनियों के शेयर खरीद सकते हैं। इसके लिए आपको बाजार नियामक सेबी (SEBI) के रजिस्टर्ड ब्रोकर से डील करना चाहिए।
- अगर कोई कंपनी के कर्मचारी या निवेशक कंपनी के शेयर लिस्ट होने से पहले बेचना चाहते हैं तो आप वह शेयर खरीद सकते हैं। इसमें आपको शेयर की खरीद की डील दलाल के जरिये पर्सनल डील की जाती है।
- आज के समय में कई इन्वेस्टमेंट प्लेटफॉर्म हैं। इन इन्वेस्टमेंट प्लेटफॉर्म के जरिये भी आप प्री-आईपीओ के माध्यम से निवेश कर सकते हैं। इन प्लेटफॉर्म में निवेस का मौका तो मिलता है पर यह काफी जोखिम भरा होता है।
- निवेशक चाहें तो उन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से शेयर खरीद सकते हैं जहां गैर-लिस्टेड शेयर उपलब्ध हैं। इन प्लेटफॉर्म में कंपनियों के सभी डेटा मौजूद होते हैं जिसके जरिये निवेशक सही फैसला ले सकते हैं।

इन बातों का रखें ध्यान

- गैर-लिस्टेड शेयर खरीदने पर कई तरह के टैक्स लगते हैं। आपको शेयर की खरीद से पहले टैक्स पॉलिसी की जानकारी होनी चाहिए।
- कई बार डिमांड घटने या बढ़ने के कारण शेयर की कीमतों में उतार-चढ़ाव आता है। ऐसे में निवेश से पहले कंपनी की ग्रोथ और परफॉर्मेंस के बारे में सही से जान लें।
- नॉन-लिस्टेड शेयर में लिस्टिड शेयर की तुलना में ज्यादा रिस्क होता है। इसके अलावा इसमें शेयर की लिस्टिंग को लेकर भी कोई गारंटी नहीं होती है।

सेकेंडरी मार्केट छा रहा सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड, क्या यहां से खरीदना होगा बेस्ट?

परिवहन विशेष न्यूज

आज के समय फिजिकल गोल्ड के साथ डिजिटल गोल्ड भी निवेश के लिए काफी अच्छा ऑप्शन है। डिजिटल गोल्ड में सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड्स (Sovereign Gold Bond-SGB) लोगों को काफी पसंद आ रहा है। अभी इसकी न्यू सीरीज नहीं आ रही है। वहीं सेकेंडरी मार्केट में एसजीबी प्रीमियम के साथ ट्रेड कर रहा है। ऐसे में सवाल है कि क्या इसे खरीदना सही रहेगा या नहीं।

नई दिल्ली। फिजिकल गोल्ड के साथ लोगों को डिजिटल गोल्ड (Digitak Gold) भी काफी पसंद आ रहा है। डिजिटल गोल्ड में सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड्स (Sovereign Gold Bond-SGB) काफी अच्छा ऑप्शन है। अभी निवेश के लिए सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड की नई सीरीज जारी नहीं हुई। ऐसे में सेकेंडरी मार्केट्स में इसको लेकर काफी क्रेज देखा जा रहा है। लोगों की बढ़ती दिलचस्पी के बाद सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड 5 से 10 फीसदी के प्रीमियम पर ट्रेड कर रहा है।

क्या है सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (What is Sovereign Gold Bond)

सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड एक सरकारी बॉन्ड है। यह भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा जारी होता है। इसमें कूपन रेट के साथ मैच्योरिटी पर टैक्स बेनिफिट भी मिलता है। यह बॉन्ड बाकी डिजिटल गोल्ड इनवेस्टमेंट से काफी अच्छा ऑप्शन माना जाता है। ऐसे में कई लोग सेकेंडरी मार्केट्स से पुरानी गोल्ड सीरीज खरीद रहे हैं। बता दें कि सेकेंडरी मार्केट्स से खरीदे गए गोल्ड की एक्टिव ट्रेडिंग नहीं होती है। ऐसे में इसमें नुकसान होने की भी संभावना बनी रहती है।

आरबीआई ने साल 2016 से 2024 तक सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड की 67 किस्त जारी की थी। हालांकि, अब माना जा रहा है कि सरकार इसके दायरे को सीमित करके इसे घटा सकती है। इसकी वजह है कि यह सरकार के लिए महंगा साबित हो रहा है।

सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड सीरीज भले ही शेयर बाजार में लॉन्च नहीं हुई है पर इसकी लिस्टिंग सेकेंडरी मार्केट्स में हो चुकी है। इसके अलावा यह मार्केट के दोनों स्टॉक एक्सचेंज (BSE और NSE) के कैश सेगमेंट में ट्रेडिंग के लिए भी मौजूद हैं। ऐसे में निवेशक आसानी से डीमैट अकाउंट (Demat Account) का इस्तेमाल करते इसे खरीद या बेच सकते हैं। बता दें कि एसजीबी का एक यूनिट क ग्राम गोल्ड के बराबर होता है।

क्या सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड खरीदना रहेगा सही

अगर आप भी सेकेंडरी मार्केट्स में प्रीमियम के साथ एसजीबी खरीदने का सोच रहे हैं तो आपको आगामी 5 से 6 साल में चैलेंजिस का सामना करना पड़ सकता है। दरअसल, मार्केट एक्सपर्ट के अनुसार अगर प्रीमियम के हिसाब से गोल्ड की कीमत नहीं बढ़ती है तो निवेशकों को नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। बता दें कि इस बॉन्ड का रिडेम्पशन प्राइस मार्केट प्राइस के आधार पर तय होता है। ऐसे में सेकेंडरी मार्केट्स से यह बॉन्ड खरीदना काफी रिस्कफुल हो सकता है।

8-4-3 फॉर्मूला को फॉलो करके बन सकते हैं करोड़पति, सपने साकार होने में लगेगा केवल इतना समय

हम सेविंग भी करते हैं और निवेश भी करते हैं पर हमें इसके बावजूद ज्यादा अच्छा रिटर्न नहीं मिलता है। ऐसे में कई बार मन में सवाल आता है कि आखिर कैसे निवेश करें कि हमारे पास कम समय में करोड़ रुपये का फंड तैयार हो जाए। हम आपको इस आर्टिकल में इन्वेस्टमेंट के ऐसे रूल के बारे में बताएंगे जिसके जरिये करोड़ रुपये का फंड तैयार हो सकता है।

नई दिल्ली। आज के समय में हर कोई चाहता है कि उसके पास करोड़ रुपये की संपत्ति हो। इसके लिए वह सेविंग के साथ इन्वेस्टमेंट भी करता है। लेकिन, वह यह नहीं जानता है कि उसके करोड़पति के सपने को साकार होने में कितना समय लगेगा। ऐसे में अगर एक फॉर्मूला को फॉलो करके मालूम हो जाए कि कितने साल के बाद करोड़पति बन जाएंगे तो क्या ही कहना। हम आपको इस आर्टिकल में एक ऐसे ही फार्मूला के बारे में बताएंगे जो आपके करोड़पति बनने के सपने को साकार करने में मदद करेगा।

फॉलो करें 8-4-3 फॉर्मूला (Rule of 8-4-3)

कई लोग शानदार रिटर्न पाने और सही तरीके से निवेश के लिए 8-4-3 फॉर्मूला (Rule of 8-4-3) फॉलो करते हैं। इसमें निवेश करके आपको न्यूनतम 12 फीसदी तक का रिटर्न मिल सकता है। यह फॉर्मूला काफी सिंपल होता है। इसमें फॉर्मूला के अनुसार आपको ऐसी स्कीम में निवेश करना चाहिए जिसके सालाना चक्रवृद्धि ब्याज (yearly compounding interest) मिलता हो। आज के समय में बाजार में ऐसे कई स्कीम है जो चक्रवृद्धि ब्याज ऑफर कर रहा है।

कितने साल में बनेंगे करोड़पति (Rule of 8-4-3 Calculator)

अगर आप इस स्कीम में हर महीने 21,250 रुपये का निवेश करते हैं तो 8 साल में 33.37 लाख रुपये का फंड तैयार हो जाएगा। यह आपके करोड़पति बनेन का पहला स्टेप है। अब फिर से चक्रवृद्धि ब्याज की मदद से आप अगले चार साल में 33.37 लाख रुपये जुटा लेंगे और फिर केवल 3 साल में आपके फंड में 33 लाख रुपये और जुड़ जाएंगे। इस तरह केवल 15 साल में आप 8+4+3 रूल के जरिये आप करोड़पति बन जाएंगे।

इसी तरह अगर आप 15 साल के बाद भी 6 साल तक हर महीने 21,250 रुपये जमा करते रहते हैं तो टोटल 21 साल में आपके पास 2.22 करोड़ रुपये का फंड तैयार हो जाएगा

कंपाउंडिंग इंटरेस्ट का कमाल

8-4-3 फॉर्मूला के साथ बड़ा फंड तैयार करने में कंपाउंडिंग इंटरेस्ट का बड़ा योगदान है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने कंपाउंडिंग इंटरेस्ट को दुनिया का आठवां अजूबा बताया था। दरअसल, निवेश पर दो तरीके से ब्याज मिलता है। एक साधारण ब्याज (Simple Interest) और दूसरा चक्रवृद्धि ब्याज (Compound Interest)। साधारण ब्याज में केवल मूल धन यानी निवेश राशि पर ब्याज मिलता है। वहीं, चक्रवृद्धि ब्याज मूलधन पर ब्याज मिलता है और फिर वह मूलधन में वह ब्याज जुड़ जाता है। आसान भाषा में कहें तो इसमें ब्याज पर भी ब्याज मिलता है।

आगामी हफ्ते में ये फैक्टर्स करेंगे मार्केट को गाइड, एनालिस्ट ने बताया निवेशकों को किन चीजों पर रखनी होगी नजर?

परिवहन विशेष न्यूज

पिछला हफ्ता शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव भरा कारोबार रहा था। अब निवेशकों की नजर कल से शुरू होने वाले कारोबारी हफ्ते पर बनी हुई है। इस हफ्ते स्टॉक मार्केट केवल 4 दिनम ही खुलेंगे। ऐसे में अगर आप भी शेयर बाजार में निवेश करते हैं तो आपको शेयर बाजार के अहम फैक्टर्स पर नजर बनाए रखनी चाहिए। पढ़ें पूरी खबर..

नई दिल्ली। कल से नया कारोबारी हफ्ता शुरू होने वाला है। इस हफ्ते भी शेयर बाजार की चाल को कई फैक्टर्स प्रभावित करेंगे। निवेशकों को इन सभी फैक्टर्स पर नजर बनाए रखनी होगी। मार्केट एनालिस्टके अनुसार निवेशकों को कंपनियों द्वारा जारी होने वाले तिमाही नतीजों पर नजर बनाए रखनी होगी।

ये फैक्टर्स होंगे अहम

विदेशी निवेशकों के साथ ग्लोबल ट्रेंड्स बाजार की चाल पर असर डाल सकते हैं। इस हफ्ते 12 नवंबर और 14 नवंबर को अक्टूबर महीने के महंगाई के आंकड़ें आएंगे। यह आंकड़े भी कहीं न कहीं मार्केट की चाल को प्रभावित करेंगे। हालांकि, इस हफ्ते केवल 4 दिन ही शेयर बाजार खुलेगा। दरअसल, शुक्रवार को गुरु नानक जयंती के मौके पर शेयर बाजार में छुट्टी रहेगी।

इसके आगे उन्होंने कहा कि ग्लोबल इवेंट के साथ कंपनियों द्वारा जारी होने वाले दूसरी तिमाही के नतीजों का असर भी शेयर बाजार पर देखने को मिलेगा।

ये कंपनी जारी करेगी नतीजे

इस हफ्ते बैंक ऑफ इंडिया, बीईएमएल, हिंदाल्को इंडस्ट्रीज, ओएनजीसी, अपोलो टायर्स और ऑनलाइन ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म फर्स्टक्राई की मूल कंपनी ब्रेनबीज सॉल्यूशंस तिमाही नतीजे जारी करेंगे। इसके अलावा भी कई कंपनियां नतीजों की घोषणा कर सकती है। इन नतीजों में कंपनी अपने फाइनेंसियल परफॉर्मेंस की जानकारी देती है।

एफआईआई फ्लो पर रखें नजर

अमेरिका में हुए राष्ट्रपति चुनाव के नतीजों के बाद यील्ड और डॉलर इंडेक्स का प्रदर्शन भारत जैसे उभरते बाजारों के लिए महत्वपूर्ण होगा। ऐसे में उम्मीद है कि इस हफ्ते शेयर बाजार में तेजी आ सकती है। हालांकि, निवेशकों को एफआईआई (विदेशी संस्थागत निवेशक) गतिविधियों पर बारीकी से ध्यान रखने की आवश्यकता है। एफआईआई इनफ्लो और आउटफ्लो भारतीय शेयर बाजार की गतिविधि के लिए महत्वपूर्ण चालक है। इसके अलावा क्रूड ऑयल और रुपये-डॉलर के बीच हो रहे कारोबार भी बाजार को गाइड करेगा।

जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी के विजयकुमार के अनुसार भारतीय बाजार में कमजोरी का मुख्य कारण एफआईआई की लगातार बिकवाली है। इस महीने भी यह बिकवाली जारी रह सकती है।

इस हफ्ते स्विग्गी के साथ 4 कंपनियों की होगी एंट्री; निवेश के लिए खुलेगा ज़िन्का लॉजिस्टिक्स का आईपीओ

परिवहन विशेष न्यूज

अगर आप स्टॉक मार्केट में निवेश करते हैं तो बता दें कि आज के समय में लोगों का स्टॉक के साथ आईपीओ की तरफ भी दिलचस्पी बढ़ रही है। आईपीओ भी निवेश के लिए काफी अच्छा ऑप्शन है। इस हफ्ते Swiggy समेत कई कंपनियों के आईपीओ की लिस्टिंग होगी तो वहीं Zinka Logistics का आईपीओ निवेश के लिए खुलेगा।

नई दिल्ली। शेयर बाजार में आईपीओ का सिलसिला अभी भी जारी है। इस हफ्ते भी निवेश के लिए कई आईपीओ लॉन्च (Upcoming IPO This Week) होंगे। इसके साथ ही कई बड़ी कंपनियों के शेयर लिस्ट भी होंगे। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे इस हफ्ते कौन-से कंपनी के आईपीओ निवेश के लिए खुलेंगे और किस कंपनी का आईपीओ लिस्ट होगा।

बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) के अनुसार अभी तक शेयर बाजार में कुल 128 कंपनियों के आईपीओ लिस्ट हुए हैं। इनमें से 68 आईपीओ मेनबोर्ड सेगमेंट के हैं।

Zinka Logistics Solution IPO

इस हफ्ते लॉजिस्टिक्स सेक्टर की कंपनी जिंका लॉजिस्टिक्स सॉल्यूशन (Zinka Logistics Solution) का आईपीओ ओपन होगा। कई लोग इस कंपनी को ब्लैकबक (BlackBuck) के नाम से भी जानते हैं। यह आईपीओ 13 नवंबर 2024 को खुलेगा और 18 नंवबर 2024 को बंद हो जाएगा।

जिंका लॉजिस्टिक्स सॉल्यूशन आईपीओ (Zinka Logistics Solution IPO) का प्राइस बैंड 259 रुपये से 273 रुपये तय किये गए हैं। इस आईपीओ के जरिये कंपनी 1,114.72 करोड़ रुपये जुटाने की योजना बना रही है। कंपनी ने इस आईपीओ में 2,01,46,520 फ्रेश शेयर जारी किये हैं। इसके अलावा ऑफर फॉर सेल (OFS) के तहत 2,06,85,800 शेयर्स जारी किये हैं। इन सभी शेयरों की फेस वैल्यू 1 रुपये प्रति शेयर है। इसके अलावा इस आईपीओ का लॉट साइज 54 स्टॉक का है।

बाजार में होगी इन शेयर की एंट्री

मंगलवार को शेयर बाजार के दोनों स्टॉक एक्सचेंज BSE और NSE पर बेंगलुरु की हेल्थकेयर कंपनी सैगिलिटी इंडिया (Sagility India) के शेयर लिस्ट होंगे। कंपनी के आईपीओ (Sagility India IPO) को निवेशकों से काफी अच्छा रिस्पांस मिला है। ऐसे में उम्मीद है कि कंपनी के शेयर प्रीमियम के साथ लिस्ट होंगे।

फूड और ग्रॉसरी डिलीवरी प्लेटफॉर्म स्विगी (Swiggy) का आईपीओ (Swiggy IPO) स्टॉक मार्केट में एंट्री लेने के लिए तैयार है। कंपनी के शेयर की लिस्टिंग 13 नवंबर 2024 को होगी। 11 नवंबर को आईपीओ अलॉटमेंट हो सकता है। जिन निवेशकों को आईपीओ अलॉट होगा उनके डीमैट अकाउंट (Demat Account) में 12 नवंबर को शेयर आ जाएंगे। ग्रे मार्केट के अनुसार स्विगी आईपीओ (Swiggy IPO GMP) प्रीमियम के साथ लिस्ट हो सकता है।

सोलर सेक्टर की एसीएमई सोलर होल्डिंग्स का आईपीओ (ACME Solar Holdings IPO) 13 नवंबर को लिस्ट होगा। वहीं 12 नवंबर को निवेशकों के अकाउंट में शेयर आ सकते हैं। इस कंपनी के आईपीओ को निवेशकों से काफी अच्छा रिस्पांस मिला है। अगर ग्रे मार्केट (ACME Solar Holdings IPO GMP) की बात करें तो वहां भी यह प्रीमियम के साथ ट्रेड कर रहा है।

हेल्थ इंश्योरेंस (Health Insurance) की कंपनी निवा बूपा का आईपीओ 14 नवंबर को लिस्ट होगा। इस आईपीओ में आप 11 नवंबर 2024 यानी कल तक निवेश कर सकते हैं। बता दें कि इस आईपीओ का प्राइस बैंड 70-74 रुपये प्रति शेयर निर्धारित है।

टॉप-10 में से 6 कंपनियों के एम-कैप में हुई भारी गिरावट, RIL को हुआ सबसे ज्यादा नुकसान

नई दिल्ली। शेयर बाजार में बिकवाली भरे कारोबार का असर देखने को मिला। जी हां, स्टॉक मार्केट में हो रहे उतार-चढ़ाव भरे कारोबार से जहां एक तरफ निवेशकों को नुकसान का सामना करना पड़ रहा है तो वहीं दूसरी तरफ बाजार की टॉप-10 फर्म के एम-कैप पर भी इसका असर हुआ है।

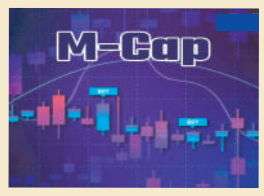

पिछले सप्ताह शेयर बाजार की टॉप-10 कंपनियों में से 6 कंपनियों के एम-कैप में भारी गिरावट आई है। न्यूज एजेंसी पीटीआई के अनुसार 6 कंपनियों के एम-कैप में संयुक्त रूप से 1,55,721.12 करोड़ रुपये की गिरावट आई है। हालांकि. चार कंपनियों के एम-कैप में तेजी देखने को मिली है। पिछले हफ्ते रिलायंस इंडस्ट्रीज के एम-कैप में भारी गिरावट आई, जिसकी वजह से यह टॉप लूजर रहा।

इन कंपनियों के एम-कैप में हुई गिरावट

- देश की सबसे बड़ी वैल्यूएशन वाली कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन में इस हफ्ते भारी गिरावट देखने को मिली। कंपनी का एम-कैप 74,563.37 करोड़ रुपये गिरकर 17,37,556.68 करोड़ रुपये हो गया।
- भारती एयरटेल का बाजार मूल्यांकन 26,274.75 करोड़ रुपये घटकर 8,94,024.60 करोड़ रुपये हो गया।
- आईसीआईसीआई बैंक का बाजार मूल्यांकन 22,254.79 करोड़ रुपये कम होकर अब 8,88,432.06 करोड़ रुपये हो गया है।
- आईटीसी का बाजार पूंजीकरण 15,449.47 करोड़ रुपये घटकर 5,98,213.49 करोड़ रुपये रह गया।
- भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) का बाजार मूल्यांकन 9,930.25 करोड़ रुपये घटा। अब कंपनी का एम-कैप 5,78,579.16 करोड़ रुपये है।
- हिंदुस्तान यूनिलीवर का बाजार पूंजीकरण 7,248.49 करोड़ रुपये कम होकर 5,89,160.01 करोड़ रुपये हो गया।

पैसे रखें तैयार! इस महीने लॉन्च हो सकता है आईपीओ, जानें प्राइस बैंड और बाकी डिटेल्स

शेयर बाजार के निवेशक काफी समय से एनटीपीसी की सहायक कंपनी एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी आईपीओ का इंतजार कर रहे हैं। अगर आप भी इस आईपीओ में निवेश का सोच रहे हैं तो यह आर्टिकल आपके लिए है। हम इस आर्टिकल में आपको बताएंगे कि यह आईपीओ कब तक लॉन्च हो सकता है। पढ़े पूरी खबर..

नई दिल्ली। शेयर बाजार में आईपीओ (IPO) को लेकर काफी क्रेज देखा जा रहा है। निवेशक कई कंपनियों के आईपीओ का इंतजार कर रहे हैं। इनमें से एक एनटीपीसी (NTPC) की सब्सिडरी कपंनी एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी (NTPC Green Energy) भी है। काफी समय से निवेशक एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी आईपीओ (NTPC Green Energy IPO) का इंतजार कर रहे हैं।

अगर आप भी इस आईपीओ का इंतजार कर रहे हैं तो बता दें कि जल्द ही इंतजार खत्म होने वाला है। दरअसल, कंपनी का आईपीओ इस महीने ही ओपन होगा। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार 18 नवंबर 2024 (सोमवार) को यह आईपीओ खुलेगा। हालांकि, इस आईपीओ की लॉन्च डेट को लेकर अभी कोई अधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है।

एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी आईपीओ के बारे में (About NTPC Green Energy IPO)

एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी NTPC Ltd की सहायक कंपनी है। एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी इस आईपीओ के जरिये 10 हजार करोड़ रुपये जुटाने की योजना बना रही है। इस आईपीओ में सभी शेयर फ्रेश इश्यू होंगे। इसका मतलब कि ऑफर फॉर सेल के तहत शेयर की बिक्री नहीं होगी। अगर इस आईपीओ का साइज 1,000 करोड़ रुपये हो जाता है तब यह इस साल का तीसरा बड़ा आईपीओ होगा।

इस आईपीओ के बुक रनिंग लीड मैनेजर आईडीबीआई कैपिटल मार्केट सर्विसेज, एचडीएफसी बैंक, आईआईएफएल सिक्योरिटीज और नुवामा वेल्थ मैनेजमेंट हैं। वहीं, आईपीओ का रजिस्ट्रार केफिन टेक्नोलॉजीज है।

कितना है प्रइस बैंड (NTPC Green Energy IPO Price Band)

एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी आईपीओ के प्राइस बैंड को लेकर अभी कोई जानकारी सामने नहीं आई है। माना जा रहा है कि इस हफ्ते के अंत तक में कंपनी प्राइस बैंड और लॉन्च डेटा आदि डिटेल्स का खुलासा कर देगी।

कैसी है कंपनी की परफॉर्मेंस (NTPC Green Energy Performance)

एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी की परफॉर्मेंस काफी अच्छी रही है। इस साल 31 अगस्त 2024 तक कंपनी की ऑपरेशनल कैपेसिटी 6 राज्यों में थी। इसमें सोलर प्रोजेक्ट 3,071 मेगावाट और विंड प्रोजेक्ट से 100 मेगावाट के थे। वहीं कंपनी के पोर्टफोलियो के अनुसार कुल 14,696 मेगावाट शामिल हैं। इसमें ऑपरेशनल प्रोजेक्ट और कॉन्ट्रैक्ट के साथ पूरा हो चुके प्रोजेक्ट्स भी शामिल हैं।

महिलाओं की सुरक्षा और गरिमा के लिए ख़तरा बनी साइबर की दुनिया

इंटनेट इस्तेमाल करने वाली स्त्रियों की बढ़ती तादाद एक सकारात्मक बदलाव है। लेकिन, इसने और अधिक संख्या में महिलाओं को वर्चुअल दुनिया में ख़तरों के जोखिम में डाल दिया है। हाँ, ऐसा लग रहा है कि महिलाओं के प्रति ऑनलाइन अपराध की घटनाएँ बढ़ रही हैं। इनमें यौन उत्पीड़न, धमकाने, डराने बलात्कार या जान से मार देने की धमकियाँ देने, साइबर दुनिया में पीछा करने और बिना सहमति के तस्वीरें और वीडियो शेयर करने जैसी वारदातें शामिल हैं। सर्वे में पता चला है कि 60 प्रतिशत लड़कियों और महिलाओं ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उत्पीड़न का सामना किया है और इनमें से लगभग 20 प्रतिशत ने इसके चलते या तो सोशल मीडिया को अलविदा कह दिया या फिर उसका इस्तेमाल कम कर दिया। भारत की अदालतें, महिलाओं के प्रति ऑनलाइन अपराधों की तुलना में ऑफलाइन जुर्मों को ज़्यादा अहमियत देती हैं।

-प्रियंका सौरभ

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से उत्पन्न सामग्री के उदय ने डिजिटल स्पेस में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को और बढ़ा दिया है, जिससे ऑनलाइन उत्पीड़न और गोपनीयता उल्लंघन के नए रूप सामने आए हैं। इसने टेक कंपनियों और सरकारों दोनों को तत्काल कार्यवाही करने की आवश्यकता बताई है। आज जब साइबर क्षेत्र में महिलाओं के लिए ख़तरे कई गुना बढ़ गए हैं, तो ऐसा कोई सुरक्षित ठिकाना नहीं बचा है, जहाँ वह छुप सकें और न ही कोई कड़ी सुरक्षा वाला इलाक़ा है, जहाँ बैठकर वह अपने सम्मान पर डाका डालने वाले साइबर ख़तरों के ख़त्म होने का इंतज़ार कर सकें। एक वैश्विक सर्वे में पता चला है कि 60 प्रतिशत लड़कियों और महिलाओं ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उत्पीड़न का सामना किया है और इनमें से लगभग 20 प्रतिशत ने इसके चलते या तो सोशल मीडिया को अलविदा कह दिया या फिर उसका इस्तेमाल कम कर दिया।

इसी तरह यूएन विमेन ने पाया है कि दुनिया भर में 58 प्रतिशत महिलाएँ और लड़कियों को किसी न किसी तरह के ऑनलाइन शोषण का शिकार होना पड़ा है। इनमें ट्रोलिंग, पीछा करने, डॉक्सिंग और लैंगिकता पर आधारित दूसरे तरह के ऑनलाइन हिंसक बर्ताव हैं, जो डिजिटिल युग के नए ख़तरों के तौर पर उभर रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग डीपफेक वीडियो और चित्र बनाने के लिए किया जा रहा है, जो महिलाओं को मनगढ़ंत सामग्री के साथ लक्षित करते हैं जो अक्सर प्रकृति में यौन या मानहानिकारक होती है। यू। एस। की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को 2024 के राष्ट्रपति पद के लिए अपने अभियान के दौरान झूठे और हानिकारक संदर्भों में उन्हें चित्रित करने वाले डीपफेक का सामना करना पड़ा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल महिलाओं के चरित्र और विश्वसनीयता को कम करने के लिए डिज़ाइन की गई झूठी कथाएँ या स्त्री-द्वेषी सामग्री फैलाते हैं, विशेष रूप से नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं को लक्षित करते हैं।

रिपब्लिकन प्राइमरी के दौरान निक्की हेली हेरफेर की गई छवियों और फ़र्ज़ी खबरों का शिकार हुईं। महिलाओं को ऑनलाइन वस्तुकरण और यौन रूप से स्पष्ट सामग्री का असंगत स्तर का सामना करना पड़ता है, जो वास्तविक

नकली सामग्री बनाने की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्षमता द्वारा बढ़ाया जाता है। इतालवी प्रधान मंत्री जियोर्जिया मेलोनी की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा बनाई गई स्पष्ट तस्वीरें सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से प्रसारित हुईं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा बनाई गई डीपफेक और बदली हुई तस्वीरें महिलाओं की निजता का उल्लंघन करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर प्रतिष्ठा को काफ़ी नुक़सान होता है और मानसिक परेशानी होती है। बांग्लादेशी राजनेता रूमिन फरहाना को चुनावों से पहले डीपफेक सामग्री के साथ निशाना बनाया गया था। तकनीकी कंपनियों और सरकारों द्वारा समस्या को कम करने के लिए कदम। कंपनियों को त्रुटियों को रोकने के लिए मानवीय निगरानी के साथ, हानिकारक सामग्री को व्यापक रूप से प्रसारित होने से पहले सक्रिय रूप से चिह्नित करने और हटाने के लिए उन्नत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डिटेक्शन सिस्टम में निवेश करना चाहिए।

मेटा (फेसबुक) ने हाल ही में डीपफेक से निपटने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल की घोषणा की, लेकिन उनका कार्यान्वयन असंगत बना हुआ है। प्लेटफ़ॉर्म को स्पष्ट जवाबदेही उपाय प्रदान करने चाहिए और रिपोर्ट करनी चाहिए कि वे अपनी मॉडरेशन नीतियों के पारदर्शी ऑडिट के साथ फ़्लैग की गई सामग्री को कैसे संभालते हैं। यूरोपीय संघ के डिजिटल सेवा अधिनियम (2022) में डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म को सामग्री मॉडरेशन क्रियाओं की रिपोर्ट करना अनिवार्य किया गया है। तकनीकी कंपनियों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि एल्गोरिदम को इस तरह से डिज़ाइन किया जाए कि लिंग पूर्वाग्रह कम हो और हानिकारक उद्देश्यों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल का दुरुपयोग रोका जा सके। गूगल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिद्धांत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के ज़िम्मेदार उपयोग पर प्रकाश डालते हैं, लेकिन अधिक कार्यान्वयन की आवश्यकता है।

सरकारों को डेटा सुरक्षा कानूनों को लागू करना चाहिए और डीपफेक-विशिष्ट कानूनों सहित एआई-जनरेटेड सामग्री के दुरुपयोग को सम्बोधित करने के लिए विशिष्ट कानूनी प्रावधान बनाने चाहिए। भारत के सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम 2021 सामग्री मॉडरेशन के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है, लेकिन इसमें कड़े एआई-विशिष्ट नियमों का अभाव है। सरकारों को एआई नैतिकता बोर्ड और रूपरेखाएँ स्थापित करनी चाहिए जो नैतिक एआई विकास को अनिवार्य बनाती हैं, लिंग आधारित भेदभाव को रोकने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। यूरोपीय संघ के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अधिनियम का उद्देश्य उच्च जोखिम वाली एआई प्रणालियों को विनियमित करना है, विशेष रूप से मीडिया और निगरानी में। सरकारों को डीपफेक सामग्री की पहचान करने और रिपोर्ट करने के लिए जन जागरूकता अभियान शुरू करना चाहिए, विशेष रूप से कमजोर समूहों को लक्षित करना चाहिए।

भारत का राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल एआई-जनरेटेड कंटेंट से जुड़े साइबर अपराधों की आसान रिपोर्टिंग की सुविधा देता है। निर्धारित समय सीमा के भीतर हानिकारक कंटेंट को हटाने में विफल रहने पर तकनीकी कंपनियों को मौद्रिक दंड के माध्यम से जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। यूरोपीय संघ में जीडीपीआर उन कंपनियों पर भारी जुर्माना लगाने की अनुमति देता है जो उपयोगकर्ताओं को डेटा के दुरुपयोग से बचाने में विफल रहती हैं। सरकारों, तकनीकी फर्मों और नागरिक समाज के बीच एक सक्रिय, बहुपक्षीय दृष्टिकोण महिलाओं के लिए सुरक्षित डिजिटल स्थानों का निर्माण सुनिश्चित करेगा, नैतिक एआई विकास और मज़बूत ऑनलाइन सुरक्षा को बढ़ावा देगा।

बारीपदा से भुवनेश्वर तक जगन्नाथ एक्सप्रेस बस

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: विभिन्न स्थानों से हाईटेक बस सेवा प्रदान करने वाला ओडिशा राज्य परिवहन निगम नए रूट जोड़ रहा है। राज्य के भीतर और राज्य के बाहर के यात्रियों को सस्ती दरों पर यात्रा व्यवस्था प्रदान करने के लिए हाई-टेक सुविधाएं जारी हैं।ये एक लोकप्रिय मार्ग बारीपद से भुवनेश्वर है।बारीपदा से भुवनेश्वर को जोड़ने वाली ओएसआरटीसी की सुपर प्रीमियम वोल्वो बसों में यात्रा करने वाले लोग ओएसआरटीसी वेबसाइट, मोबाइल ऐप या टिकट काउंटर पर टिकट बुक कर सकते हैं।

इस्कॉन मनमाने ढंग से महाप्रभु की घोष यात्रा की

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेस्वर: बिबाद के बाद भी इस्कॉन ने रथ यात्रा निकला। कल अमेरिका ने ह्यूस्टन की एक दिवसीय यात्रा की। इस्कॉन ने 'फेस्टिवल ऑफ ब्लिस' के नाम से एक रथ यात्रा का आयोजन किया है। हालांकि रथ में चार पहियों वाली कोई मूर्ति नहीं है, फिर भी इस्कॉन ने राधाकृष्ण की मूर्ति के साथ नंदीघोष जैसा रथ बनाया है। जिससे रुढ़िवादी जगन्नाथ भक्तों की भावनाएं आहत हुई हैं।गजपति के महाराजा द्वारा उन्हें एक दिवसीय सवारी न करने के लिए कहने के बाद, इस्कॉन ने कहा कि वह ऐसा करने से परहेज करेंगे। इसके बाद इस्कॉन की ओर से जानकारी दी गई कि श्रीजिउ का अदीन स्नान और सवारी अमेरिका के ह्यूस्टन में नहीं हुआ।

हालाँकि, इस्कॉन ने नंदीघोष जैसा रथ बनाकर और नियत दिन यानी कल ह्यूस्टन में उसे खींचकर 'आनंद का त्योहार' मनाया। नंदीघोष के रथ घुमाने और इस्कॉन के रवैये पर सवाल उठाए गए हैं। हालाँकि इस्कॉन की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है।वरिष्ठ सेवायत बिनायक दासमहापात्र ने कहा, इस्कॉन मनमाने ढंग से महाप्रभु की घोष यात्रा और स्नान यात्रा कर रहा है। जब यह घटना लोगों के सामने आई तो सेबायत से लेकर सभी जगन्नाथ प्रेमियों ने इसका विरोध किया। दो बार गजपति महाराज ने इस्कॉन को पत्र भी लिखा। इतना सब होने के बाद भी इस्कॉन ने रथ में जगन्नाथ को न बिठाकर राधा कृष्ण को बिठाया। बार-बार कहने के बाद भी इस्कॉन मनमानी कर रहा है। मजबूरन कानून की शरण लेनी पड़ी। इस पर प्रबंधन समिति में चर्चा की जायेगी। गजपति महाराज जो भी कदम उठाएंगे हम भी उसका समर्थन करेंगे।

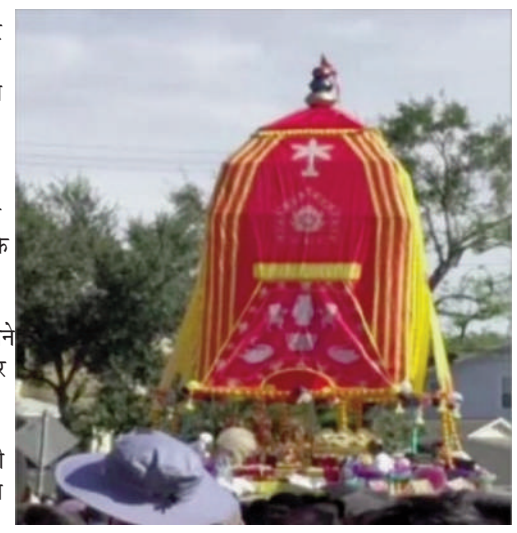

'नौकरी के आखिरी दिन तक इस घर को मत बेचना', CJI डीवाई चंद्रचूड़ ने सुनाया पिता का भावुक किस्सा

मां को याद करते हुए मुख्य न्यायाधीश ने कहा मैं एक बीमार बच्चा था मेरी मां ने रात-रात भर जागकर गुजारा ताकि मैं ठीक हो जाऊं। मुझे अभी भी उनका यह कहना याद है कि दवा गंगा की तरह है और डॉक्टर नारायण (भगवान) की तरह। उन्होंने मुझसे कहा मैंने तुम्हारा नाम धनंजय रखा है लेकिन धन भौतिक धन नहीं है मैं चाहती हूं कि तुम ज्ञान प्राप्त करो।

नई दिल्ली। भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ सेवानिवृत्त हो चुके हैं। सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में अपने विदाई भाषण में डीवाई चंद्रचूड़ ने एक किस्सा सुनाया। उन्होंने पुणे में एक फ्लैट के बारे में अपने पिता के साथ हुई बातचीत का जिक्र किया। डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा, ₹मेरे पिता ने पुणे में एक छोटा सा फ्लैट खरीदा। मैंने उनसे पूछा कि आप पुणे में एक फ्लैट क्यों खरीद रहे हैं? आप वहां कब रहेंगे? उन्होंने मुझसे कहा, 'मुझे पता है कि मैं वहां कभी नहीं रहूंगा। मुझे यकीन नहीं है कि मैं तुम्हारे साथ कितने समय तक रहूंगा। लेकिन न्यायाधीश के रूप में अपने कार्यकाल के आखिरी दिन तक इसे अपने पास रखना। मैंने कहा कि ऐसा क्यों?

मेरे पिता बहुत अनुशासित थे: CJI डीवाई चंद्रचूड़ : उन्होंने कहा, 'यदि तुम्हें लगे कि तुम्हारी नैतिक और बौद्धिक ईमानदारी से समझौता हो रहा है, तो मैं चाहता हूं कि तुम्हें ये पता रहे कि तुम्हारे सिर पर एक छत है। कभी भी बतौर वकील या जज इसलिए समझौता मत करना, क्योंकि तुम्हें लगे कि तुम्हारे सिर पर कोई छत नहीं है। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि उनके पिता बहुत अनुशासित थे। उन्होंने कहा, "उन्होंने हमें बच्चों के रूप में अनुशासित नहीं किया, बल्कि उन्होंने सोचा कि जिस तरह से उन्होंने अनुशासित जीवन जिया, उसे देखते हुए हमें अनुशासन के आदर्शों को सीखना चाहिए।₹

सीजेआई ने बताया- मां ने धनंजय नाम क्यों रखा था : इस कार्यक्रम में मुख्य न्यायाधीश का परिवार भी शामिल हुआ था। अपनी मां को याद करते हुए मुख्य न्यायाधीश ने कहा, "मैं एक बीमार बच्चा था, मेरे बीमार पड़ने का खतरा था और मेरी मां ने रात-रात भर जागकर गुजारा ताकि मैं ठीक हो जाऊं। मुझे अभी भी उनका यह कहना याद है कि दवा गंगा की तरह है और डॉक्टर नारायण (भगवान) की तरह। जब मैं बड़ा हो रहा था तो उन्होंने मुझसे कहा, 'मैंने तुम्हारा नाम धनंजय रखा है, लेकिन 'धन' भौतिक धन नहीं है, मैं चाहती हूं कि तुम ज्ञान प्राप्त करो।' मुख्य न्यायाधीश की मां प्रभा चंद्रचूड़ ऑल इंडिया रेडियो की शास्त्रीय संगीतकार थीं।

मेरी पत्नी घर के सभी फैसले लेती है: CJI चंद्रचूड़ : मुख्य न्यायाधीश ने कहा, "अधिकांश महाराष्ट्रीयन महिलाओं की तरह वह बहुत शक्तिशाली थीं। हमारा घर महिला प्रधान घर था। मेरी मां घर में हर चीज पर हावी थीं। उन्होंने अपनी पत्नी का भी जिक्र करते हुए कहा, "मुझे लगता है कि ओडिशा की महिलाएं भी इसी पैटर्न में हैं। मेरी प्यारी पत्नी कल्पना घर पर सभी फैसले लेती हैं, लेकिन फैसले के साथ कभी खिलवाड़ नहीं करतीं।"

सफ़ल व्यक्ति के प्रतिस्पर्धी उसकी कमजोर कड़ी रेखांकित कर,टांग खींचने में अपनी ताकत झोंक देते हैं

राजनीतिक सामाजिक धार्मिक क्षेत्रों में सफ़ल व्यक्ति की टांग खींचे का प्रचलन बढ़ा

कुछ व्यक्तियों को किसी और की सफ़लता से अपने वर्चस्व ख़ोने क़े ख़तरे व ईर्ष्या,असुरक्षा से यह उत्पन्न हो सकता है-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ में प्रौद्योगिकी विज्ञान से सराबोर होकर अपने-अपने स्तरपर सफ़लता के परचम छू रहे हैं और अब हर देश प्रौद्यौगिकी व डिजिटाइजेशन से आछूता नहीं है, जिसका दर्शबहुत बड़ा हो चुका है इसकी उपलब्धियों के पीछे मानवीय मस्तिष्क का कमाल है जो सफलता के झंडा गाढ़ रहा है। वही आज के युग में तकनीकी प्रौद्योगिकी व उसके सहारे पूरी दुनियाँ में कनेक्टिविटी भी बढ़ती जा रही है, इसके लिए राजनीतिक क्षेत्र में बुद्धिजीवी सफल व पारदर्शी व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है,जो पूरी तरह समर्पित होकर निस्वार्थभाव से नेतृत्व करें।परंतुलंबे समय से हम देखते आ रहे हैं कि प्रौद्योगिकी युग को गति देने वालों व सामाजिक राजनीतिक धार्मिक क्षेत्र में अपनी सेवा या योगदान देकर समर्पित भाव से कार्य करने वालों की टांग खींचने का प्रचलन हाल के कुछ वर्षों में काफी बढ़ गया है। यह काम ऐसे लोगों द्वारा किया जाता है जो इन क्षेत्रों में अपने वर्चस्व को बनाकर रखना चाहते हैं, उनकी मंशा रहती है कि मुझसे कोई आगे ना बड़े व उस राजनीतिकसामाजिक धार्मिक संगठन कोlee अपने ढंग से ढालने की कोशिशों में लगे रहते हैं, जिसके चक्कर में वह अपने से प्रबुद्ध विशाल बुद्धिमान सक्रिय सेवक की टांग खींचनें में पूरी ताकत झोंक देते है। अधिकतम फोकस उस सही व सच्चे सफल इंसान के ऊपर कोई आरोप लगाकर उसकी रेपुटेशन यानें इज्जत की हत्या कर देते है, ताकि वह फिर सर नहीं उठा सके, ऐसे वाक्यात मैंने संगठनों में अत्यंत करीब से देखे हैं कि सफ़ल स्वच्छ व सच्चे इंसान की कोई कमजोर कड़ी को रेखांकित कर उसकी टांग खींचने में पूरी ताकत झोंक लेते हैं,उसको व्हाट्सएप ग्रुप से रिमूव कर देते हैं क्योंकि एक सफल समझदार व्यक्ति हमेशा अपने ऊपर फेके गए कटाक्ष रूपी पत्थरों से अपनी नीव मजबूत बनाते हैं।इसलिए आज हम मीडियामें उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, सामाजिक राजनीतिक धार्मिक क्षेत्र में मुझसे कोई आगे ना बड़े व संगठन को अपने ढंग से ढालने की कोशिशों में टांग खिंचाई होती है।

साथियों बात अगर हम सफ़लता की सीढ़ी पर चढ़ रहे व्यक्ति की टांग खींचकर गिराने की करें तो, कई बार लोग कई कारणों से सफलता की सीढ़ियां चढ़ रहे व्यक्ति की टांग खींचते हैं। यह व्यवहार ईर्ष्या, असुरक्षा या परिवर्तन के डर से उत्पन्न हो सकता है। कुछ व्यक्तियों को किसी और की सफलता से ख़तरा महसूस हो सकता है और वे अपने बारे में बेहतर महसूस करने के लिए इसे कमज़ोर करना चाहते हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह व्यवहार उस व्यक्ति का प्रतिबिंब नहीं है, जो सफलता प्राप्त कर रहा है, बल्कि यह उन लोगों की असुरक्षाओं और प्रेरणाओं का प्रतिबिंब है जो उनकी टांग खींच रहे हैं। ईर्ष्या और अभिमान, इसके अलावा कम आत्मसम्मान भी इसमें शामिल हो सकता है। जब लोग अपने जीवन में दुखी होते हैं तो वे कई बार दूसरों की सफलता को खतरे के रूप में देखते हैं। दूसरे व्यक्ति को अपने लक्ष्य तक पहुँचने का जश्न मनाने के बजाय यह उनकी अपनी सभी असुरक्षाओं और कथित विफलताओं को सामने और केंद्र में लाता है। उनके अहंकार को ठेस पहुँचती है और इससे ईर्ष्या उत्पन्न होती है। ऐसे लोग हैं जो उन भावनाओं को अपने तक ही सीमित रखेंगे, लेकिन फिर ऐसे लोग भी हैं जो इसे इस हद तक ले जाएंगे कि बाधाएं खड़ी करेंगे या दूसरे व्यक्ति की सफलता या खुशी में तोड़फोड़ करने की कोशिश करेंगे। यह वास्तव में बहुत दुखद है क्योंकि जिसे वे खतरा मानते हैं वह वास्तव में एक बेहतर इंसान बनने के लिए उनकी प्रेरणा हो सकती है। यह सब इस बारे में है कि हम किसी चीज़ को कैसे देखते हैं और हम उस जानकारी का उपयोग कैसे कर सकते हैं। क्या हम इसका उपयोग दोहरी नकारात्मकता पैदा करने के लिए करना चाहते हैं या अपने जीवन में कुछ सकारात्मक लाने के लिए करना चाहते हैं। हमें जीवन में परिस्थितियाँ और बाधाएँ दी जाती हैं जिनसे हमें पार पाना होता है लेकिन अंततः वहाँ रहना हमारी पसंद है। सफल लोग बस ऐसे कदम उठाना चुनते हैं जिनसे सफलता मिल सके। इसका मतलब यह नहीं है कि वे अपने सभी सपने हासिल कर लेंगे, लेकिन अगर वे आगे बढ़ रहे हैं तो उन्हें पता है कि रुके रहने से हमेशा बेहतर है। इससे एक जहरीली मानसिकता पैदा हो सकती है जो उनकी अपनी नकारात्मकता पर विचार करती है। यह एक दौड़ में होने जैसा है और हम दूसरों को अपने से आगे निकलते हुए देखते हैं लेकिन हम स्थिर खड़े रहते हैं। जब तक हम हमेशा बढ़ते रहेंगे, हमको दूसरों को नीचे गिराने की जरूरत महसूस नहीं होगी। आशा है कि हम वह व्यक्ति होंगे जो रास्ते में गिरे हुए लोगों को उठा सकते हैं। कई बार लोग कई कारणों से सफलता की सीढ़ियां चढ़ रहे व्यक्ति की टांग खींचते हैं। यह व्यवहार ईर्ष्या, असुरक्षा या परिवर्तन के डर से उत्पन्न हो सकता है। कुछ व्यक्तियों को किसी और की सफलता से ख़तरा महसूस हो सकता है और वे अपने बारे में बेहतर महसूस करने के लिए इसे कमज़ोर करना चाहते हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह व्यवहार उस व्यक्ति का प्रतिबिंब नहीं है जो सफलता प्राप्त कर रहा है, बल्कि यह उन लोगों की असुरक्षाओं और प्रेरणाओं का प्रतिबिंब है जो उनकी टांग खींच रहे हैं। इस दुनियाँ में किसी भी दो लोगों के पास सटीक क्षमता और रवैया नहीं है। कुछ महत्वाकांक्षी और वास्तविकता प्रेमी होते हैं जबकि अन्य केवल दबंग और चापलूसी प्रेमी होते हैं। तो, निश्चित रूप से, जब ऐसे लोग किसी समय टकराते हैं, तो बाद वाले को एहसास होता है कि दुनिया 'उसकी घड़ी' के अनुसार काम नहीं करती है और ऐसे लोग अपने सामने आने वाली वास्तविकता को सहन नहीं कर सकते हैं। इसलिए दुनिया को अपने अनुसार ढालने की कोशिश में वे उन लोगों को नीचे गिराने की कोशिश करते हैं जिन्होंने अपनी निष्पक्ष मेहनत से प्रसिद्धि अर्जित की है। लेकिन ऐसे संकीर्ण दिमाग कभी भी वास्तविक सफलता की गहराई को नहीं समझ सकते हैं और यह भी कि कड़ी मेहनत से अर्जित गौरव को नफरत के सस्ते कृत्यों से कभी कम नहीं किया जा सकता है।यह अधिकांश मनुष्यों के लिए भी सत्य है। जब दूसरे लोग जीवन में आगे बढ़ते हैं तो उन्हें ईर्ष्या महसूस होती है। वे यह सुनिश्चित करने के लिए कई चीजें करते हैं कि उनका विकास सुचारू रूप से न हो। मैं निश्चित तौर पर इस बात से सहमत होऊंगा कि सभी इंसान ऐसे नहीं होते। लेकिन जब हम अपने आस-पास के लोगों से बुरी तरह प्रभावित होते हैं, तो पूरी दुनिया को काले रंग में रंगना स्वाभाविक है।लोग समझते हैं कि दूसरों का स्तर गिराकर वे महान हैं।वो लोग यह नहीं समझते कि महान बनने के लिए अपनी लाइन बढ़ानी पड़ती है, अपनी लाइन घिसानी नहीं पड़ती।लेकिन लोग इस बात को नहीं समझते और हमेशा लोगों की टांग खींचते रहते हैं एक दयालु और अच्छा इंसान होने के दुष्प्रभाव यह है कि इस दुनिया में हमारे माता-पिता के अलावा कोई भी हमारी प्रगति या हमारी दयालुता से खुश नहीं होगा। यही बुनियादी मनोविज्ञान है।सफल लोग बस ऐसे कदम उठाना चुनते हैं जिनसे सफलता मिल सके। जब तक हम हमेशा बढ़ते रहेंगे, हमको दूसरों को नीचे गिराने की ज़रूरत महसूस नहीं होगी। आशा है कि हम वह व्यक्ति होंगे जो रास्ते में गिरे हुए लोगों को उठा सकते।

साथियों बात अगर हम टांग खींचने को गंभीरता से नहीं, लेने की करें तो, जब कोई मेरी टांग खींचता है तो मैं इसे गंभीरता से क्यों लेता हूं? मुझे क्या करना चाहिए?जब कोई हमारी टांग खींच रहा है और हम यह अच्छी तरह से जानते हैं, तो यह स्पष्ट है कि जो कुछ भी किया गया है वह केवल मनोरंजन के लिए है। इसे गंभीरता से लेने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है। ऐसा हो सकता है कि हमको यह पसंद न हो कि दूसरे लोग हमारे बारे में क्या बातें कहते हैं, लेकिन फिर हमको यह समझना होगा कि उनका हमको ठेस पहुँचाने का कोई इरादा नहीं है और यह बस लापरवाही से कहा गया है। ऐसी स्थितियों में सबसे अच्छी बात यह है कि ऐसी बातों को गंभीरता से न लें और उन्हें जाने दें। यदि हमको सही लगता है तो हम लापरवाही से भी प्रतिक्रिया दे सकते हैं अन्यथा बुरा मत मानना। इस दुनिया में किसी भी दो लोगों के पास सटीक क्षमता और रवैया नहीं है। कुछ महत्वाकांक्षी और वास्तविकता प्रेमी होते हैं जबकि अन्य केवल दबंग और चापलूसी प्रेमी होते हैं। तो, निश्चित रूप से, जब ऐसे लोग किसी समय टकराते हैं, तो बाद वाले को एहसास होता है कि दुनिया उसकी घड़ी के अनुसार काम नहीं करती है और ऐसे लोग अपने सामने आने वाली वास्तविकता को सहन नहीं कर सकते हैं। इसलिए दुनिया को अपने अनुसार ढालने की कोशिश में वे उन लोगों को नीचे गिराने की कोशिश करते हैं जिन्होंने अपनी निष्पक्ष मेहनत से प्रसिद्धि अर्जित की है। लेकिन ऐसे संकीर्ण दिमाग कभी भी वास्तविक सफलता की गहराई को नहीं समझ सकते हैं और यह भी कि कड़ी मेहनत से अर्जित गौरव को नफरत के सस्ते कृत्यों से कभी कम नहीं किया जा सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि सफ़ल व्यक्ति के प्रतिस्पर्धी उसकी कमजोर कड़ी रेखांकित कर टांगखींचने में अपनी ताकत झोंक देते हैं सामाजिक राजनीतिक धार्मिक क्षेत्रों में मुझसे कोई आगे ना बढ़े की कोशिशों में टांग खिंचाई होती है।मानवीय जीवों में एक दूसरों की टांग खिंचाई का प्रचलन तेजी से बढ़ा।

हारा-थका किसान

बजते घुँघरू बैल के, मानो गाये गीत।
चप्पा-चप्पा खिल उठे, पा हलधर की प्रीत॥

देता पानी खेत को, जागे सारी रात।
चुनकर कांटे बांटता, फूलों की सौगात॥

आंधी खेल बिगाड़ती, मौसम दे अभिशाप।
मेहनत से न भागता, सर्दी हो या ताप॥

बदल गया मौसम अहो, हारा-थका किसान।
सूखे-सूखे खेत हैं, सूने बिन खलिहान॥

चूल्हा कैसे यूं जले, रही न कौड़ी पास।
रोते बच्चे देखकर, होता ख़ूब उदास॥

ख़्वाबों में खिलते रहे, पीले सरसों खेत।
धरती बंजर हो गई, दिखे रेत ही रेत॥

दीपों की रंगीनियाँ, होली का अनुराग।
रोई आँखें देखकर, नहीं हमारे भाग॥

दु:ख-दर्दों से है भरा, हलधर का संसार।
सच्चे दिल से पर करे, ये माटी से प्यार॥

—डॉ० सत्यवान 'सौरभ'
तितली है खामोश (दोहा संग्रह)

ना हिले 370 का पत्ता

देखों आज कुर्सी का लालच कहाँ ले आया,
पद लोभी निर्दलीय उपमुख्यमंत्री कहलाया।
क्यों नहीं तैरता वो दौर तेरी आंखों के सामने,
वे कश्मीरी पंडित घर में लगे थे दिल थामने!
क्यों न पसीजा दिल तब तक आमने-सामने।

देखों आज कुर्सी का लालच कहाँ ले आया,
पद लोभी निर्दलीय उपमुख्यमंत्री कहलाया।
विधानसभा में धारा 370 बहाली का प्रस्ताव,
आप विरोध नहीं कर सकते थे हमें बताओ!
अब ये हो ही नहीं सकता उमर को दिखाओ।

देखों आज कुर्सी का लालच कहाँ ले आया,
पद लोभी निर्दलीय उपमुख्यमंत्री कहलाया।
मत भूलो कश्मीर, हिंदुस्तान का अभिन्न अंग,
गद्दारी की ये भाषा और पाकपरस्ती का रंग!
धरती के स्वर्ग को भी अब तुम न करो बदरंग।

देखों आज कुर्सी का लालच कहाँ ले आया,
पद लोभी निर्दलीय उपमुख्यमंत्री कहलाया।
तुम्हें फिक्र अवाम के जानमाल की रक्षा हो,
सैनिक व निर्दोष नागरिकों के फरिश्ता बनो!
आती-जाती हैं सत्ता ना हिले 370 का पत्ता।

संजय एम. तराणेकर
(कवि, सूत्रधार व समीक्षक)
इंदौर (मध्यप्रदेश)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**